

हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा



हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा

हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा

ज० म० दीमशित्त, पी एच० डी०

हिन्दी व उर्दू प्राध्यापक जनराष्ट्रीय संस्था का प्रिन्सिपल, मायका



राजकमल प्रकाशन

१९७५

पृष्ठ १६

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्राइवट लिमिटेड

दिल्ली

© १९६६, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली

प्रथम संस्करण, १९६६

मूल्य दस रुपये

मुद्रक

नवान प्रेम

दिल्ली

प्राक्कथन

डॉ० दीमणित्स की हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा एक रूसी विद्वान द्वारा हिन्दी में लिखित पहला हिन्दी व्याकरण ही नहीं, बल्कि हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में एक नई परम्परा का सूत्रपात है। हिन्दी अध्येता अभी तक देशी व्याकरणांक अतिरिक्त हिन्दी व्याकरण की मुख्यतः अंग्रेजी परम्परा में ही परिचित रहे हैं। इस में हिन्दी सम्बन्धी जो कार्य हुए हैं उनकी छिटपुट सूचनाएँ तो थी, किन्तु इस बात का पूरा पता दान वाली सामग्री हमारे सामने न आई थी कि रूस में हिन्दी सम्बन्धी अनुशीलन की सदियाँ पुरानी सुदीर्घ परंपरा है जिसे समाजवादी क्रांति के बाद सोवियत भाषाविद और भी तत्परता से विकसित एवं समृद्ध कर रहे हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जब भारत में 'पाश्चात्य जगत' के बाहर के अन्य देशों के साथ स्वतन्त्र रूप से संपर्क स्थापित किया ता भारतीय विद्वानों को उन देशों में किये गए भारतीयविद्या सम्बन्धी अनुसंधानों का भी अभिज्ञान हुआ और इस दृष्टि से भारत हम मैत्री का विशेष महत्त्व है। जैसा कि डा० दीमणित्स ने इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में कहा है, 'यूरोप में हिन्दी आदि आर्वोचन भारतीय भाषाओं का अध्ययन केवल व्यावहारिक उद्देश्यों से ही हो रहा था तथा यूरोप के अनेक देशों की उपनिवेशवादी नीति का ही वह एक अंग था। परन्तु रूस में वैज्ञानिक भारतीय विद्या का विकास बिल्कुल अन्य उद्देश्य तथा आधार पर हो रहा था। वहाँ इसका विकास वैज्ञानिक जानकारी के प्राप्ति तथा भारत की महान तथा अद्वितीय संस्कृति में रूसी सामाजिक क्षेत्रों की गहरी रुचि के कारण हो रहा था।' अनूवर समाजवादी क्रांति के द्वारा इस अनुसंधान को और भी बल प्राप्त हुआ तथा अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन विधिवत प्रारम्भ हुआ। इसका बहुत कुछ श्रेय अकादमीगियन अ० ५० बरान्नि कोव को है जिनके पवित्र नाम से प्रायः सभी हिन्दी प्रेमी पूर्णतः परिचित हैं। श्री बरान्नि कोव द्वारा शुरू किये गए कार्य को आज भी उनका सुयोग्य वमठ गिण्य तथा प्रगिण्य जाग बड़ा रह है जिनमें से एक डा० दीमणित्स भी हैं।

हिन्दी की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में डा० दीमणित्स की हिन्दी-व्याकरण सम्बन्धी

गोधपूज निव घ प्रकाशित हो चुके हैं जिनसे अनक हिन्दी पाठक भलीभाँति परिचित है। इसलिए जब व इस बार भारत आए तो हमने उनसे हिन्दी का एक सम्पूर्ण व्याकरण प्रस्तुत करने का अनुरोध किया जिस उन्होंने अत्यधिक ध्यस्तता व बावजूद स्वीकार करने की कृपा की और कठिन श्रम करके अपने दम बारह वर्षों के अध्ययन को लगभग तीन महीने में ही हिन्दी माध्यम से प्रस्तुत करने की तत्परता भी निसलाई। प्रवास की सक्षिप्त अवधि को देखते हुए उन्होंने कुछ व्याकरण का लोभ संवरण करके 'अपरिष्ठा ही प्रस्तुत की है किन्तु विन अध्येताओं की दृष्टि में यह तथ्य प्रकट हुए बिना न रहेगा कि ऐसक न जिस विनम्रतावग अपरेता कहा है उसमें भी सामान्य सरलीकरण के स्थान पर यथास्थान हिन्दी व्याकरण का अनक जटिल समस्याओं का विश्लेषण काफी घारीकी में जाकर किया गया है—विगपन किया प्रकरण 'नद निमाण एक वाक्य गठन प्रभृति विषया में।

जैसा कि दूसरे बहुत सल्लका ने किया है उनके विपरीत डा० दीमनित्स ने अय व्याकरणा के आधार पर एक और व्याकरण तयार करी का आसान तरीका नहा अपनाया है बल्कि उन्होंने परिधम एक विवकपूयक हिन्दी की पत्र पत्रिकाओं तथा साहित्यिक पुस्तकों में भाषा के प्रचलित प्रयोगों को सकलित करके उनका विश्लेषण किया है इस दृष्टि से प्रस्तुत व्याकरण में हिन्दी के यथामभव नय-से नय प्रयोगों का भी आकलन हुआ है—यहाँ तक कि साधु असाधु प्रयोगों का विचार किए बिना भी बहुत से उल्लिखित हुए हैं जस किया के सात-यबोधक रूपों का विवरण देते हुए पन्ता हाता है, 'पड रहा होता है' 'पडना हाता था' पड रहा होता था आदि की गणना। इन्हीं प्रकार अंग्रेजी के अक्षरदा अनुवाद 'ममद में चल रहा बहम में भाग लगे हुए जैसे प्रयोगों को भी डा० दीमनित्स ने अपने व्याकरण में निघटक भाव में स्थान दिया है।

प्रचलित प्रयोगों का विविधता के साथ ही डा० दीमनित्स का यह व्याकरण नवीन व्याकरणिक श्रणियों के निमाण का दृष्टि में भी पयाप्त समृद्ध है। भाषा रूपों का विवरण दन समय जहाँ उन्हें परम्परा में कोई परिभाषा अथवा अवधारणा प्राप्त न हा मका, वहाँ उन्होंने अपनी आर से नई अवधारणाएँ प्रस्तावित की है जस गुरु निर्माण के मदभ में अद्ध उपसग तथा व्यधिकरण के योग में बनने वाले शब्द। सामान्य वर्तमान काल तथा अपूर्ण भूतकाल में होना किया के जटिल भेद का प्रयोगों का विवचन करते हुए उन्होंने किसी घटना या व्यापार की प्रायिकता का उल्लेख किया है जा मरी

ही तरह मभवत औरा क ठिए भी अपरिचित हा । इसी प्रकार पढ़ति और 'पठन' की दृष्टि से भी इस व्याकरण म ऐसी अनेक नई बातें दृष्टिगोचर होनी हैं जिन सबका उल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है । एक हिन्दी पाठक क नात प्रसंगत म इतना ही कह सकता हूँ कि अपना भाषा को ऐसा बहुत-सी विशेषताएँ हैं जिनकी आर 'अतिपरिचया' अवका' के कारण सामान्यतः हमारा ध्यान नहीं जाता उन्हे प्रकाश मे लाकर डा० दीमशित्स न प्रमाणित कर लिया कि किसी भाषा का व्याकरण कभी कभी अन्ध भाषा भाषी अधिक सफलता म लिये जात हैं क्योंकि उनम प्रथम परिवच तथा प्रथम-दशन की अनाविल जिनासा होती है । इस दृष्टि स इस व्याकरण का अत्यधिक व्यावहारिक महत्व है ।

मरा नोमाय है कि मुझे यह ग्रन्थ पाठ्यलिपि रूप म ही देखन को प्राप्त हो सका और इसके प्रणयन की प्रत्येक गतिविधि का निष्पट मे जान सकने का अवसर मिला । स्पष्ट ही डा० दीमशित्स के इस वैज्ञानिक काम क लिए भर मन म सौभाग्यपूर्ण शुभाशंसा है, साथ ही यह आकांक्षा भी कि इसके बाद क गीघ हा हिन्दी का एक बृहद व्याकरण भी तयार करन म सफल हा ।

—नामवरसिंह

विषय-सूची

प्रावकपन

प्रस्तावना

१ ध्वनि और वरग विचार

अवर—लघु 'अ' का अनुच्चारण—लघु अ' के अनुच्चारण के कुछ नियम—लघु अ' के उच्चारण के कुछ नियम—व्यजन—व्यजन संयोजन—द्विव व्यजन—अक्षर—स्वराघात—लिपि—मयुक्त अक्षर—बहुधा प्रयुक्त होने वाले समुक्त अक्षरों की सूची ।

२ शब्द विचार तथा पदरचना

शब्द भेद ।

३ प्रधान शब्द भेद

सज्ञा लिंग—सज्ञा शब्दों के लिंग का वर्गीकरण—प्राणी-वाचक सज्ञाशब्द में लिंग भेद—पुरुष और पक्षियों में लिंग भेद—मत्तान्तों के लिंग में अनियमितता—अय भाषाओं में संग्रहीत शब्दों का लिंग भेद—वचन तथा कारक—कारक का निर्माण—सामाय कारक—असामाय कारक—सम्बोधन कारक—सामाय तथा असामाय कारक में सज्ञाशब्दों का प्रयोग—सज्ञाशब्दों की पुरस्कृतता—सज्ञाशब्दों की निश्चितता तथा अनिश्चितता की अभिव्यक्ति ।

४ विशेषण

विशेषण विचार—तुलना—तुलनाव्यंशों का अभिव्यक्ति—विशेषणों का सनाकरण—विशेषण की पुनरुक्ति ।

५ सख्याशब्द

७०

सण्डवाचक सख्याशब्द—भिन्न—समुदायवाचक सख्याशब्द—
आवृत्तिवाचक सख्याशब्द—एकभग मात्रा की अभिव्यक्ति—
क्रमवाचक सख्याशब्द ।

६ सवनाम

७६

सवनामा का प्रयोग—पुरुषवाचक सवनाम—निर्देशवाचक
सवनाम—ग्रन्थवाचक सवनाम—स्वामित्ववाचक सवनाम—
निजवाचक सवनाम—सम्बन्धवाचक सवनाम—निश्चयवाचक
सवनाम—अनिश्चयवाचक सवनाम—संयुक्त सवनाम—वाक्य
म सवनामा का वाच्य—सत्ता-सवनामा का विकार—विशेषण
सवनाम का विकार—संयुक्त सवनामा का विकार—सत्या
सवनामा का विकार—सवनामा के निश्चयाधिकार ।

७ क्रिया

६५

क्रिया व अपुरुषवाचक रूप—क्रिया का सामान्य रूप—क्रिया
की धातु

कृदन्त—कृतृवाचक और कर्मवाचक कृदन्त—कृत्ता का
निर्माण—कृतृवाचक कृत्ता का निर्माण—कर्मवाचक कृदन्ता
का निर्माण—कृदन्त विकार—कृदन्ता का प्रयोग—कृत्ता के
स्वतंत्र प्रयोग की कुछ विधिपताएँ—सामान्य वर्तमानकालिक
कृदन्त—सामान्य भूतकालिक कृदन्त—संयुक्त वर्तमानकालिक
कृदन्त—संयुक्त भूतकालिक कृदन्त—वाग्य प्रत्ययान्त कृदन्त
—विशेषण और सत्ताआम कृत्ता का भग्नभण—सातत्य
वाचक कृदन्त—पूर्वकालिक कृदन्त—पूर्वकालिक कृदन्ता
स समय निर्देश—पूर्वकालिक कृत्ता का निर्माण—पूर्वकालिक
कृदन्ता का प्रयोग—क्रिया व पुरुषवाचक रूप

काल

प्रकार—निश्चयाधिकार प्रकार—वर्तमानकाल तथा उसके भेद—
सामान्य वर्तमानकाल—सामान्य वर्तमानकाल का निर्माण—

सामान्य वतमानकाल का प्रयोग—जटिल वतमानकाल—
 जटिल वतमानकाल का प्रयोग—सातत्यबोधक वतमानकाल—
 सातत्यबोधक वतमानकाल का प्रयोग—जटिल सातत्यबोधक
 वतमानकाल—जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल का प्रयोग—
 भूतकाल तथा उसके भेद—सामान्य अपूर्ण भूतकाल—सामान्य
 अपूर्ण भूतकाल का निमाण—सामान्य अपूर्ण भूतकाल का
 प्रयोग—जटिल अपूर्ण भूतकाल—जटिल अपूर्ण भूतकाल का
 प्रयोग—सातत्यबोधक भूतकाल—सातत्यबोधक भूतकाल का
 प्रयोग—जटिल सातत्यबोधक भूतकाल—जटिल सातत्यबोधक
 भूतकाल का प्रयोग—सामान्य भूतकाल—सामान्य भूतकाल
 का प्रयोग—आसन भूतकाल—आसन भूतकाल का प्रयोग—
 पूर्ण भूतकाल—पूर्ण भूतकाल का प्रयोग—भविष्यत्काल तथा
 उसके भेद—प्रथम भविष्यत्काल—प्रथम भविष्यत्काल का
 प्रयोग—द्वितीय भविष्यत्काल—द्वितीय भविष्यत्काल का
 प्रयोग—तृतीय भविष्यत्काल—तृतीय भविष्यत्काल का
 प्रयोग—सातत्यबोधक भविष्यत्काल—सातत्यबोधक भविष्यत्
 काल का प्रयोग—आज्ञायक प्रकार—आज्ञायक प्रकार का
 माधारण भेद—आज्ञायक प्रकार का आदरमुचक भेद—
 आज्ञायक प्रकार के कार्य में त्रिया के सामान्य रूप तथा
 सम्भावनायक प्रकार के सामान्य भेद का प्रयोग—सम्भाव
 नायक प्रकार—सम्भावनायक प्रकार के सामान्य भेद का
 प्रयोग—सम्भावनायक प्रकार का अपूर्ण जटिल भेद—सम्भा
 वनायक प्रकार के अपूर्ण जटिल भेद का प्रयोग—सम्भावनायक
 प्रकार का पूर्ण जटिल भेद—सम्भावनायक प्रकार के पूर्ण
 जटिल भेद का प्रयोग—सम्भावनायक प्रकार का सातत्यबोधक
 भेद—सम्भावनायक प्रकार के सातत्यबोधक भेद का प्रयोग—
 सवेत्तायक प्रकार का सामान्य भेद—सवेत्तायक प्रकार के
 सामान्य भेद का प्रयोग—सवेत्तायक प्रकार का अपूर्ण जटिल
 भेद—सवेत्तायक प्रकार के अपूर्ण जटिल भेद का प्रयोग—
 सवेत्तायक प्रकार का पूर्ण जटिल भेद—सवेत्तायक प्रकार के
 पूर्ण जटिल भेद का प्रयोग—सवेत्तायक प्रकार का सातत्यबोधक

५ सख्याशब्द

७०

सण्डवाचक सख्याशब्द—भिन्न—समुदायवाचक सख्याशब्द—
आवृत्तिवाचक सख्याशब्द—एकमेव मात्रा की अभिव्यक्ति—
क्रमवाचक सख्याशब्द ।

६ सवनाम

७६

सवनामा का प्रयोग—पुरुषवाचक सवनाम—निष्ठावाचक
सवनाम—प्रश्नवाचक सवनाम—स्वामित्ववाचक सवनाम—
निजवाचक सवनाम—सम्बन्धवाचक सवनाम—निश्चयवाचक
सवनाम—अनिश्चयवाचक सवनाम—समुक्त सवनाम—वाक्य
में सवनामा का वाच्य—सत्ता सवनामा का विचार—विशेषण
सवनाम का विचार—मयुक्त सवनामा का विचार—सत्या
सवनामा का विचार—सवनामा के निश्चयावक रूप ।

७ क्रिया

६५

क्रिया के अपुरुषवाचक रूप—क्रिया का सामान्य रूप—क्रिया
की धातु

कृदन्त—कृत् वाचक और कर्मवाचक कृदन्त—कृदन्ता का
निर्माण—कृत् वाचक कृदन्ता का निर्माण—कर्मवाचक कृदन्तो
का निर्माण—कृदन्त विचार—कृदन्ता का प्रयोग—कृदन्ता के
स्वतन्त्र प्रयोग की कुछ विशेषताएँ—सामान्य वर्तमानकालिक
कृदन्त—सामान्य भूतकालिक कृदन्त—मयुक्त वर्तमानकालिक
कृदन्त—मयुक्त भूतकालिक कृदन्त—‘वाग’ प्रत्ययान्त कृदन्त
—विशेषण और मन्त्राज्ञा में कृदन्ता का सम्बन्ध—सामान्य
दासकालिक कृदन्त—पूर्वकालिक कृदन्त—पूर्वकालिक कृदन्ता
में समय निर्देश—पूर्वकालिक कृदन्ता का निर्माण—पूर्वकालिक
कृदन्ता का प्रयोग—क्रिया के पुरुषवाचक रूप

फल

प्रकार—निश्चयावक प्रकार—वर्तमानकाल तथा उसके भेद—
सामान्य वर्तमानकाल—सामान्य वर्तमानकाल का निर्माण—

सामान्य वतमानकाल का प्रयोग—जटिल वतमानकाल—
 जटिल वतमानकाल का प्रयोग—सातत्यबोधक वतमानकाल—
 सातत्यबोधक वतमानकाल का प्रयोग—जटिल सातत्यबोधक
 वतमानकाल—जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल का प्रयोग—
 भूतकाल तथा उसके भेद—सामान्य अपूर्ण भूतकाल—सामान्य
 अपूर्ण भूतकाल का निमाण—सामान्य अपूर्ण भूतकाल का
 प्रयोग—जटिल अपूर्ण भूतकाल—जटिल अपूर्ण भूतकाल का
 प्रयोग—सातत्यबोधक भूतकाल—सातत्यबोधक भूतकाल का
 प्रयोग—जटिल सातत्यबोधक भूतकाल—जटिल सातत्यबोधक
 भूतकाल का प्रयोग—सामान्य भूतकाल—सामान्य भूतकाल
 का प्रयोग—आसन्न भूतकाल—आसन्न भूतकाल का प्रयोग—
 पूर्ण भूतकाल—पूर्ण भूतकाल का प्रयोग—भविष्यत्काल तथा
 उसके भेद—प्रथम भविष्यत्काल—प्रथम भविष्यत्काल का
 प्रयोग—द्वितीय भविष्यत्काल—द्वितीय भविष्यत्काल का
 प्रयोग—तृतीय भविष्यत्काल—तृतीय भविष्यत्काल का
 प्रयोग—सातत्यबोधक भविष्यत्काल—सातत्यबोधक भविष्यत्
 काल का प्रयोग—आनायक प्रकार—आनायक प्रकार का
 साधारण भेद—आनायक प्रकार का जादरमूषक भेद—
 आनायक प्रकार के काय म निया के सामान्य रूप तथा
 सम्भावनायक प्रकार के सामान्य भेद का प्रयोग—सम्भाव
 नायक प्रकार—सम्भावनायक प्रकार के सामान्य भेद का
 प्रयोग—सम्भावनायक प्रकार का अपूर्ण जटिल भेद—सम्भा
 वनायक प्रकार के अपूर्ण जटिल भेद का प्रयोग—सम्भावनायक
 प्रकार का पूर्ण जटिल भेद—सम्भावनायक प्रकार का पूर्ण
 जटिल भेद का प्रयोग—सम्भावनायक प्रकार का सातत्यबोधक
 भेद—सम्भावनायक प्रकार के सातत्यबोधक भेद का प्रयोग—
 सकेतायक प्रकार का सामान्य भेद—सकेतायक प्रकार के
 सामान्य भेद का प्रयोग—सकेतायक प्रकार का अपूर्ण जटिल
 भेद—सकेतायक प्रकार के अपूर्ण जटिल भेद का प्रयोग—
 सकेतायक प्रकार का पूर्ण जटिल भेद—सकेतायक प्रकार के
 पूर्ण जटिल भेद का प्रयोग—सकेतायक प्रकार का सातत्यबोधक

भेद—सर्वेतायक प्रकार के मातृत्वबोधक भेद का प्रयोग,

विधि—विधि का नित्यताबोधक रूप—विधि का प्रक्रमण
बोधक रूप—विधि का अभ्यासबोधक रूप

वाच्य—वाच्य का प्रयोग

सवस्था।

८ क्रियाविशेषण १६५

क्रियाविशेषणों के निश्चयायक रूप

९ सहायक शब्द भेद २१०

विभक्ति चिह्न

सामान्य विभक्ति चिह्न—जटिल विभक्ति चिह्न—कनिष्ठ
जटिल विभक्ति चिह्न का प्रमाण—विभक्ति चिह्न वाचक
शब्दसमुदाय ।

१० निपात २१४

योजक शब्द

हिंदी में निपातों का प्रयोग

११ विस्मयादिबोधक (मनोभावद्योतक) २२५

१२ शब्द निर्माण २२७

संज्ञाशब्दों का निर्माण—प्रत्ययों द्वारा संज्ञाशब्दों का निर्माण
पुल्लिङ्गपरक व्यक्तिवाचक संज्ञाशब्दों के निर्माणकारी प्रत्यय—
पुल्लिङ्गपरक व्यक्तिवाचक संज्ञाशब्दों के निर्माणकारी अद्ध
प्रत्यय—स्त्रीलिङ्गपरक व्यक्तिवाचक संज्ञाशब्दों के निर्माणकारी
प्रत्यय—पशुवाचक संज्ञाशब्दों के निर्माणकारी प्रत्यय—धन्तु
वाचक संज्ञाशब्दों के निर्माणकारी प्रत्यय—भाववाचक संज्ञा
शब्दों के निर्माणकारी प्रत्यय—ऊनतावाचक संज्ञाशब्दों के
निर्माणकारी प्रत्यय—उपसर्गों द्वारा संज्ञाशब्दों का निर्माण—

मनाशदा के निर्माणकारी अर्थ उपसर्ग—शब्द संयोजन—
विशेषणा का निर्माण—विशेषणा के निर्माणकारी प्रत्यय—
विशेषणा के निर्माणकारी अर्थ प्रत्यय—विशेषणा के निर्माण
कारी उपसर्ग—विशेषणा के निर्माणकारी अर्थ उपसर्ग—
शब्द संयोजन से विशेषणा का निर्माण—त्रियाआ का
निर्माण—नामिक त्रियाएँ—व्युत्पन्न सक्रमक तथा प्रेरणाधक
क्रियाएँ—प्रेणाधक क्रियाओं का प्रयोग—अवधारणबोधक
क्रियाएँ—अवधारणबोधक त्रियाओं में प्रयुक्त सहकारी
त्रियाओं की विशेषताएँ—समानाधक त्रियाओं तथा विपरी
तायक त्रियाआ के संयोजनों द्वारा—त्रियाओं का निर्माण—
क्रियाधक समुदाय ।

१३ शब्दसमुदाय तथा वाक्यरचना

२७०

शब्दसमुदाय—वाक्य—वाक्य में शब्दों के सम्बन्धों के प्रकार—
साधारण वाक्य—वाक्य के प्रकार—दो अंग वाले वाक्य—
वाक्य के मुख्य अंग—उद्देश्य—विधेय—त्रियाविधेय—नामिक
विधेय—वाक्य के सहायक अंग—कर्म—गुणनिर्देशक—
विशेषताबोधक—विधेय का वाक्य के उद्देश्य तथा प्रधान कर्म
से भिन्न—एक अंग वाले वाक्य—निश्चित पुरुषवाचक
वाक्य—अनिश्चित पुरुषवाचक वाक्य—अपुरुषवाचक वाक्य—
अपूर्ण वाक्य—शब्द क्रम—शब्दसमुदाय में शब्द क्रम—वाक्य
में शब्द क्रम—संयुक्त वाक्य—संयुक्त समानाधिकरण वाक्य—
संयुक्त ध्वनिकरण वाक्य—उद्देश्य उपवाक्य—विधेय उप
वाक्य—कर्म उपवाक्य—गुणनिर्देशक उपवाक्य—संज्ञाजक
उपवाक्य—विशेषताबोधक आश्रित उपवाक्य—उपवाक्यद्वहल
संयुक्त अधिकरण वाक्य—प्रत्यक्ष कथन तथा पराक्ष कथन ।

प्रस्तावना

भारत की राजभाषा हिन्दी हमारे सभसे अधिक व्यवहार में आने वाली भाषाओं में से है। परन्तु हिन्दी आधुनिक भारत की एकमात्र भाषा नहीं है। भारत में दो सौ से अधिक भाषाएँ तथा बोलियाँ भारत के स्थानीय भाषाओं में बोलੀ जाती हैं। १० से अधिक प्रतिशत लोग हिन्दी, उर्दू, बंगला, तमिल तथा मराठी, पंजाबी, गुजराती, कन्नड़, बिहारी, उडिया, राजस्थानी आदि बोलते हैं। अधिकतर भारतीय भाषाओं की अपनी अपनी स्वतन्त्र लिपियाँ हैं।

आधुनिक भारत तथा पाकिस्तान की भाषाएँ निम्नलिखित समुदायों में बाँटी जा सकती हैं —

(१) उत्तर भारतीय (२) द्रविड (३) तिब्बत-बर्मो (४) मुंडा (५) मान स्मर।

उपरोक्त में सबसे बड़ा प्रथम समुदाय है। यह भारतीय भाषाओं का परिवार है। कई भाषाएँ उत्तर भारतीय भाषाएँ अपने व्याकरण विषयक रूपा के आधार की दृष्टि में अपने आन्तरिक नियमों के अनुसार विभक्त होती हैं। उत्तर भारतीय भाषाएँ इन तीन भागों में विभाजित हैं—(१) पुरातन मुनीन उत्तर भारतीय भाषाएँ (२) मध्ययुगीन उत्तर भारतीय भाषाएँ तथा (३) आधुनिक मुनीन उत्तर भारतीय भाषाएँ।

पुरातन मुनीन उत्तर भारतीय भाषाएँ वेदों तथा महाकाव्यों में प्रमुख भाषाएँ हैं। इन भाषाओं का विकास ईसा से लगभग बारह सदी पूर्व हुआ। सबसे अधिक प्राचीन साहित्यिक कृति, जो भाषा की दृष्टि से सबसे अधिक समृद्ध है वह है ऋग्वेद।

ऋग्वेद के पञ्चात् अन्य बड़ी कृतियाँ रची गई जो पुरातन मुनीन भाषाओं का बहुमूल्य साहित्यिक निधि हैं। इनमें से सबसे अन्तिम कृतियाँ रची गई शास्त्रीय संहिताएँ हैं। संहिताएँ साहित्य का विकास सुचारु रूप से अनवरत सदिशा तक होता रहा। ईसा से लगभग पाँच सदी पहले मध्ययुगीन भारतीय भाषाओं का प्रादुर्भाव हुआ। इन भाषाओं का तब व्यापक नाम पञ्चा प्राकृत भाषा— इनमें पाली, गौरीयनी, महाराष्ट्री भाषाएँ आदिमागधी का समावेश है। उनमें

स्थान पर ईसा के बाद का प्रारम्भिक सदियों में उनके परवर्ती अपभ्रंश रूपों का प्रारम्भ होता है। ये अपभ्रंश रूप प्राकृतों तथा वनमान बालक की दम मर्त्या में विकसित होती आ रही आधुनिक उत्तर भारतीय भाषाओं के बीच की एक कड़ी थी। अर्वाचीन उत्तर भारतीय भाषाओं की सम्बन्धित अपभ्रंशों से उत्पत्ति हुई। उन्हीं में से एक है हिन्दी भाषा। वह आधुनिक भारत में सबसे अधिक प्रचलित है। भारत के लगभग २४ करोड़ आत्मीयों का व्यवहार करते हैं। हिन्दी में समृद्ध साहित्य तथा पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। हिन्दी भाषा अर्वाचीन भारतीय भाषाओं के उत्तरीय समुदाय के परिवार की है।

आधुनिक भारत में हिन्दी के सबसे निकट भाषा उर्दू है। हिन्दी तथा उर्दू का प्रादुर्भाव और उनको आजकल की स्थिति इस बात के परिचायक हैं कि उनका आधार—व्याकरण विषयक ढाँचा मौलिक गणना और ध्वनि सम्बन्धी प्रणाली प्रायः एक समान हैं।

हिन्दी तथा उर्दू की भिन्नताएँ मुख्यतः गणना तथा आंगिक रूप में शब्द निर्माण और वाक्य रचना के क्षेत्र में दृश्य में आती हैं।

जमा कि सुविज्ञित है अपने विकास की प्रक्रिया में भाषाओं में विभिन्न परिवर्तन आया करते हैं। भाषा की ध्वनियाँ तथा पदरचना-सम्बन्धों का ज्ञान यदि बढ़ता जाये है।

भारतीय भाषाएँ भी अपने विकास के लम्बे तथा जटिल मार्ग से गुज़री हैं जिसमें पदरचना-सम्बन्धी ढाँचे में मौलिक परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन लम्बी अवधि के अन्दर होता रहा है। परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ में मध्य युगीन भाषाओं जयान प्राकृत भाषाओं में मर्यादात्मक ढाँचे के गहन शर्त लोप फिर अपभ्रंश भाषाओं में उनके पूर्ण लोप तथा अन्त में अर्वाचीन भारतीय भाषाओं के विश्लेषणात्मक ढाँचे के निर्माण में प्रकट हुई है।

अर्वाचीन भारतीय भाषाओं के विश्लेषणात्मक ढाँचे के ऊपर विकास के आधार पर उनमें पुरातन भारतीय विश्लेषणात्मक रूपों से संवदा भिन्न नवीन संश्लेषणात्मक रूपों का प्रादुर्भाव दृष्टिगोचर होता है।

संश्लेषणात्मक ढाँचे वाली भाषाओं में व्याकरण विषयक रूप तथा वाक्य में शब्दों के बीच सम्बन्ध स्वयं शब्दों के रूपों के विकास से व्यक्त होते हैं। विश्लेषणात्मक ढाँचे वाली भाषाएँ इस तरह की भाषाएँ कहलाती हैं जिनमें व्याकरण-विषयक रूप तथा वाक्य में शब्दों के बीच सम्बन्ध शब्दों के रूपों द्वारा नहीं अपितु गणनात्मक गहायक शब्दों की सहायता से व्यक्त होते हैं।

संश्लेषणात्मक ढाँचे वाली भाषा का ज्वलन्त नमूना वल्हिक भाषा है जो

उम युग की बोलचाल की साहित्यिक भाषा थी।

एक वदिक कालीन उपभाषा से विकसित शास्त्रीय सम्बृत ऐसी भाषा थी जिसमें मश्लेषणपरक रूपा का आधिपत्य था। अपभ्रंश भाषाएँ साहित्य में मध्ययुग के आरम्भ में प्रयुक्त होने लगीं। उनके अर्वाचीन रूप ध्वनिया तथा पदरचना की दृष्टि से उत्तर भारतीय भाषाओं के पूर्व रूपा से प्रायः मिलत जुलत थी। अर्वाचीन उत्तर भारतीय भाषाओं के विकास का प्रक्रिया केवल १५वीं सदी में पूरा हुई है जब आधारभूत विभक्ति चिह्न तथा अर्वाचीन उत्तर भारतीय भाषाओं की क्रियाओं के विश्लेषणात्मक रूपा का पूरा विकास हुआ। लगभग इसी समय एक विश्लेषणात्मक ढांचे वाली भाषा पूरा रूप में विकसित हुई जिसको ही बाद में जाकर हिन्दी नाम दिया गया। हिन्दी भाषा में अधिकांश क्रिया सम्बन्धी रूप विश्लेषणात्मक ढांचे में सृजित तथा विभिन्न सहायक क्रियाओं के रूपा के संयोजन द्वारा बनते हैं। वाक्य में शब्दों के सम्बन्ध विभक्ति चिह्नों द्वारा व्यक्त होते हैं जो नामिक शब्दों या सर्वनामों के असामान्य कारक के साथ जुड़े होते हैं। जैसा कि सर्वविदित है शुद्ध विश्लेषणात्मक या शुद्ध संश्लेषणात्मक भाषाएँ नहीं होती हैं। भाषा में शब्दों के व्याकरण विषयक कार्यों तथा वाक्य में शब्दों के सम्बन्धों की अभिव्यक्ति के बिना निश्चित प्रकार की सहायता के अनुसार ही भाषाएँ विश्लेषणात्मक प्रधान या मश्लेषणात्मक प्रधान समझी जाती हैं। मश्लेषण में भी मश्लेषण प्रधान रूपा के साथ कुछ छोड़कर विश्लेषणात्मक रूप देखने में आते हैं।

हिन्दी का व्याकरण सम्बन्धी ढांचा भी शुद्ध विश्लेषणात्मक नहीं है। विश्लेषणात्मक रूपों के साथ साथ भाषा में जिनका बाहुल्य है तथा इसीलिए हिन्दी भाषा की परिगणना विश्लेषण प्रधान भाषाओं में की जाती है मश्लेषण के तरफ भी विद्यमान है। ये तत्त्व हिन्दी भाषा के विकास के भिन्न भिन्न कालों में सम्बन्धित हैं। जैसे, मध्ययुगीन भाषाओं के अवशेष 'मुझे', 'तुझे', तथा नये संश्लेषणात्मक रूप जो विश्लेषणात्मक ढांचे के विकास के समय में उत्पन्न हुए हैं— 'लक्ष्मी' 'बोलती' इत्यादि।

हिन्दी में विश्लेषणात्मक रूप क्रियाविशेषणों का छात्र अथवा सभी प्रधान शब्दों में विद्यमान होते हैं। जैसे

(क) मनाशब्दों में सब मनाया असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक बहुवचन रूपा का तथा आवागत व आवागत मनाशब्दों के असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक एववचन के रूपा का निर्माण होने समय।

(ख) विवाही विधवा आवागत व विशेषण सर्वनामों तथा प्रसवाचक

संस्थाओं में लिंग, वचन तथा वारक के अनुसार उदलते समय ।

(ग) मत्ता मवनामा म (१) एववचन, एकारान्त तथा एकारान्त कमकारक के प्रयोग म । (२) मव तथा 'वई' मवनामा के अमामाय वारक सवा तथा 'वइया' के प्रयोग म ।

(घ) प्रियाआ म । (१) आज्ञाधक प्रसार के भेदा, सम्भावनाधक प्रकार के सामाय भेद तथा निश्चयाधक प्रकार के प्रथम भविष्यकाल का निराण होने समय । (२) लिंग तथा वचन म कृता तथा विकार म । (३) पुरुष तथा वचन म सम्भावनाधक प्रसार के सामाय भेद वाली प्रियाआ के विकार में । (४) वनमान वा म पुरुष तथा वचन में होने प्रिया के विकार म । (५) प्रथम भविष्यकाल म पुरुष वचन तथा लिंग में प्रियाआ के विकार म । (६) अपूर्ण भूतवा म लिंग तथा वचन में सहायक प्रिया होने के विकार में ।

(ङ) लिंग तथा वचन म का विभक्ति चिह्न तथा सा निपात के विकार म ।

तामिक रूप तथा प्रिया के रूप म नव सम्पूर्ण मराठी, बंगला तथा अन्य जवाचान भारतीय भाषाओं म भी दृष्टिगोचर होने हैं ।

प्रादुर्भाव की दृष्टि से हिन्दी भाषा का गढ़ मराठी दो प्रकार के गढ़ों में सम्पन्न हुआ है—देशी और विदेशी । देशी गढ़ की सा श्रेणियाँ हैं—“नमें पहला श्रेणी के य शब्द हैं जो पुराने भारतीय का म मध्य काल में से गुजरते हुए आधुनिक का म तक लम्बा मार्ग तय करके हिन्दी में थोड़ा-बहुत रूप बदल कर आये हैं । उन्हें कहते हैं तदभव गढ़ । दूसरी श्रेणी के य शब्द हैं जो प्राचीन संस्कृत भाषा से बिना किसी रूपान्तर के हिन्दी में आये हैं । इन्हें कहते हैं तमम गढ़ । विदेशी गढ़ आये हैं मुख्य रूप से निम्नलिखित भाषाओं से—इरानी, तुर्की, अरबी, पुर्तगाली फार्सी, अंग्रेजी तथा आंग्ल रूप से रूसी । मरुहूत से आये हुए गढ़ हिन्दी की गढ़ावली का सबसे महत्वपूर्ण भाग है । ये संस्कृत गढ़ दर्शाते अर्थात् अन्य भारतीय गढ़ों के साधनवीन गढ़ों तथा गढ़ों समुदायों के निर्माण का आधार होते हैं । ये धर्म शिक्षा प्रणाली, कला, विज्ञान और प्रशासन-संचालन इत्यादि सम्बन्धी सामाजिक राजनीतिक गढ़ावली की रीढ़ हैं । ये गढ़ मुख्य रूप से साहित्यिक कृतियाँ के माध्यम से हिन्दी भाषा में आये हैं ।

ईरानी भाषाओं से आये हुए शब्द विदेशी भाषाओं के गढ़ों में मुख्य स्थान रखते हैं । ये हिन्दी में दो श्रेणियाँ में आये हैं । एक स्थानीय लोग तथा ईरानी भाषाभाषियों के बीच सम्पर्क द्वारा और दूसरे प्रशासनिक संस्थानों,

सेना, स्कूल घस, माहिल्य तथा कला आदि द्वारा, जिनमें १९वीं सदी के मध्य तक पारसी भाषा का बोलचाल था।

तुल्य शब्द मुख्यतः हिंदी भाषा में बोलचाल द्वारा आये हैं। जैसे कुली, नचा तोप बंदूक दाराणा आदि।

अरबी शब्द अधिकतर अरबी शब्दा से समृद्ध इरानी तथा तुल्य भाषाओं द्वारा हिंदी में आये हैं।

पुतलाओं तथा फ्रांसीसी शब्द सारहवीं तथा सत्रहवीं सदियों में बोलचाल द्वारा हिंदी में प्रयुक्त होने लगे। हिंदी में उनका भाग नगण्य मात्र ही है। कारण पुनर्जाति तथा फ्रांसीसी भाषा का भारत में प्रवेश अपेक्षाकृत अल्पकाल तक रहा और इसलिए भारत के कुछ इलाकों तक ही सीमित रहा। इसलिए वे भाषा की आम जनता को भाषाओं तथा रहन सहन को बहुत प्रभावित नहीं कर सके। हिंदी में अपनाय गये पुतलाओं तथा फ्रांसीसी कल्पित शब्द नमून के तौर पर हम दते हैं—

पुतलाओं में अलमारी, आया, आलपान, इस्तर, बमोज, बमरा, बाजू, काफी इत्यादि।

फ्रांसीसी शब्द कारतूस, कूपन, वरन, कुरस आदि।

अंग्रेजी शब्द भारतीय भाषाओं में सारहवीं सदी में प्रयुक्त होने लगे। अंग्रेजों के उपनिवेशवादी कार्य के प्रारम्भिक काल में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अंग्रेजों द्वारा कम्पनी के कमचारियों के पत्रों तथा सैनिक उपाधिमा का निर्देश करने के लिए किया जाता था। आगे चलकर भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व के स्थापन के साथ साथ स्थानीय भाषाओं पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव प्रबल हुआ, जब सन १८५७-१८५८ के राष्ट्रीय भावनापूर्ण विद्रोह के दमन के परिणाम अंग्रेजी भाषा तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत का सरकारी कार्यवाज का भाषा घोषित की गयी थी। प्रत्येक आदमी के लिए जो सरकारी नौकरी में लिया जाता था, अंग्रेजी भाषा का जानना अनिवार्य था। मुख्य रूप से अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही नव भारतीयों का पश्चिमी विज्ञान तकनीकी तथा संस्कृति का परिचय प्राप्त होता था। इस प्रकार भारत में अंग्रेजी के दीर्घकालीन प्रभुत्व के समय हिंदी में तथा दूसरी भारतीय भाषाओं में भी ब्रिटिश प्रशासनिक प्रणाली, सरकारी प्रबंध-व्यवस्था, सेवा शिक्षा प्रणाली, विज्ञान, तकनीकी, प्रस तथा भारतीयों के राष्ट्रीय जागरण आदि सम्बन्धी अंग्रेजी शब्द आ गये हैं।

इसी शब्द हिंदी में मुख्यतः अंग्रेजी के माध्यम से आये हैं। जैसे गाविषत भट्टी स्तुतिनिक बरखाज, बबल इत्यादि। सीधे अंग्रेजी से आये शब्द

ई ऐ म परिवर्तित होना है ।

उ और ऊ दोनों ही 'औ' म परिवर्तित होने हैं ।

'ओ' 'औ' म परिवर्तित होता है ।

उदाहरण

समय	सामयिक
इतिहास	ऐतिहासिक
नीति	नतिक
उपचार	औपचारिक
भूत	भौतिक
लोक	लौकिक

(क) प्रत्ययसहित भेद, जिसमें शब्दों का निर्माण केवल प्रत्ययों द्वारा होता है । जैसे

लेख	लेखक
खेत	खेता
मदद	मददगार
बाल	बालवान

(ग) उपसर्गसहित भेद, जिसमें नये शब्दों का निर्माण उपसर्गों से होता है । जैसे

वेश	विदश
मान	अपमान
गुण	अवगुण
ज्ञान	अज्ञान

(घ) मिश्रित भेद जिसमें नये शब्दों का निर्माण प्रत्ययों तथा उपसर्गों दोनों से होता है । जैसे

मेल	अनमेलपन
भारत	अभारतीय
तब	स्वतंत्रता
होगा	बेहोगी

(ङ) मध्यप्रत्ययसहित भेद, जिसमें नये शब्दों का निर्माण मध्यप्रत्ययों से होता है । इस भेद का अनुसार सक्रमक क्रियाएँ बनती हैं, जैसे निकलना से निकलना, मरना से मारना और बैठना से बाँटना सक्रमक क्रियाएँ बनती हैं ।

विभिन्न शब्द भेदों में शब्द निर्माणकारी प्रक्रियाएँ विभिन्न होती हैं ।

उदाहरण के लिए सजाआ के निमाण म उपसर्गसहित भेद कम प्रयुक्त होता है ।
जैसे

साहस	बु साहस
मानव	अतिमानव
काल	दुष्काल

यह भेद अधिकतर विगणना के निमाण म दृष्टिगोचर होता है । जस

घब	अनघब
फल	विकल
पता	सापता
उम्मीद	नाउम्मीद

प्रत्ययसहित भेद सजाआ के निर्माण तथा विगणना के निर्माण दोनों म व्यापक रूप से व्यवहृत होता है । जिया गदा के निर्माण म उनका व्यवहार अपेक्षाकृत कम होता है । जैसे

भूमि	भूमिधर
अधीन	अधीनता
गति	गतिपूष
अपना	अपनाना

आधुनिक हिंदी म अपन उपयोग की दृष्टि से सारे प्रत्यय और उपसर्ग निम्न दो मुख्य वर्गों म बाँट जा सकत है

(१) उत्पादक अर्थात् प्रचलित प्रत्यय और उपसर्ग जिनका आधुनिक भाषा म नय गदा के निमाण म प्रयोग होता है । इनम सबसे पहल जान है नकारात्मक उपसर्ग, जस कि अ अन व गैर और भाववाचक सजाआ के प्रत्यय जस ह वा न पन आदि । उदाहरणार्थ—

सहकारी	असहकारी
सुना	अनसुना
फायदा	बेफायदा
सरकारी	गर सरकारी
बुरा	बुराई
साम्राज्य	साम्राज्यवाद
स्वाधीन	स्वाधीनता
सड़का	सड़कपन

(२) अनुत्पादक अर्थात् अप्रचलित उपसर्ग और प्रत्यय जिनके द्वारा

आधुनिक हिंदी भाषा में नये शब्दों का निर्माण नहीं होता है। उनमें निम्न उपसर्ग और प्रत्ययों का समावेश होता है नि, अधि, अभि, विला, वा, ति, वा हा, आक आदि।

उदाहरण

छोट	निछोट
राज	अधिराज
मान	अभिमान
गत	विलागत
अदब	बाअदब
नी	नीति
देना	देखा
चरवाना	चरवाहा
तरना	तराक

हिंदी भाषा में शब्द निर्माण के पदरचना विषयक प्रकारों को वाक्य रचना विषयक प्रकारों से पृथक् करना काफी कठिन होता है क्योंकि लगभग सब संयुक्त शब्दों में जो वाक्यरचना विषयक प्रकारों से अद्यान शब्द संयोजन से बनते हैं उनमें अग एक-दूसरे पर निर्दिष्ट पदरचना की दृष्टि में निर्भर करते हैं। हिंदी भाषा में शब्द निर्माण का विस्तृत वाक्यरचना विषयक प्रकार अनात दो या तीन शब्दों का समान संयोजन गौण महत्व प्राप्त होता है। इस प्रकार के अतगत् निम्नलिखित श्रेणी के शब्दों का निर्माण होता है मा बाप, दिन रात आदि।

उक्त संयुक्त शब्दों के दो अंग पदरचना की दृष्टि से एक दूसरे पर आश्रित नहीं होते हैं और उनके बीच योजक 'और' या 'तथा' प्रयुक्त हो सकता है।

हिंदी भाषा में शब्द निर्माण का वाक्यरचना पदरचना प्रकार सबसे अधिक प्रचलित है। इस श्रेणी में निम्न अवतार भेद प्राप्त हैं

(क) शब्द संयोजन जैसे गान्धिप्रेमी (गान्धि + प्रेमी), देशनिकाय (देश + निकाय), बिजलीघर (बिजली + घर) आदि।

(ख) विशेषणों द्वारा के सामान्य रूपों का उद्घाटन और यहाँ तक कि निपाता का मनीकरण। जैसे धनी बनानिक, उसके जाने तक, कहाँ, घेरा हुआ मैं ही मिलाना नहीं करना भागत का आज और कल।

शब्द निर्माण के वाक्यरचना-पदरचना-विषयक प्रकार में विभिन्न शब्द

भेदों का क्रियाविशेषणीकरण भी समाविष्ट है। हिन्दी में क्रियाविशेषण के अर्थ में निम्नलिखित प्रयुक्त होते हैं

- (१) सनाएँ और मचाआ की द्विवचिनयाँ। जैसे सुबह, राज दिन दिन, ब्यापि।
- (२) विशेषण। जैसे अच्छा पुरा, माफ, धीरे आदि।
- (३) सबनाम। जैसे इतना उतना, ऐसा वैसा आदि।
- (४) पूर्वकालिक कृदन्त। जैसे जान-बूझकर छिपकर मिलकर इत्यादि।
- (५) शब्द निर्माण के वाक्यरचना पदरचना प्रकार से मना तथा विशेषणपरक शब्दों के क्रियापरक शब्दों में विनिमय (व्यवस्थान) का गहरा सम्बन्ध है। इस तरह के शब्दभेद विनिमय का अर्थ यह समझा जाता है कि सना या विशेषण से बिना किसी उपसर्ग या अव्यय के क्रिया का निमाण होता है। इस क्रिमे के शब्दों का अर्थ वाक्यों में उनका स्थान तथा निश्चित शब्द भेद में निहित बिनापताया पर निर्भर होता है। हिन्दी में इस क्रियापरक शब्दों में विनिमय के अंतर्गत क्रियाओं के रूप में कुछ स्त्रीलिंग मझाआ और विशेषणों का प्रयोग होता है। जैसे मगाहना, रचना स्थापना झूलना रोना आदि।

शब्द निर्माण का शब्दों की भावार्थ विषयक प्रकार व्यवहृत तब होता है जब नये विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों का अर्थ जहाँ में प्रयोग होता है। जैसे जबान शब्द युक्त है किंतु यह बाल्बाल की भाषा में सनिक के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। यान' शब्द जिसका पहला अर्थ था परिवहन का साधन किंतु अब मुख्यतः हवाई जहाज के अर्थ में व्यवहृत होने लगा है।

यूरोप में बर्णानिक भारतविद्या का प्रारम्भ दस में हुआ था। अफानासी निकितिन तथा गेरार्सिम लेविदव की उत्कृष्ट कृतियों ने बर्णानिक भारतविद्या की आधारशिला रखी। इससे भारतविद्या के विकास को भारी प्रेरणा मिली। उन्होंने सबसे पहला दुनिया का भारतीय जनता की पुरानी मस्तिष्क तथा उसके कलात्मक और ऐतिहासिक स्मारकों में परिचित कराया।

यूरोप में अवाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन जिनमें हिन्दी भी है, अठारहवीं सदी के अंत में ही प्रारम्भ हुआ। यूरोप में इन भाषाओं का अध्ययन केवल व्यावहारिक उद्देश्यों से ही हो रहा था तथा यूरोप के अनेक देशों की उपनिवेशवादों की नीति का ही वह एक अंग था। रूस में बर्णानिक भारतविद्या का विकास बिल्कुल अन्य उद्देश्य तथा आधार पर हो रहा था। वहाँ इसका विकास बर्णानिक जानकारी के प्राप्ति तथा भारत की महान तथा अद्वितीय

संस्कृति में रूसी सामाजिक क्षेत्रों की गहरी रुचियाँ के कारण हो रहा था। परन्तु अक्टूबर क्रांति से पूर्व के रूसी भारतविद्या के साहित्यशास्त्र तथा भाषाशास्त्र के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता एवं सिद्धि के बावजूद कई कमियाँ थीं जिनके कारण रूसी भारतविद्या के विकास में बाधाएँ पड़ रही थी। उन कमियों में एक मौलिक कमी यह थी कि सब भारतीय भाषाओं में से केवल पुरातन भारतीय भाषाओं अर्थात् वदिक तथा शास्त्रीय संस्कृत और आर्य रूप से मध्ययुगीन भाषाओं का अध्ययन हो रहा था। अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन नाममात्र का ही हो सका था। अक्टूबर क्रांति से पूर्व के केवल एक रूसी भारतविद्याविद प्रोफेसर ई० ए० मोनायख, जिन्हें पुरातन तथा अर्वाचीन भारतीय भाषाओं तथा साहित्यों का अच्छा ज्ञान था भारत की सांस्कृतिक विविधता के अध्ययन का महत्त्व समझते थे।

इस में अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन अक्टूबर समाजवादी क्रांति के पश्चात् ही विधिवत प्रारम्भ हुआ तथा भारतविद्या के प्रमुख सोवियत प्रतिनिधि अकादमीशियन अ० ए० बरानिकोव के पवित्र नाम के साथ उसका अविनाश सम्बन्ध है। श्री बरानिकोव को सोवियत भारतविद्या के नये पथ प्रशस्त करने तथा भारतीय इतिहास व संस्कृति के बहुमुखी अध्ययन के आधार के रूप में महत्त्वपूर्ण अर्वाचीन भारतीय भाषाओं का अध्ययन आरम्भ करने का श्रेय है। अकादमीशियन बरानिकोव ने दाऊद अगदत के साथ मिलकर लैनिनग्राद विश्वविद्यालय में हिन्दी, उर्दू, मराठी, बँगला तथा पंजाबी भाषाओं के अन्वेषण का समुचित प्रबंध किया। उन दोनों ने अर्वाचीन भारतीय भाषाओं तथा साहित्यों के विवेचना को तैयार किया। अकादमीशियन बरानिकोव ने अनेक ग्रंथ तथा पाठ्यपुस्तकें का प्रणयन किया। इन ग्रंथों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पाठ्यपुस्तक है 'हिन्दुस्तानी (हिन्दी व उर्दू)'।

श्री बरानिकोव द्वारा शुरू किये गए उक्त साहित्यिक कार्य एवं माधन्य को आगे बढ़ा रहा है आज भी उनके सुयोग्य कमठ शिष्य तथा प्रशिष्य। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं य० ए० चेर्निगेव। उनके द्वारा हिन्दी कविता पर लिखी गई पुस्तक 'परम्परा तथा नवीन शक्ति' नाम की प्रकाशित हो चुकी है। हिन्दी रूसी तथा रूसी हिन्दी शब्दकोशों का प्रणयन तथा संकलन में महत्त्वपूर्ण योग दिया है डाक्टर व० ए० बरनोवनाय ने। उनके द्वारा संकलित हिन्दी रूसी शब्दकोश के दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। आजकल डाक्टर व० लिपिगस्की तथा डाक्टर ए० जोयाफ के साथ मिलकर नये बड़े रूसी हिन्दी शब्दकोश का प्रकाशन की तैयारी में लगे हुए हैं। डाक्टर

हिंदी भाषा में दीर्घ तथा ह्रस्व स्वर का आपस में विनिमय हुआ करता है। विनिमय होने वाले स्वरों के निम्न युग्म होते हैं — जा अ, इ इ, ए ए इ, ऊ उ ओ उ। ह्रस्व स्वरों का विनिमय आ अ ई, इ ए ए इ ए इ, उ ओ ओ उ प्रायः सक्रमिक तथा प्ररणाधिक क्रियाओं के निमाण में देखा जाता है। जैसे—

बनना	बनाना
पीना	पिलाना
फिरना	फेरना
देखना	दिखाना
बैठना	बिठाना
रुकना	रोकना
सोना	सुलाना

शब्द निमाण के विभिन्न प्रकारों में दीर्घ स्वर प्रायः लघु हो जाते हैं। जैसे शान्त-समोजन में संयुक्त शान्त के पूर्वअक्ष में दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—अधपका (आधा+पका) घुञ्चड़ा (घाटा+धना)।

कनिष्य स्वराधान रहित प्रत्यया द्वारा बनने वाले शब्दों में दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर हो जाते हैं। जैसे—बिटवा (बना+वा)।

लघु 'अ' का अनुच्चारण

हिंदी में प्रयुक्त शब्दों में कभी कभी अ का उच्चारण नहीं होता है। 'अ' का उच्चारण या उमका अनुच्चारण किसी शब्द में उसकी स्थिति पर निर्भर करता है। अ स्वर शब्द के अन्त में असंयुक्त व्यंजना के पश्चात् प्रायः उच्चारित नहीं होता है किंतु जब शब्द के अन्त में संयुक्त व्यंजन होता है तब 'अ' स्वर का उच्चारण सुनाई देता है। जैसे—जन्म क्षुद्र, शांत, युद्ध इत्यादि। शब्द के प्रारम्भ में लघु 'अ' का सदैव स्पष्ट उच्चारण होता है। जैसे—अज्ञात, गमन वचन।

बोलचाल में लघु 'अ' के अनुच्चारण के कुछ नियम

लघु 'अ' का बहुधा उच्चारण नहीं होता है—

- (१) शब्द के अन्त में असंयुक्त व्यंजना के बाद। जैसे—घर, रात, कमल, पुस्तक।
- (२) तीन अक्षरों वाले शब्दों के दूसरे अक्षर में जब शब्द के अन्त में

कोई दीर्घ स्वर होता है। जैसे—बमरा, कडी, बकग करना, बोलना इत्यादि।

- (३) चार अक्षरों वाले शब्दों में अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर में जब शब्द के अन्त में कोई दीर्घ स्वर होता है। जैसे—मुनहरी, कचहरी, समझना, निकलना इत्यादि।
- (४) चार अक्षरों वाले शब्दों में दूसरे अक्षर तथा चौथे व्यंजन के पश्चात् जब शब्द के अन्त में असंयुक्त व्यंजन होता है। जैसे—जटमल, पटसन।
- (५) त्रिया के सामान्य रूपों के दूसरे अक्षरों में जब अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर में गौण 'आ' होता है। जैसे—समझना बदलना इत्यादि।

लघु 'अ' के उच्चारण के कुछ नियम

लघु 'अ' का मदैय स्पष्ट उच्चारण होता है —

- (१) शब्द के पहले अक्षर में। जैसे—जब तब सबाल, जवाब।
- (२) अन्तिम असंयुक्त व्यंजना से पूर्व। जैसे—नरह, धडक, तरल, परल।
- (३) संयुक्त अन्तिम अक्षर में। जैसे—सत्य, धम बुद्ध।
- (४) 'अ' मध्य शब्दों में जब 'य' से पहले 'आ' 'इ', 'ई' 'ऊ' 'स्वरा' में से कोई होता है। जैसे—राय निय राजकाय राजमूय।
- (५) एकाक्षर शब्दों में। जैसे—न, व।
- (६) चार अक्षरों वाली त्रिया के सामान्य रूप के द्वितीय अक्षर में। जैसे—निकलना, समझना बदलना इत्यादि।
- (७) संयुक्त व्यंजन से पूर्वोत्तर में। जैसे—मुश्किल, उमर, मुश्किल।
- (८) विभिन्न द्विरूपियों में बने शब्दों में। जैसे—टकटकी, खटखटाना।

व्यंजन

'व्यंजन' वाक् इन्द्रिय की ऐसी ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में मुख से निश्चित होन वाली वायु के लिए अनेक बाधाएँ आती हैं। हिन्दी में व्यंजन के

निम्नलिखित भेद हैं—

- (१) स्पन्द व्यंजन । क ख ग, घ ङ
च छ, ज, झ ञ
ट ठ ड ढ, ण
त थ, द, ध, न
प फ ब भ, म

(२) अन्तस्थ व्यंजन । य र ल, व ।

(३) ऊर्ध्व व्यंजन । ण प स, ह ।

उच्चारण के स्थान के अनुसार व्यंजनों के निम्नलिखित भेद हैं—

- (१) कण्ठ्य—क, ख ग घ ङ ह ।
(२) तालव्य—च छ ज झ ञ, य र ।
(३) मूढ्य—ट ठ ड ढ ण र प ।
(४) दन्त्य—त थ द ध, न म ।
(५) जालव्य—प फ ब भ म ।
(६) अनुनासिक—ङ ञ ण न म ।
(७) दन्ताप्य—व ।

उच्चारण के नाद या श्वास के अनुसार व्यंजनों के दो मुख्य भेद हैं—

घोष तथा अघोष ।

घोष—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय नाद का उपयोग होता है उन्हें घोष व्यंजन कहते हैं । जैसे—क ख, ङ ज झ ञ ड ढ, ण द ध न व भ म, य, र ल व ह ।

अघोष—जिन व्यंजनों का उच्चारण में श्वास का उपयोग होता है व अघोष व्यंजन कहते हैं । जैसे—ख ख, उ ट ठ त थ, प फ श, स ।

अमे आधुनिक भारतीय भाषाओं का भाति हिन्दी व्यंजनों की एक विवेचना यह है कि स्पन्द व्यंजनों में कुछ ऐसे व्यंजन हैं जिनमें ह की हकी सी ध्वनि उच्चारण में सुनाई देती है । इसीलिए वे महाप्राण भी कहते हैं । जम—ख, घ छ झ ठ ढ थ ध प भ ।

दूसरी विवेचना यह है कि व्यंजनों में एम व्यंजन हैं जो मूर्धा से उच्चारित होते हैं । जैसे—ट ङ ड ढ ण प । इनके उच्चारण में जिह्वा का स्पष्ट मूर्धा भाग से होना है ।

व्यंजन संयोजन

हिंदी में व्यंजनों का संयोजन भी होता है। जैसे—बच्चा झण्डा, मूजना बागा गमता, सब्जी, जिल्हा आदि। बोल्चाल में व्यंजनों का संयोजन कभी कभी इस तरह से उच्चारित किया जाता है जमे उनमें कोई संयोजन न हो। इस प्रकार के उच्चारणों में कुछ व्यंजनों के बीच ह्रस्व अ का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

यफ	बरफ
माण	मारग
रत्न	रतन
घम	घरम
कम	करम

द्वित्व व्यंजन

हिंदी में द्वित्व व्यंजनों का भी प्रयोग होता है। इनका प्रयोग किसी भी शब्द के प्रारम्भ में नहीं किया जाता म य या अत में कही भी हो सकता है। जैसे—अन्न पट्ट चित्त बल्लभ आदि।

व्यंजनों के द्वित्व के कारण शब्द अपने से मिलते जुलते शब्द से भिन्न हो जाते हैं। जैसे —पता और पत्ता, लता और लता।

उच्चारण करते समय कुछ शब्दों में द्वित्व व्यंजनों की-सी ध्वनि प्रतीत हुमा करती है यद्यपि वे वास्तव में द्वित्व व्यंजन नहीं होते हैं। जैसे छीनना का छीना, बनना का बना और रोककर को रोककर की भांति कभी-कभी उच्चारित किया जाता है। उपरोक्त शब्द व्यंजनों के द्वित्वाभास के उदाहरण समझे जाने चाहिए।

अक्षर

हिंदी में ह्रस्व तथा दीर्घ अक्षर होते हैं। ह्रस्व अक्षर वे होते हैं जिनमें अ, इ, उ, ए इत्यादि ह्रस्व स्वर होते हैं या वे अक्षर ह्रस्व गिन जाते हैं जिनमें व्यंजन के साथ ह्रस्व स्वर मिले होते हैं। जैसे—उ छ ल ना प व न।

दीर्घ अक्षर वे हैं जिनमें आ ई ऊ ए, ऐ ओ औ आदि दीर्घ स्वर होते हैं या दीर्घ अक्षरों में उनका परिणाम होता है जिनमें व्यंजन के साथ दीर्घ स्वर मिले होते हैं। जैसे—आ श का ऊ दा आ जा।

हिंदी में शब्दों में अक्षरों की सीमा मना उसने अन्त्य स्वर तक होनी

है तथा इस प्रकार उसका वह पद्वर्ती अक्षर में पक्ष करती है। जैसे—जा ना।
ग या ख्याति।

हिन्दी में अमयुक्त व्यंजन एक स्वतंत्र एक पक्ष अक्षर मान जाते हैं।
जैसे—नि क र ना, बा ल ना ब र ल ना।

यदि गद्य में द्वित्व व्यंजन होता है तो उसमें पूर्ववर्ती अक्षर की सीमा
उस अक्षर के अन्त्य स्वर तक होती है। जैसे—र ट्टा अ न भ ट्टा।

स्वराघात

गद्य में उच्चारण में किसी स्वर पर विशेष बल लगना है। इस बल
लगाने की क्रिया को स्वराघात कहते हैं।

प्रत्येक हिन्दी शब्द में जिसमें एक से अधिक अक्षर हों वे अपना स्वरा
घात होता है। हिन्दी में स्वराघात का स्थान स्थायी नहीं होता अर्थात्
अनेकाक्षरी शब्दों में वह शब्द के आरम्भ में मध्य में तथा अन्त में किसी भी
भाग पर हो सकता है। जैसे—सालन खलाना जल्दी।

गद्य विकास में स्वराघात अपरिवर्तनशील रहता है अर्थात् शब्द के अधिक
कारी रूप में जिस भाग या अक्षर पर स्वराघात होता है उसके विभिन्न रूपों में
भी उमा भाग या अक्षर पर स्वराघात होता है। जैसे—मज—मज—मेजा।
जाना—जाकर—जाऊ।

किसी प्रत्यय के आगम से स्वराघात का स्थान बदल सकता है। जैसे—
बढ़ना—बड़ाव। मछल—मछवा।

हिन्दी में स्वराघात का स्थान ह्रस्व तथा दीर्घ अक्षरों की मध्य तथा
स्थिति पर निर्भर करता है। शब्द में प्रायः किसी एक अक्षर पर स्वराघात
होता है।

स्वराघात सम्बन्धी कुछ सामान्य नियम नीचे दिये जाते हैं—

- (१) जिस शब्द में कच्चा ह्रस्व अक्षर और अन्त में अमयुक्त व्यंजन
होते हैं उसमें अन्तिम अमयुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती अक्षर पर स्वराघात
होता है। जैसे—मडक नमक।
- (२) जिन शब्दों में द्वित्व या मयुक्त व्यंजन होते हैं उनमें स्वराघात
उक्त व्यंजनों में पठ्य वाच्य अक्षर पर होता है। जैसे—तिल्ली
तिन्नी।
- (३) यदि किसी शब्द में दो या तीन अक्षर हैं और उनमें से कोई
अक्षर दीर्घ है तथा अन्त्य ह्रस्व है तो स्वराघात दीर्घ अक्षर पर

हाना है। जैसे—घड़ी, पन्नी सिटकी करना, पढ़ा, कर्ता, पन्ता, किया, स्थिा करा, बनाकर।

- (४) यदि शब्द म दा या दो में अधिक अक्षर हान हैं और उनमें दो या दो में अधिक दीघ अक्षर हाने हैं तो अन्तिम से पूवाक्षर पर स्वराघात होना है। जैसे—किराया जासानी भिचलाना, खटखटाना।
- (५) यदि शब्द म चार या उसमें अधिक अक्षर हैं और उसमें अन्तिम अक्षर दीघ है तथा उसमें पूर्व का अक्षर ह्रस्व है तो स्वराघात उस ह्रस्व अक्षर में पहले अक्षर पर हाना है। जैसे—बचहरी, मुनहरा, पगवना पहुँचना ममथना।
- (६) यदि शब्द में केवल ह्रस्व अक्षर है तो स्वराघात होता है उपास्य अक्षर पर। जैसे—पटसन दुल्हिन अचकन।
- (७) उन शब्दों में जो द्विवचिनियों में बने होते हैं स्वराघात होना है अन्तिम दायाँ अक्षर पर। जैसे—सरसरी, बुन्दुल, गुदगुदा।
- (८) 'नही' निपात तथा माननामिक क्रियाविभक्ति में स्वराघात होता है शब्द के द्वितीय अक्षर पर। जैसे—नही यहा बहा, कही।
- (९) समान बाप गल्ल म स्वराघात या तो ठीक उही भाषो पर होता है जिनमें अममस्व रूप में हाना है या बहुधा उनमें अन्तिम दीघ अक्षर पर प्रबल स्वराघात होता है और समानबाले शब्द के पूर्व भाग पर हल्का सा स्वराघात। जैसे—मा बाप कूडा बचरा, चाल लाल, नीकर-चाकर, गुस्लखाना दवाफराश।
- (१०) यदि शब्द प्रत्यय जुटकर बनते हैं तथा उन प्रत्ययों में अपना स्वराघात है तब प्रत्ययों का वही स्वराघात प्रायः प्रत्ययमहिता ममग्र गल्ल का होता है। ऐसे शब्दों में मूल शब्द का स्वराघात गाण होता है। जैसे—गाड़ी बाग, लकड़हारा रफूगर।

लिपि

य चिह्न, जो वाग् धनिया का प्रबल वर्ण के लिए प्रयुक्त होता है उह वर्ण या अक्षर भी कहते हैं। जैसे—अ, ग, घ, श।

वर्णों या अक्षरों के समूह को वर्णमाला या लिपि कहते हैं।

हिन्दी में प्रयुक्त लिपि का नाम 'देवनागरी' या नागरी है। हिन्दी लिपि में प्रत्येक वर्ण को पक्ष बनाते हैं और उस वर्ण के पीछे चार स्तंभ, या

जाता है। जम्—जकार डकार उकार ङकार मकार।

हिंदी वणमाला में वर्णों का क्रम उनका ध्वनियाँ व उच्चारण व स्थान के अनुसार है। तदनुसार वणमाला में मवप्रथम व ग्यारह वण आते हैं जो स्वरा व ध्वनियाँ के चिह्न हैं। उनका बाद आते हैं व २१ वण जिनमें प्रथम पाँच का एक वग है और जो स्पष्ट यजना की ध्वनियाँ व चिह्न हैं। तदनन्तर आते हैं चार वग जो अतस्थ यजना की ध्वनियाँ व चिह्न हैं। इनका बाद आते हैं उष्म यजना की ध्वनियाँ व चिह्न।

इस प्रकार वर्तमान हिंदी वणमाला में ८४ स्वतंत्र वण या अक्षर हैं।

स्वरों की ध्वनियों को व्यक्त करने वाले वर्ण—

अ	उ	ऐ
आ	ऊ	ओ
इ	ऋ	औ
ई	ए	

अर्ध रूप में लिखे जाने वाले कुछ स्वर —

अ आ ओ औ।

यजनों की ध्वनियों को व्यक्त करने वाले वर्ण—

क वग—क ख ग घ ङ
च वग—च छ ज (झ) ञ
ट वग—ट ठ ड, ढ, ण (ण)
त वग—त थ द ध न
प वग—प फ ब भ म
य र ल व।
श ष स ह।

उपरोक्त वर्णों व अनिरिक्त हिंदी वणमाला में प्रयुक्त होते हैं निम्न वण भी—ड ढ ङ ऋ ग ञ फ। हिन्दाइतर भाषाओं से आई ध्वनियाँ को व्यक्त करने के लिए इन वर्णों का उपयोग किया जाता है। य वण स्वतंत्र नहीं होते हैं तथा हिंदी के गणकोश में इन वर्णों वाले गणों का स्वतंत्र रूप से उल्लेख नहीं किया गया है अपितु गणकोश में वर्णक्रमानुसार ड ढ, क ख ग, ज फ वर्णों वाले शब्दों का साथ दे दिया जाता है। जैसे—कतग—कतरा। बफ—बफ।

क्ष—क्ष तथा ण संयुक्त अक्षर कभी कभी पथक वण समझे जाते हैं, किंतु वास्तव में वे पथक वण नहीं हैं। य वणमाला के अंगों व वग तथा ज

वर्ण के अन्तर्गत ही है। स्पीकिंग हिन्दी के शब्दों में क्ष=क्ष तथा च वाले शब्दों को वर्णप्रमाणानुसार क तथा 'ज' वर्णों द्वारा शब्दों के साथ दिया जाता है। 'व' को छोड़ करके क म बन मयुक्ताक्षरा वाले शब्दों के बाद क्ष का प्रयोग आता है। 'ज' म बन मयुक्ताक्षरा से पहले 'न' वाले शब्द शब्दों में दिये जाते हैं। जैसे—विधनाईन के बाद क्षत्रिय जस बाद जार 'ज्या' म पूर्व नेच जैसे शब्द। हिन्दी वर्णमात्रा म च तथा च ममेन कुल मिलाकर नौ अतिरिक्त वर्ण या अक्षर हैं। गप मान अक्षर ह—ड ड क ख, ग, ज फ।

अतिरिक्त चिह्न

हिन्दी लिपि म वर्णों के साथ साथ निम्नलिखित कुछ अतिरिक्त चिह्नों का प्रयोग किया जाता है—

(१) स्वर के चिह्न अर्थात् मात्राएँ। इनका प्रयोग उन स्वरों का व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो व्यंजनों म जुड़कर ही प्रयुक्त होते हैं। स्वरों के अधिकांश चिह्न स्वर वर्णों के खण्डित रूप चिह्न होते हैं। जैसे—

आ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^१
ई का खण्डित रूप चिह्न है	— ^२
इ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^३
उ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^४
ऊ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^५
ऋ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^६
ए का खण्डित रूप चिह्न है	— ^७
ऐ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^८
ओ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^९
औ का खण्डित रूप चिह्न है	— ^{१०}

जस—मा गि गौ, गु गू ग, ग, ग या गौ।

स्वर वर्ण केवल सेव प्रयुक्त होते हैं जब उनमें व्यंजन ध्वनियाँ शब्दों के आरम्भ म या स्वरों के पश्चात् ही होती हैं। जैसे—आम म, मुजाबदा।

(२) निराक्षरा के ऊपर दिये जाते हैं जहाँ जहाँ चिह्न। उनका उपयोग अंग्रेजी से आये या अंग्रेजी के शब्दों के आ स्वरों का व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे—डाक्टर ऑपरा।

() अनुनासिक या चन्द्रचिह्न चिह्न। यह चिह्न यह सूचित करता है कि स्वर अनुनासिक है। जैसे—यादना चँदना। परन्तु वर्तमान हिन्दी म स्वर

की अनुनासिकता को 'यजन करने वाल' चंद्रबिंदु व स्थान पर केवल अनुस्वार बिंदु भी लिखन की प्रथा है। जैसे—पाच जाए।

(४) ह्रस्व चिह्न । 'सका प्रयोग किया जाता है यजन वर्णों में ह्रस्व 'अ' के रूप का स्थान के लिए। जैसे—क न प।

(५) 'अनुस्वार बिंदु चिह्न । 'सका प्रयोग किया जाता है—

(क) वर्णों के पंचम वर्ण के स्थान पर। जैसे—गगा चचल कठ सत कप।

(ख) स्वर की अनुनासिकता स्थान के लिए। यह प्रायः तब प्रयुक्त होता है जब स्वर मम चिह्न में 'यजन' किया जाता है या गिराखा के ऊपर होता है या स्वर वर्ण में गिराखा के ऊपर कोई चिह्न होता है।

जैसे—बीचना भम मचें नेताजा।

() विगग चिह्न । दूसरा प्रयोग किया जाता है कनिपय सम्बृत दादा में तथा उपसर्गों में उच्छवास का 'यजन करने' के लिए। विगग का उच्चारण प्रायः 'ग' का भाति होता है। जैसे—अत निगुन पुन स्थापित।

विगग का प्रयोग कनिपय हिन्ना गंगा में भा हूँ के स्थान पर किया जाता है। जैसे छह के स्थान पर छ भा लिया जाता है।

संयुक्त अक्षर

हिन्दी वर्णमाला के प्रत्येक हल् के रहित 'यजन' अक्षर एवं वर्ण में ह्रस्व अ मिलता हुआ रहता है। जैसे—क प त म। 'सर्ग' 'यजन' अक्षरों के जिन संयोजनों में ह्रस्व 'अ' नहीं है उनका लिपि द्वारा प्रकट करने के लिए संयुक्त अक्षर प्रयुक्त होते हैं।

सब 'यजन' अक्षरों में कुछ स्थायी सामान्य अंग होते हैं—अर्थात् उनमें पंदा रेखाएँ तथा खड़ी रेखाएँ होती हैं जो माना अक्षर का सम्बन्ध होता है। पंदा रेखा खण्डित न हो सकती है जहाँ क व न द न ह। परन्तु प्रत्येक 'यजन' अक्षर का अपना विशेष चिह्न होता है। यह विशेष चिह्न व्यजन अक्षर का वह भाग है जो उसमें तब भी बना रहता है जब व्यजन अक्षर में व पड़ी रेखाएँ तथा खड़ी रेखाएँ नहीं हैं जो मात्र व्यजन अक्षरों के लिए सामान्य है। जैसे

* हिन्दी शब्दकोशों में व शब्द, जिनमें अनुनासिक या अनुस्वार चिह्न हैं, प्रायः दूसरे गंगा से पहले लिखे जाते हैं। जैसे—झाऊँ का पहले ज्ञाता शब्द दिया जाता है और मुन्ट से पहले 'मुन्ट'।

‘ग’ अक्षर का विशेष चिह्न ‘ग’ है और ‘ज’ का विशेष चिह्न है ‘ञ’ ।

‘झासा’ ग-द लिखा जाता है और ‘गुच्छ’ में पढ़ा ‘गुच्छ’ ।

हिंदी में तीन व्यंजन अक्षरों के संयोजन से बने समुक्ताक्षर प्रयोग में बहुत नये आते हैं ।

अधिकतर समुक्त अक्षर दो व्यंजन अक्षरों के संयोजन से बनते हैं ।

समुक्त अक्षरों में पि का दृष्टि में या तो खड़ा रखा जा सके है या प्रायः पड़ी रखा जा सके । खड़ी रखा जा सके आकृति के समुक्त अक्षर में प्रथम व्यंजन अक्षर अवशिष्ट रूप में लिखा जाता है और अंतिम व्यंजन अक्षर का विशेष चिह्न उनके नीचे जुड़ता है । जैसे—ट्ट ङ्ग ङ्ग ।

पड़ी रखा जा सके समुक्त अक्षर में अवशिष्ट रूप में अंतिम व्यंजन अक्षर लिखा जाता है । उसके पूर्व जुड़ता है प्रथम व्यंजन अक्षर का विशेष चिह्न । जैसे—गु+न=गुन । प+य=पय ।

कुछ समुक्त अक्षर खड़ी रखा जा सके तथा पड़ी रखा जा सके दोनों ही हो सकते हैं । जैसे—‘ल’ तथा ‘न’ । ‘व’ तथा ‘इ’ । ‘ख’ तथा ‘ग’ ।

यद्यपि क+प के संयोजन में तथा न+ज के संयोजन से बने समुक्त अक्षर हैं । किंतु वे प्रायः स्वतंत्र अक्षर माने जाते हैं ।

समुक्त अक्षरों में २ अक्षरों का भी परिवर्तित आकृति के साथ लिखा जाता है । प्रथम व्यंजन अक्षर के साथ संयोजन में २ आवाजों के रूप में व्यंजन अक्षर के निचले भाग में जोड़कर लिखा जाता है । जैसे—क+र=कर । ज+र=जर । द+र=दर । प+र=पर । व+र=वर ।

परवर्ती व्यंजन अक्षर के साथ संयोजन में र के रूप में चिह्न () के रूप में अंकित होता है जो अक्षर के ऊपर लिखा जाता है । जैसे—र+व=रव । र+य=रय ।

परवर्ती व्यंजन अक्षर के साथ कोई दीर्घमात्रा चिह्न होता है तो उस दीर्घमात्रा चिह्न के रूप में अनुस्वार के रूप में चिह्न व्यंजन अक्षर के ऊपर नहीं अपितु दायां भाग में जोड़कर लिखा जाता है । जैसे—र+पा=रपा । र+मा=रमा ।

अक्षर ट ठ ड द ज ङ ग र साथ उन समुक्त अक्षरों में ‘र’ व्यंजन अक्षर ‘चिह्न’ के रूप में अंकित होता है । यह ‘चिह्न’ उन व्यंजन अक्षरों के नीचे जोड़कर लिखा जाता है । जैसे—ट+र=ट्र । ठ+र=ठ्र ।

‘ज’, ‘झ’, ‘ण’, ‘न’ में य पाँच अनुनासिक व्यंजन अक्षर समुक्त अक्षर के रूप में अपने वगैरे व्यंजन अक्षरों के साथ हो मिश्रित लिखे जाते हैं ।

र+व=रु । र+ज=रज । ण+ठ=ण्ठ न+द=द । म+व=म्व ।

वनमान हिंदी में उक्त पाँच अनुनासिक यजन अक्षरा व स्थान पर प्रायः अनुस्वार स्थान की प्रवृत्ति पाई जाती है । जैसे—अब कुजा कठ हिंदी में ।

बहुधा प्रयुक्त होने वाले सयुक्त अक्षरों की सूची

क+व=क्व क+त=क्त् क+त=क्त् त क+म=क्म
क+य=क्य क+र=क्र क+र=क्त् क+व=क्व क+
य=क्ष क+य+म=क्यम क+म=क्यम ।

ख+त=खत् ख+य=ख्य ख+र=ख्र ख+ग=खग ।

ग+र=ग्र । ग+ध=गध ग+न=गन् ग+म=गम ग+य=ग्य
ग+र=ग्र ग+र=ग्र ।

घ+न=घ्न घ+य=घ्य घ+र=घ्र र+व=रु र+त=रु
र+ग=रु र+य=रु ।

च+ध=चध च+छ=च्छ च+य=च्य ।

छ+र=छ्र ।

ज+ज=ज्ज ज+झ=ज्झ ज+ज=ज न+म=नम ज+य=ज्य
ज+र=ज्र ज+व=ज्व ।

ट+र=ट्र ट+ठ=ट्ठ ट+य=ट्य ट+र=ट्र ।

ठ+य=ठ्य ठ+र=ठ्र ।

ड+ग=ङ्ग ड+ड=ङ्ग ड+य=ङ्य ड+र=ङ्र ।

ड+य=ड्य र+र=र ।

ण ट-ण्ण ण+ठ=ण्ठ ण+ड=ण्ड ण+ड=ण्ण ण+ण=ण्ण
ण+य=ण्य ।

त+क=त्क् त+त=त्त् त+त+व=त्त्व त+ध=त्थ त+न=त्न
त+म=त्म त+य=त्य त+र=त्र त+स=त्स त+म+न=त्स्न त+स+य=त्स्य ।

थ+य=थ्य थ+र=थ्र थ+व=थ्व ।

द+य=ड द+द=द् द+ध=द्ध र+न=द्र र+म=द्र
द+म=द्र द+य=द्र र+र=द्र द+व=द्व ।

ध न=ध्न ध+म=धम ध+य=ध्य ध+र=ध्र ध+व=ध्व ।

$n+t = n$ $n+y = y$ $n+d = d$ $n+d+r = r$, $n+g = g$ $n+g+y = y$ $n+n = n$ $n+m = m$ $n+y = y$,
 $n+r = r$ $n+g = g$ $n+y = y$ — $n-g = g$ — $n-r = r$!

$v + n = \text{व्न}$ श, $v + n = \text{व्न}$ प्र $v - v = \text{व्न}$, $v + y = \text{व्य}$ $v +$
 $m = \text{व्य}$, $v + r = \text{व्र}$ $v + r = \text{व्र}$ श, $v - m = \text{व्य}$ ।

क-न=ण, क म=पय क +र=ऋ ।

$व + ज = ञ$ $व + ङ = ण$ $उ + ण = ऒ$ $व + न = ण$ $व + व = व$
 $व + म = म$ $उ + य = ए$ $व + र = र$ ।

म-ल=भन म+य=भ्य म+र=भ्र ।

म + न = न्न म + प = प्न, म + व = व्न म + ल = ल्न, म + म = म्न म + य = य्न म + र = र्न म + ल = ल्न, म + न्न = न्न।

य- य=र्य ।

र+म=म र+द=द र+य=य ।

$$7-7=0, 7+7=14, 7-7=0, 7+7=14, 7-7=0$$
$$x+y=z \quad x+y=xy \quad x+y=yz$$

१+४=५, १+३=४, २, १+२=३ ३ १+५=६,
५ १+७=८, १+८=९, १+६=७, ४ ।

पू+क=क, प+ट=ठ प+ट+र=ठ, पू+ठ=ठ प+ण
=ण प+प=प प+म=म प+य=य, प+ब=ब ।

स+व=स्व, स+ल=स्ल, स+ट=स्ट, स+त=स्त, स+त+
 र=स्त्र, स+थ=स्थ, स+थ+थ=स्थथ, स+न=स्न, स+प=
 स्प, स+फ=स्फ, स+ब=स्ब, स+म=स्म, स+य=स्य, स+र=स्त्र,
 स+ल=स्ल, स+व=स्व, स+थ=स्थ।

* गम=ख, ह + म=झ, ह + य=झ, ह + र=ह, ह - व=ख, र + व=ख ।

शब्द-विचार तथा पद-रचना

हिंदी भाषा भारोपीय परिवार के भारतीय भाषा समूह की भाषा है। हिंदी भाषा पद रचना के अनुसार विच्छेदनात्मक प्रकार की भाषाओं में गिनी जाती है क्योंकि उगम अधिकतर क्रिया सम्बन्धी रूप सामान्य वृत्तों तथा विभिन्न महापद क्रियाओं के रूपों के संयोजन से बनते हैं और वाक्य के अंगों के सम्बन्ध विभक्ति चिह्नों द्वारा सूचित होते हैं। ये विभक्ति चिह्न नामिक शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं।

हिंदी भाषा का गठन विच्छेदनात्मक गठन नहीं है। अधिकतर विच्छेदनात्मक रूपों के साथ साथ हिंदी में संश्लेषण के अंग भी विद्यमान हैं। ये अंग भाषा के विकास के विभिन्न चरणों के चिह्न हैं। हिंदी में क्रियाविच्छेदना की छाँटकर सब प्रज्ञान का अंग में संश्लेषण पाया जाता है। जैसे—छुटका लड़का लड़का बना छोटी बड़ पोरवा पाचवी पाचर हम हम जाना जाऊ जाऊँगा जाऊँगी जायेंगे।

संश्लेषण के अंग हिंदी तथा वचन में का विभक्ति चिह्न तथा भाषा निधान के विकास में भाषा पाये जाते हैं। जैसे—पिता का घर पिता की पुस्तक पिता के पत्र बहुत गा बामन बहुत सी बिल्ला बहुत से गमाचारपत्र।

शब्द भेद

अपने जायामूल तथा और व्याकरण सम्बन्धी रूपों के अनुसार हिंदी भाषा के शब्दों को शब्दों के व्याकरण सम्बन्धी अर्थों में विभाजित हो जाते हैं जो शब्द भेद कहलाते हैं। ये शब्द शब्द भेद जिसका शब्दों के व्याकरण सम्बन्धी निश्चिन जय है उसमें निश्चिन पदरचना विषयक स्वरूपों और शब्द निमाण सम्बन्धी रूपों का विचार होता है और वाक्य में वह अपनी भूमिका अदा करता है।

हिंदी में हमारे मन के अनुसार तीन प्रकार के शब्द भेद हैं—प्रधान शब्द भेद, महायक शब्द भेद और विस्मयान्वाक्य शब्द भेद।

प्रधान शब्द भेद वाक्य के विभिन्न अंग होने हुआ वस्तुभावा का उनकी विशेषताया, उनकी सख्या, उनके व्यापारा और अवस्थाया तथा उन व्यापारा और अवस्थाया का विशेषताया का बनाने है। अर्थात् व गण्य भेद वस्तुस्थिति को उनकी वस्तुभावा व्यापारा और विगणनाया में प्रतिबिम्बित कर देने है। प्रधान गण्य भेदों में निम्न का समावेश होता है—पना विगणन मय्या त्रिया और त्रियाविगणन। प्रधान गण्य भेदों में सर्वनाम भी आते हैं यद्यपि वे वस्तुभावा और उनकी विगणनाया का नहीं बनाने हैं। वे तो केवल उन वस्तुभावा का निर्देश करते हैं।

सहायक गण्य भेदों में विभिन्न चिन्ता समाजक गण्य और निगणना का समावेश होता है। सहायक गण्य शब्द वाक्य के स्वरूप अंग नहीं होते हैं। वे शब्दों और वाक्यों के बीच विभिन्न सम्बन्धों को व्यक्त करते हैं अथवा किन्हीं शब्दों या पूरे वाक्यों का भावाय सूचित करते हैं।

विस्मयादिवाचक गण्य भेद प्रधान गण्य भेदों और सहायक गण्य भेदों में भिन्न धेनो का होता है। प्रधान गण्य भेदों में विस्मयादिवोचक गण्य भेदों की भिन्नता इसमें है कि विस्मयादिवाचक वस्तुभावा और उनकी विगणनाया का नहीं बनाने हैं। सहायक गण्य भेदों में वे विस्मयादि भिन्न हैं कि वे गण्य के बीच सम्बन्धों का नहीं प्रकट करते और न उन गण्य का भावाय व्यक्त करते हैं। विस्मयादिवाचक गण्य केवल मानसिक भावा को व्यक्त करते हैं। विस्मयादिवाचक गण्य भेदों में प्रधान गण्य और सहायक गण्य भेदों में समान्तर में भी भिन्न है कि वाक्य में विस्मयादिवाचक गण्य का कार्य-कारण प्रत्यय सम्बन्ध नहीं होता।

त्रिणी भाषा में प्रत्यय गण्य शब्दों की अपनी अपनी गण्यवर्ग पञ्चवर्णा व वाच्यवर्णा-सम्बन्धों विगणनाया होती है।

संज्ञा वाचक भेद व्यापक रूप में वस्तुभावा का निर्देश करता है। त्रिणी भाषा में संज्ञा के वचन त्रिणी और वारक होते हैं। वाक्य में मनाएँ सामान्य तथा असामान्य ज्ञाना वाचकों में प्रयुक्त होता है। सामान्य वाचक एकवचन का रूप होता है कि वचनी रूपों का निमाण करने के लिए आधारभूत रूप है। असामान्य वाचक प्रायः विभिन्न चिन्तों के साथ प्रयुक्त होता है। वाक्य में मनाएँ उद्देश्य और काम के रूप में व्यवहृत होते हैं। हाश्वि व दूसरे वाच्य भी कर सकते हैं अर्थात् विधेयक का अंग, विगणन तथा त्रियाविगणन भी हो सकता है।

विगणन वस्तु के गुण तथा जाति विगणनाया का बनाना है। उनमें दो वाचक होते हैं—सामान्य वाचक और असामान्य वाचक। विकारी विगणन के वचन त्रिणी तथा तुलनावस्था होते हैं। वाक्य में सम प्रसार के गण्य गुणनिर्णयक

तथा विधेयक के अंग के रूप में प्रयुक्त होता है। वाक्य में दूसरे अंगों में उनका प्रयोग उद्देश्य के अंगों के रूप में कम होता है।

संख्या वस्तुओं के परिणाम तथा उनके क्रम का बनाती है। संख्या के निम्नलिखित अनेक भेद होते हैं—गणनावाचक क्रमवाचक जावत्तिवाचक और समुदायवाचक।

गणनावाचक संख्या तथा समुदायवाचक संख्या अविकारी होती हैं। क्रमवाचक संख्या के वचन, लिंग तथा कारक होते हैं। उनके रूप आकाशान्त विन्यासों के तरह बनते हैं। जावत्तिवाचक संख्या विकारा या अविकारी नहीं हो सकती है। वाक्य में कोई भी संख्या प्रधानतः गुणनिर्देशक के रूप में व्यवहृत होती है यद्यपि उसका उपयोग विधेयक के अंग या उद्देश्य के रूप में भी हो सकता है।

संख्याओं के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी भाषा में संख्याओं के मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं—संज्ञा संख्या (मैं तू हम आदि) 'विन्यास संख्या' (जैसे जसा क्या जानि) और 'संख्या संख्या' (इतना उतना कितना आदि)। वाक्य में ये तीन प्रकार के संख्या वहाँ कार्य करते हैं जो संज्ञा विन्यास तथा संख्या किया करते हैं। कुछ संख्या विकारी होते हैं और कुछ अविकारी होते हैं।

संज्ञा संख्या के तीन कारक होते हैं—सामान्य कारक असामान्य कारक और क्रम कारक। उदाहरण के लिए— मैं मुझ मुझे। क्रम कारक के साथ कोई भी विभक्ति चिह्न प्रयुक्त नहीं होता। विन्यास संख्या तथा संज्ञा संख्या विकारी विन्यास तथा क्रमवाचक संख्या के तरह रूप बनते रहते हैं।

क्रिया का शब्द भेद व्यापार या अवस्था को व्यक्त करता है। क्रिया के पुरुष वचन का प्रकार और वाक्य होते हैं। वाक्य में क्रिया प्रायः विधेय के रूप में प्रयुक्त होती है। वाक्य में अन्य कार्य क्रिया के दूसरे रूप अर्थात् सामान्य रूप कृत रूप पूर्वकारि कृत रूप जानि किया करते हैं। क्रिया के व्यापार का पूर्णता और अपूर्णता अवस्थिकता दीर्घाकारिणी आदि व्यक्त करने वाले क्रिया के विभिन्न रूपों के कारण भाषा में स्पष्टता आती है।

क्रियाविशेषण क्रिया की विन्यासता का या अन्य क्रियाविन्यास की विन्यासता को बनाता है। जैसे—सूख गिबना जल्दी चलना बहुत जाहिस्त, अति गान्धर्व्यादि। हिन्दी में क्रियाविन्यास अविकारी होते हैं।

विभक्ति चिह्न हिन्दी भाषा में वाक्य में शब्दों के सम्बन्ध प्रकट करने और वस्तुओं में या वस्तु और क्रिया के व्यापार या अवस्था में विस्तार का

कारण जादि विषयक सम्बन्ध का को दशात है। का विभक्ति चिह्न का छाड़ करके बाकी सब विभक्ति चिह्न अविकारी होत है। विभक्ति चिह्न का स्वतन्त्र अंग नहीं हो सकता है। वह वाक्य के स्वतन्त्र अंगों में सम्बन्ध का साधन होता है और उनकी एक दूसरे की अधीनता का बनाता है।

संयोजक संयोजक शब्दसमुदायों और वाक्यों का जाड़ते है। विभक्ति-चिह्नों की तरह व वाक्य के स्वतन्त्र अंग नहीं होत है। ये संयोजक शब्द अविकारी होत है।

निपात निपात पूरे वाक्य को तथा वाक्यान्तगत शब्दों का विभिन्न भावार्थ प्रदान करता है। सा का छोड़कर बाकी सब निपात अविकारी होत है। निपात वाक्य का स्वतन्त्र अंग नहीं होता है।

विशेषादिबोधक शब्द जसा कि लेख के प्रारम्भ में प्रतिपादित किया गया है कि वे न तो स्वतन्त्र शब्द भेद के अन्तर्गत आत हैं और न महायक शब्द भेद के अन्तर्गत। वे वाक्य से पृथक् होत है।

हिन्दी भाषा में विभिन्न शब्द भेद एक दूसरे से पृथक् नहीं होत है प्रत्युत वे एक-दूसरे से सम्बन्धित होत है। शब्द भेद अर्थात् शब्द वर्गीकरण की सीमाएँ बहुत अस्थायी होती है। अक्सर ऐसा होता है कि एक प्रकार के शब्द भेद का समावेश दूसरे में हो जाता है या एक शब्द भेद के शब्द दूसरे शब्द भेद का कार्य कर रहे होत है। उदाहरणार्थ बहुत सी सगाएँ और शब्द-समुदाय क्रियाविशेषण हो जात है और अविकारी बन जात हैं माना उन्होंने एक रूप धारण कर लिया है। जैसे कि, 'सुबह' गज 'दब पाव' 'दिन छडे' 'इस प्रकार' 'किसी-न-किसी तरह' इत्यादि।

हिन्दी में विभिन्न शब्द भेदों का मनीकरण बहुत व्यापक रूप में होता है। हिन्दी में विशेषण, कृदन्ता और क्रिया के सामान्य रूपा का मनीकरण प्रमुख रूप में होता है। जैसे धनी, कूहा मान, मे, जान के लिए, इत्यादि। ग्राम तौर पर हिन्दी में सनाआ और विशेषण का बोध अंतर बड़ा सूक्ष्म सा है। वाक्य में पृथक् इस प्रकार के शब्दों के बारे में यह बताना आसान नहीं होता है कि वे मनामूचक शब्द हैं या विशेषणमूचक शब्द। जैसे साम्राज्यवादी, बंद जवान आदि।

इस प्रकार के शब्दों का अर्थ बस किसी वाक्य से ही स्पष्ट होता है।

कृदन्ता में विशेषण बनने के उदाहरण प्रायः दृष्टि में आत है। इस प्रक्रिया में विशेषण के रूप में कृदन्ता का उपयोग महायक होता है। विशेषणों में कृदन्ता की पूर्ण परिणति नव होती है जब किसी कृदन्त का अर्थ उस क्रिया का

अथ म भिन्न गा हो जाना है, जिस क्रिया म वह बना है। जैसे 'लिखना-पढ़ना लिखा पढ़ा' इत्यादि।

विशेषण और गुणवाचक क्रियाविशेषण म भा अन्तर पड़ा सूक्ष्म-सा है। प्रायः उस विशेषण जो गुण या विशेषता सूचक हान है, क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त हान है। जैसे कि खूब अच्छा बुरा, मोघा, इत्यादि।

किमी भी शब्द का वर्गीकरण अर्थात् भेद किमी निश्चित शब्द भेद द्वारा बताना बबल वाक्य पर निर्भर करता है। कम शब्द की पदरचना व वाक्य रचना सम्बन्धी विशेषताएँ स्पष्ट नो जाती ह और उस एक शब्द का अर्थ प्रकट हो जाना है। जैसे वह अच्छा आत्मी है, वह अच्छा पन्ता है।

प्रधान शब्द-भेद

सज्ञा

हिंदी में सज्ञा के गण्य भेद सम्बन्धी अपने वाक्य रचना व पदरचना विषयक कई स्वरूप चिह्न हैं। वाक्य रचना विषयक स्वरूप सूचक चिह्नों में मुख्यतः वाक्य में निम्नलिखित रूपों में प्रयुक्त हान का सज्ञाओं का सामर्थ्य है -

- १ उद्देश्य के रूप में जैसे, उसका लड़का स्कूल में पढ़ता है।
- २ विधेयक के नामिक अंग के रूप में जैसे, वह अध्यापक है।
- ३ गुण निर्देशक के रूप में जैसे, बाप का घर।
- ४ समानाधिकरण के रूप में जैसे, हिन्दुस्तान समाचार पत्र।
- ५ प्रधान क्रम के रूप में जैसे, यह पुस्तक उसने मेरे लिए खरीदी है।
- ६ अप्रधान क्रम के रूप में जैसे, मैं अपने मित्र को चिट्ठी लिखी थी।
- ७ विरोधता बोधक के रूप में
 - (क) समय विशेषताबोधक के रूप में। जैसे, नित्य में, सास का गर्मियों में। कभी कभी समय विशेषताबोधक के रूप में सनाएँ विभक्ति चिह्नों के बिना भी प्रयुक्त होता है। जैसे, सुबह, सायन, रात।
 - (ख) स्थान विशेषताबोधक के रूप में। जैसे, घर के ऊपर, नगर में, मेड़ व नीचे।

गतिबोधक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होने वाले समय सनाएँ क्रिया की क्रिया निर्दिष्ट कर देती हैं। जैसे, वह बम्बई जाता है।

- (ग) प्रकार विशेषताबोधक के रूप में जैसे, जोर से, अच्छी तरह, उसकी मानिन्द।

- ८ परिमाण व मात्रा निर्देशक के रूप में जैसे, चार टन लोहा। आठ मीटर बपड़ा। पांच बिलामाटर दूर।

इस प्रकार क्रिया में वकल सनाएँ ही कार्य कर सकती है।

अब गण्य भेद का विषय करके विषयण तथा क्रिया के साथ सज्ञा का प्रयोग भा सज्ञा का वाक्य रचनाविषयक स्वरूप सूचक चिह्न होता है।

विनारी विषयण के लिए, वचन, और कारक रूप सज्ञा के लिए, वचन

और वारक के अनुसार होते हैं और त्रियाजा के रूप बदन लिए और वचन में सजा के अनुसार होते हैं।

उदाहरणार्थ छोटा लम्बा छात्र गड्ढा छात्र गड्ढा छात्र लडकियाँ छात्र लडके का छोटा लम्बा सेठना है छात्र लडकी मलती है छात्र लडकियाँ खलती हैं।

कई अवसरों पर मना का वाक्य रूप नहीं बनता है किन्तु विशेषण या त्रियाजे के रूप मना के वचन निर्मित कर देते हैं। जैसे अच्छे जान्ना। यह जान्नी कम काम करता है। वह आदमी सोलन है।

सना का एक और स्वभाव चिह्न यह होता है कि वह क्रिया विपणन के साथ प्रयुक्त नहीं होता है। मना गन् मवनामा क्रिया के सामान्य रूप तथा कृदन्ता की भाँति विभक्तियाँ के साथ प्रयुक्त होते हैं जो विभिन्न प्रकार के कम विग्नान कारण जानि सम्बन्धों का अभिव्यक्त करते हैं।

ऊपर दिये गये मना के वाक्य रचना विषयक स्वरूप चिह्न में सबसे प्रमुख स्थान उद्देश्य और काम के रूप में उनके प्रयोग का है क्योंकि इन वाक्य-रचना विषयक स्थितियों में मना गन् प्रायः सूत पत्तियों तथा उनमें निहित सब लक्षणों को सूचित करते हैं।

हिन्दी में क्योंकि अन्य गन् भेद पत्तियों का भाव व्यक्त करने के सामान्य वाक्य नहीं होते अतः वे इस प्रकार के वाक्य रचना विषयक कार्य नहीं करते हैं।

हिन्दी में भावाय और इससे सम्बन्धित याकरण विषयक विपत्ताओं की दृष्टि से मनाएँ जातिवाचक तथा व्यक्तिवाचक होती हैं। जातिवाचक मनाएँ एक ही प्रकार के व्यक्तियों वस्तुओं आदि का बोध करती हैं तथा हिन्दी में प्रमुख होती हैं। जातिवाचक सनाओं में गिन जाते हैं—

- (क) सम्बन्धिता व्यवसायो पत्तों कार्यों आदि के नाम। जैसे भाई बहन मन्त्री अध्यापक।
- (ख) पशुओं पत्तियाँ मत्स्या की पत्तियों के नाम। जैसे घोड़ा कौआ ग्राह मक्खी तिल्ली।
- (ग) वस्तुओं के नाम। जैसे घड़ी पुस्तक मज।
- (घ) पौधा घातुओं खनिजों के नाम। जैसे नीम चांदी कायला।
- (ङ) प्राकृतिक तत्त्वों के नाम। जैसे वर्षा जाड़ा, बिजली जाड़ा।
- (च) सामाजिक घटनाओं के नाम। जैसे राज्य प्राप्ति युद्ध निवाचन।
- (छ) सामाजिक व राजनीतिक सिद्धान्तों के नाम। जैसे मार्क्सवाद समाजवाद द्वतवादी नीतिवाद।

(ज) गुणोक्त नाम । जैसे वीरता, ईमानदारी, लम्बाई ।

(घ) व्यापारा तथा अवस्थाओं के नाम । जैसे बुनाई, पढाई, बीमारी नींद ।

(ञ) भावावेगों के नाम । जैसे हृष शोक स्नेह, घणा, रोष ।

जातिवाचक संज्ञाओं में समूहवाचक संज्ञाएँ भी परिगणित होती हैं । समूहवाचक संज्ञाएँ वस्तुओं के समूह को समग्रता के रूप में एकवचन या बहुवचन में व्यक्त करती हैं । जैसे परिवार, भीड़, झुण्ड ।

बहुवचन में वस्तुओं का समूह व्यक्त करने वाले समूहवाचक संज्ञा शब्द प्रायः लोकात् 'जन' 'गण' 'मण्डल' आचली, 'हृद' आदि जैसे जातिवाचक शब्दों के साथ व्यवहृत होते हैं । ये शब्द जातिवाचक संज्ञाओं तथा संज्ञाओं के अर्थ में प्रयुक्त होने वाले विशेषणों के साथ जुड़कर इस्तमाल किये जाते हैं । संज्ञाओं तथा विशेषणों के साथ जुड़कर उक्त संज्ञाएँ अपना अर्थ खो देती हैं तथा बहुवचन में वस्तुओं के समूह का ही बोध कराती हैं । बहुधा ये शब्द अपने पूर्व अर्थों के साथ मिलकर समग्र शब्द का नया अर्थ ध्वनित किया करते हैं । जैसे भक्तद्वारा लोभ, भक्तलोक, भक्तजन, विद्यार्थीगण, भक्तमण्डल आचली, आदि ।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ किसी एक ही वस्तु या व्यक्ति का बोध कराती हैं । ये जातिवाचक संज्ञाओं की तुलना में कम हैं । इन संज्ञाओं में परिगणित होते हैं—

(क) व्यक्तियों के निज नाम । जैसे राम, गोपाल, धर्मचन्द्र ।

(ख) दिशाओं के नाम । जैसे उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम ।

(ग) देशों के नाम । जैसे भारत, हम फ़ारस ।

(घ) जातियों के नाम । जैसे भारतीय, रूसी, अंग्रेज़ ।

(ङ) समुद्रों के नाम । जैसे काला सागर, प्रशांत महासागर ।

(च) नदियों के नाम । जैसे गंगा, सिन्धु, बोर्ना ।

(छ) पर्वतों के नाम । जैसे हिमालय विष्णुचल ।

(ज) नगरों, चौकों तथा सड़कों के नाम । जैसे दिल्ली, चाँदनी चौक, जनपथ ।

(झ) पुस्तकों तथा समाचारपत्रों के नाम । जैसे 'गान्धर्व', 'कुरुक्षेत्र', 'साप्ताहिक धर्मपत्र' ।

(ञ) एतिहासिक घटनाओं के नाम । जैसे अक्तूबर क्रान्ति, मई दिवस, स्वतंत्रता दिवस ।

(ट) दिनो तथा मासा के नाम । जस सामवार चैत्र जनवरी ।

(ठ) उत्सवा के नाम । जैस दीपावली रक्षावधन ।

जातिवाचक तथा व्यक्तिवाचक दोनो ही सनाआ म प्राणावाचक और अप्राणीवाचक वस्तुआ का समावग हाना है । प्राणावाचक तथा अप्राणीवाचक सजा शब्दा की व्याकरण विषयक भिन्नता प्रधान कम व काय म सामाय कारक के रूप म प्रयुक्त हात समय प्रकट हाती है ।

अप्राणावाचक सना शब्द विगेषण के साथ प्रयुक्त हान हुए भी प्रधान कम व काय म सामाय कारक व रूप म प्रयुक्त हो सकते हैं । जैस मैं यह किताब पढता हूँ । जबकि प्राणीवाचक सना शब्द विगेषण व जिना प्रयुक्त होते हुए भी प्रधान कम व काय म सामाय कारक व रूप म प्राय प्रयुक्त नहा हान । जसे मैं लडका को दखता हूँ ।

हिंदा म सजा शब्द इस बात के अनुसार कि व ऐसी वस्तुआ की निर्दिष्ट करते हैं जो गिनी जा सकनी हैं या नही गिनी जा सकती हैं गणनीय तथा अगणनीय सजा शब्दो मे विभाजित होते हैं । गणनीय सजा शब्दो म मूत सजाएँ आ जाती है । व गिनी जानी हैं और गणनावाचक सख्याआ के साथ प्रयुक्त होती हैं । उनका व्याकरण विषयक विगेषता यह है कि उनके वचन बदलत है । जसे मेज-मेजें । लडका-लडके । पाँच लडकिया । अगणनीय सनाआ मे पदायवाचक तथा भाववाचक सजा शब्द गिने जान हैं ।

पदायवाचक सना शब्द प्रकट करने हैं पदायो की । जैसे गीहा पंजर, एकटा चना ।

भाववाचक सना गान यस्त करत हैं—

(क) भावना । जैस प्रेम मित्रता शत्रुता ।

(ख) गुण । जैसे दबता दुबलना ।

(ग) ध्यापार । जस दहीकरण पडाई ।

(घ) अवस्था । जस लडकपन जवानी बुढापा ।

(ङ) अव्य अमून भावना । जस मिठास कडवापन रोष क्षाम, व्यग्य ।

व्याकरण की दष्टि से पद यवाचक तथा भाववाचक सना शब्दो की विगपना यह है कि उनका एकवचन होता है और व गणनावाचक सख्याआ के साथ प्रयुक्त नही होत हैं । बहुवचन म कुछ पदयवाचक तथा भाववाचक सजा शब्दा का प्रयोग उनक स्पष्टाकरण पर निभर करता है । पदायवाचक सजा शब्द बहुवचन म प्रयुक्त हान हैं जब व उम पदय व विभिन्न प्रकार का अभि

व्यक्त करत हैं। जैसे तज शरावें भीठी शरावें। भाववाचक सज्ञा शब्द भी तब बहुवचन में प्रयुक्त होने हैं जब उनकी अमृतता के सूचक अर्थ कम हो जाने हैं। जैसे स्वतंत्रता—जनवादी स्वतंत्रताएँ शक्ति—शक्ति की शक्तियाँ, जननत्र—जनना के जननत्र गहराई—समुद्र की गहराईया।

लिंग

आधुनिक हिंदी में लिंग सनाआ के वस्तु-सम्बन्धी अर्थ की अभिव्यक्ति का आधारभूत साधन होना है और मना की खास विवेकता है। यदि विकारी विवेकण क्रमवाचक सख्या कृदन्त और काल के रूप में अवयव के अनुसार लिंग ग्रहण कर लेते हैं तो सना का लिंग सज्ञा में निहित लक्षणिक गुण होता है। हिन्दी भाषा की सज्ञाओं के दो लिंग होते हैं, एक पुल्लिंग और दूसरा स्त्रीलिंग। जैसे (१) पुल्लिंग—बाप भाई बेटा घर पेड़। (२) स्त्रीलिंग—माता, बहन बेटा, पुस्तक, छत।

हिन्दी भाषा में लिंगों की अभिव्यक्ति प्रधानतया वाक्या में होती है—

- (क) उन विकारी विवेकणों और स्वामित्ववाचक सवनामों के रूपों से जो मना में अवयव करते हैं। जैसे (१) यह बड़ा बाग है। (२) वह मेरा घर है। उक्त दो वाक्यों में 'बड़ा' विवेकण और मेरा सम्बन्धवाचक सवनाम के रूप निर्देश करते हैं कि सज्ञाएँ 'बाग' और 'घर' पुल्लिंगवाची हैं। (१) यहाँ एक बड़ी नदी है। (२) यह मेरी किताब है। इन दो वाक्यों में 'बड़ा' विवेकण और मेरा स्वामित्ववाचक सवनाम के रूप में ही पता चलता है कि मनाएँ 'नदी' और 'किताब' स्त्रीलिंगवाची हैं।
- (ख) मिया के रूप में। जैसे (१) पत्नी उठता है। (२) नदी बहती है। इन दो वाक्यों में पत्नी' मना गल्ल पुल्लिंग है और नदी सना शब्द स्त्रीलिंग है। यह उठना और बहना' क्रियाओं वाले विवेकणों में समाविष्ट मामाया वर्तमानकालिक कृदन्तों से सूचित होता है।
- (ग) सनाओं के बहुवचन रूपों से। जैसे (१) हम कमरे में दो गज हैं। (२) उस कमरे में दो खिड़कियाँ हैं। इन दो वाक्यों में 'दरवाजा' सना शब्द पुल्लिंग है और 'खिड़की' सना शब्द स्त्रीलिंग है क्योंकि ए असाधारण कालिक वाले प्रत्यय बहुवचन में मिला पुल्लिंगवाची सनाओं के अन्त में लगा करते हैं। इसी

तर्ह 'इया असामाय कागक वाले प्रत्यय बहुवचन मे केवल इकारात स्त्रीलिंग सनाओ क अत म लगा करत है ।

इसके अलावा हिंदी भाषा म सना शब्द का लिंग उनके अपन अर्थ से या पुल्लिंग और स्त्रीलिंगवाची सनाओ के प्रत्यया से निर्धारित किया जा सकता है । अर्थ के अनुसार सना शब्द के लिंग का भेद कब- पुल्लिंगवाची और स्त्रीलिंगवाची मनुष्य प्राणिया और मनुष्यतर प्राणिया म होता है । जैसे (पुल्लिंग) राजेन्द्र गोपाल पुरुष बल आदि । (स्त्रीलिंग) मगा गाय आदि ।

इस प्रकार हिंदी म मनुष्य प्राणीवाची और मनुष्यतर प्राणीवाची सनाओ म लिंगभेद मनुष्य या पशु के लिंग के अनुसार होता है—यदि इन सनाओ का लिंग उनके अपन अर्थ विषयक भाव से सम्बन्धित होता है ।

अप्राणीवाची सना शब्द म ऐसा अर्थ विषयक विशेषताएँ बिल्कुल नहीं हैं जिनमे लिंग निर्दिष्ट हो सके । जयात इस किस्म क सना शब्दो क लिंग शब्द के अर्थ पर निर्भर नहीं होता है । जैसे मज सना शब्द स्त्रीलिंग है 'पूतराज' सना शब्द पुल्लिंग है । कुर्मी सना शब्द स्त्रीलिंग है और 'मोती' सना शब्द पुल्लिंग है ।

सना शब्दों के लिंगों का वर्गीकरण

(क) सना शब्दों के अपने अर्थों क अनुसार लिंग क निर्धारण म निम्न नियमितताएँ होती हैं—

य शब्द पुल्लिंगवाची होता है—

(१) पुरुषवाची नाम । जैसे पति पुरुष आदमी आका वटा आदि ।

(२) कई नर जानवरों के नाम । जैसे भाला, माछ, घोडा, बकरा आदि ।

(३) धातुआ मनिजों और मणि प्रस्तरों क नाम । जैसे साना, लोहा, जाम्बा कीयला हारा लाल आदि । इसम अपवाद है—चादी ।

(४) अनेक द्रव या तरल पदार्थों के नाम । जैसे तेल दूध पाना, गवैन मद्य आदि ।

(५) अनेक वृक्षा के नाम । जैसे आमवान दलदार चीड़, पीपल आम आदि । इसम अपवाद है—इमली ।

(६) अनेक फसलों क नाम । जैसे गहूँ धान मटर मक्का, जौ, बाजरा चावल आदि । इसम अपवाद है—ज्वार और अनेक दालें ।

(७) आकाश के व्याप्ति पिण्डों के नाम । जैसे सूर्य चांद, भगल बुध, गनि, सोम आदि ।

(८) पर्वत और देश के नाम । जैसे हिमालय विंध्य, भारत, पाकिस्तान, चीन आदि ।

(९) महीना और दिनों के भारतीय नाम । जैसे चत्र वैशाख, ज्येष्ठ, रविवार सोमवार आदि ।

(१०) शरीर के अनेक अंगों के नाम । जैसे सिर, गाल, कान, हाठ, मुंह हाथ पैर आदि ।

(११) पहनने की अनेक वस्तुओं के नाम । जैसे जूता कुल्हा, घाघरा जांघिया पाजामा, कोट आदि ।

(१२) भाववाचक सज्ञाओं वाले शब्द । जैसे प्रेम क्रोध आनंद, दुःख आदि ।

इस प्रकार के शब्द स्त्रीलिंगवाची हूँ—

(१) नारीवाची नाम । जम स्त्री महिला, बहन भाभी बटी इत्यादि ।

(२) अनेक भादा जानवरो के नाम । जैसे गाय, भेड़, भैंस, बकरी, बिल्ली आदि ।

(३) नदिया के नाम । जैसे गंगा, यमुना कावेरी, कृष्णा इरावती । इसमें अपवाद है एक शब्द जिनके साथ 'न' शब्द का प्रयोग होता है । जैसे मिथु ब्रह्मपुत्र गोण आदि ।

(४) अनेक मसाला और भाज्य पदार्थों के नाम । जैसे लौंग कस्तूरी, मिर्च, राई, खिचड़ी, धनी सौर इत्यादि ।

(५) शरीर के अनेक अंगों के नाम । जैसे आँख नाक कान, टाँग, ठाड़ी, गदन छाती अँगुला, पिंडला नाडी इत्यादि ।

(६) पहनने के अनेक वस्तुओं के नाम । जैसे टांरा, कमीज धोती चान्दर, पगड़ी, साड़ी, मेमला पतलून, बनियान, चुरास इत्यादि ।

(७) अनेक रोगों के नाम । जैसे खाज दाढ़, चक्क, खाँसी, गुह्य आदि ।

(८) भाषाओं के नाम । जैसे हिंदी, उर्दू, मराठी अंग्रेजी, फारसी अरबी इत्यादि ।

(९) व्याकरणानुसृत शब्दों के अनुसार सज्ञा शब्दों का लिंगभेद निम्न लिखित प्रकार का होता है—

य पुल्लिङ्गवाची होते हैं—

(१) सत्र मना गन् जा पुरुषवाचक प्रत्यया द्वारा उक्त होते हैं। जम कमाऊ कता कलाकार गवैया, तराक दूतानवाग लडावू, लुटेग, लाहार सहायक इत्यादि।

(२) जा विभक्ति चिह्न रहित मना शब्द अथवा आनागत (मस्कृत, फारसी और अरबी भाषाओं के तत्सम शब्दों को छोड़कर) सना शब्द हो। जैसे घर पड़ पड़ा कपड़ा घाघरा आदि।

(३) जिन सना शब्दों के अन्त में जी आता हो। जम कुर्सी धुआ इत्यादि।

(४) भाववाचक सना शब्द जिनके अन्त में आन आव व पन प्रत्यय लगते हैं। जैसे लम्बान चढाव बनाव महव बचपन आदि।

(५) अनन्त सना शब्द जिनके अन्त में उ ऊ और 'व' आते हैं। जैसे मधु आलू कचाल भाव आदि।

(६) तेम भाववाची सना शब्द जिनके अन्त में ना प्रत्यय आता है और जा क्रिया के मामाद्य रूप होते हुए मशा शब्दों के अन्त में प्रयुक्त होते हैं। जैसे करता गाना लिखना पढ़ना बोलना हमना इत्यादि।

(७) एम सना शब्द जिनके अन्त में न न य प्रत्यय आते हैं। जैसे गमन गस्त्र वस्त्र अस्त्र राज्य नृत्य भृत्य मृत्य इत्यादि।

(८) सामाजिक और राजनीतिक प्रकार के ऐसे सना शब्द जिनके अन्त में वाद शब्द आता होता है। जैसे—समाजवाद साम्यवाद पूँजीवाद साम्राज्यवाद इत्यादि।

(९) फारसी भाषा से लिये गए ऐसे शब्द जिनके अन्त में हिन्नी में 'आ' आता है। जैसे—पदा गुस्मा बिस्मा रास्ता बरमा आदि।

निम्न प्रकार के शब्द स्त्रालिङ्गवाची होते हैं—

(१) जनक मना शब्द जिनके अन्त में ह्रस्व इ होता है (और जो पुरुष के अर्थमूचक नहीं होते हैं)। जैसे रात्रि हानि बुद्धि मति गति प्रति (बहुवचन में प्रतियाँ) इत्यादि।

(२) भाववाचक मना शब्द जो ई या आई प्रत्यया द्वारा बनते हैं। जैसे घुराई मनाई चलाई लम्बाई पनाई लिखाई इत्यादि।

(३) अधिकतर ईश्वरान्त मजा शब्द। जम कुर्सी घड़ी स्याही, मिट्टी मंग चिट्ठा रोनी टोपी इत्यादि। इसमें अपवाद हैं—पानी न्ही, मोती, घी।

(४) आकारान्त संस्कृत सत्त्वम शब्द (पुरुष अथवाचक सज्ञा शब्दों को छोड़कर) । जैसे कृपा, भाषा, इच्छा, मभा, आज्ञा, सेना, निंदा, चिन्तिता आदि ।

(५) भाववाचक सज्ञा शब्द जिनके अन्त में ता आता है । जैसे मित्रता, सुंदरता, स्वतंत्रता, दासता इत्यादि ।

(६) भाववाचक सज्ञा शब्द जिनके अन्त में ट वट और हट आता है । जैसे आहट रकावट, सजावट लिखावट, बुलाहट धबराहट इत्यादि ।

(७) हिंदी के अनेक सना शब्द जिनके अन्त में त आता है । जैसे रात, कात, बात, जात, छत, भीत, रीत पत, रत इत्यादि ।

(८) अग्नी से लिये गए अनेक ऐसे सना शब्द जिनके अन्त में त आना है । जैसे दावत, गुलत, तबियत, इजत हुकूमत इत्यादि ।

(९) अनेक सज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'स' आता है । जैसे मिठास प्यास, साम, बास इत्यादि ।

(१०) क्रियाओं से बने सज्ञा शब्द जिनके अन्त में 'न' आता है । जैसे रहन, जलन सूजन उलझन इत्यादि ।

(११) कुछ सना शब्द जिनके अन्त में दीर्घ 'ऊ' आता है । जैसे बाहू, लू इत्यादि ।

(१२) इषा प्रपयान् शब्द । जैसे छटिया, डिविया, इत्यादि ।

(१३) क्रिया की धातुएँ जो सना शब्द की तरह प्रयुक्त होती हैं । जैसे मार, जीत हार, पहचान, समझ आदि ।

(१४) अनेक सना शब्द जिनके अन्त में 'ख' आता है । जैसे, ईख, भूख, राख काख, कोख, साख इत्यादि ।

(१५) फारसी में लिये गए सना शब्द जिनके अन्त में 'इश' आना है । जैसे बारिश, साजिश, परिवारिश इत्यादि ।

(१६) अरबी से लिये गए आकारान्त शब्द । जैसे हवा, दवा, सबा, दुआ इत्यादि ।

(१७) अरबी और फारसी में आये हुए शब्द जिनके अन्त में 'ह' आता है । जैसे गुवह, तरह, राह आह सलाह आदि ।

प्राणीवाचक सज्ञा शब्दों में लिंग-भेद

(क) मनुष्यवाचा पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग का भेद अनिवार्य होना है

(१) भिन्न अथ एव तात्पर्य व अलग अलग शब्दों द्वारा । जैसे

माँ पाप, माता पिता, बहन भाई, स्त्री पुरुष, औरत मद
बधू बर इत्यादि ।

- (२) एक शब्द की रचना के विभिन्न रूपा से । जैसे वृद्धा
मुत-मुता महापाय महापाया, पुत्र-पुत्री लडका-लडकी, चाचा
चाची मामा मामी बालक-बालिका, पाठक-पाठिका
इत्यादि ।

(ख) जिन सजा-बायदा मर्यादा के पेशा, धंधा, जाति सामाजिक और
सांख्यिक प्रविष्टा के पद या स्थिति का पता चलता है, उनमें
लिंग भेद की निम्न से अभिव्यक्ति होती है

- (१) पुल्लिंग वाले सजा-पादा के साथ स्त्रीवाची शब्दों के
संयोजन से । जैसे कवि—स्त्री कवि या महिला कवि ।
डाक्टर—स्त्री डाक्टर, महिला डाक्टर ।
मजदूर—औरत मजदूर, महिला मजदूर ।

- (२) शब्द रचना के विभिन्न रूपा से । जैसे जुलाहा (पुं०)
जुहिन (स्त्री०) घोड़ी धोत्रिन, छात्र छात्रा विद्यार्थी
विद्यार्थिनी अभिनेता-अभिनेत्री कवि कवयित्री स्तवक-
स्तविका अध्यापक अध्यापिका पण्डा पण्डाइन, नीरर
नीरराना, अध्यक्ष-अध्यक्षा, सदस्य सदस्या इत्यादि ।

शब्द रचना के उक्त रूप अनेक सजा-पादा के न केवल एक ही पेशे या
जाति के अन्तर्गत लिंगभेद को प्रकट करते हैं बल्कि उनके पारिवारिक सम्बन्ध
को भी बताते हैं । जैसे तेला-तलिन (तली की पत्नी), माली मालिन (माली
की पत्नी), नाई नाइन (नाई की पत्नी), ठाकुर ठाकुरानी (ठाकुर की पत्नी)
सेठ-सेठाना (सेठ की पत्नी), जेठ जेठानी (जेठ की पत्नी) ।

पशुप्रां और पक्षियों के लिंगभेद

यह लिंगभेद शब्दों अथवा शब्द रचना से इस प्रकार अभिव्यक्त
होता है :

(क) अलग अलग शब्दों से । जैसे गाय—स्त्रीलिंग और सांड—
पुल्लिंग ।

(ख) शब्द रचना के विभिन्न रूपा से । जैसे बंदर (पुं०)—बंदरी
(स्त्री०), घोड़ा (पुं०)—घोड़ी (स्त्री०), बकरा (पुं०)—बकरी (स्त्री०), भेड़
(पुं०)—भेड़ा (पुं०) भम (स्त्री०)—भमा (पुं०) बाघ (पुं०)—बाघिन

(स्त्री०), ऊट (पु०)—ऊटनी (स्त्री०), रीछ (पु०)—रीछनी (स्त्री०), मुर्गा (पु०)—मुर्गी (स्त्री०), मोर (पु०)—मोरनी (स्त्री०) ।

पशुओ, पक्षियों और वृक्षों के अधिकतर सना शब्दों में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए जुड़वा नाम नहीं हैं। उनमें से कोई केवल पुल्लिंगवाची होते हैं और दूसरे केवल स्त्रीलिंगवाची होते हैं। जैसे पुल्लिंगवाची निम्न ये शब्द हैं भेड़िया, चीता, भालू, पक्षी, उल्लू, कौवा, खटमल आदि। स्त्रीलिंगवाची निम्न शब्द हैं लोमड़ी, चिड़िया, चील, कोयल, मक्खी, नितली आदि।

उन सना शब्दों का लिंगभेद प्रायः सम्बन्धित सना शब्दों के साथ नर और मादा जैसे शब्दों के संयोजन से सहज ही अभिव्यक्त होता है। जैसे नर भेड़िया—मादा भेड़िया।

सना शब्दों के लिंग में अनियमितता

हिंदी भाषा में कई कारणों से सना शब्दों के लिंग में अनियमितता दृष्टिगोचर होती है। कुछ सना शब्दों के लिंग प्रायः अर्थ पर निर्भर नहीं करते और जनक सना शब्द उभयलिंगी होते हैं। यथा वसर, वायु आदि।

किन्हीं सना शब्दों के लिंग में अनियमितताएँ पर्यायवाची सना शब्दों के प्रभाव के परिणाम हैं। जैसे स्त्रीलिंगवाची 'कलम' शब्द के प्रभाव से उमका पर्यायवाची शब्द 'कलम' का स्त्रीलिंग में भी प्रयोग होता है। स्त्रीलिंगवाची 'भाँति' शब्द और पुल्लिंगवाची 'प्रकार' शब्दों के प्रभाव से 'तज' शब्द कभी स्त्रीलिंग में और कभी पुल्लिंग में व्यवहृत होता है। स्त्रीलिंगवाची 'सड़क' शब्द और पुल्लिंगवाची 'मार्ग' शब्दों के प्रभाव से ही दोनों लिंगों में 'घाट' शब्द का प्रयोग होता है। पुल्लिंगवाची 'प्रकार' शब्द के अन्तर से स्त्रीलिंगवाची किस्म शब्द कभी कभी पुल्लिंग में भी बोला जाता है।

कभी लिंग में अनियमितताएँ किन्हीं सना शब्दों के भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयोग के कारण होती हैं। जैसे चन्द्रमा के अर्थ में 'चाँद' शब्द पुल्लिंग है, पर सिर के ऊपर के भाग के अर्थ में प्रयुक्त यही 'चाँद' शब्द स्त्रीलिंग में आता है। 'तारा' शब्द स्त्री के नाम के अर्थ में स्त्रीलिंग है पर तारा के अर्थ में पुल्लिंग है। लिंग में अनियमितताएँ इस कारण भी होती हैं कि कुछ पुरुष वाचक सना शब्दों में लिंगभेद नहीं होता है। ये सना शब्द प्रायः पुल्लिंगवाची होते हैं, पर जब वे स्त्री का अर्थ देते हैं तब वे स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे पुल्लिंगवाची 'यतीम', 'गामिद', 'गिन्तव' आदि शब्द स्त्री के प्रसंग में बोले जाते हैं।

प्राय भाषाओं से गृहीत शब्दों का लिंगभेद

हिन्दी भाषा में अथ भाषाया स अनगिनत शब्द आए हैं। विशेषकर बहुत शब्द संस्कृत से तत्सम या तदभव रूप में आए हैं। इसी तरह फारसी तथा अंग्रेजी से भी पर्याप्त संख्या में शब्द लिये गए हैं। फारसी के जरिये हिन्दी में अरबी शब्द भी आए।

पुल्लिंगवाची और स्त्रीलिंगवाची संस्कृत शब्दों का लिंग प्रायः संस्कृत के लिंग के अनुसार ही बना रहा। नीचे हम इस स्पष्ट करने के लिए तालिका देते हैं

शब्द	संस्कृत में लिंग	हिन्दी में लिंग
नियम	पुल्लिंग	पुल्लिंग
लण्ड	पुल्लिंग	पुल्लिंग
भाषा	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
इच्छा	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग
रीति	स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग

संस्कृत के नपुंसक लिंगवाचा शब्द हिन्दी में प्रायः पुल्लिंगवाचा हो गए हैं। जैसे

शब्द	संस्कृत में लिंग	हिन्दी में लिंग
दासत्व	नपुंसक लिंग	पुल्लिंग
रत्न	"	"
साहित्य	"	"
नरक	"	"

किंतु संस्कृत के कुछ सना शब्द विभिन्न कारणों से हिन्दी में अपना संस्कृत भाषानुसार लिंग नहीं रख सके। जैसे

शब्द	संस्कृत में लिंग	हिन्दी में लिंग
अग्नि	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
आत्मा	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
आयु	नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग
जय	नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग
देवता	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
देह	पुल्लिंग और नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग
पुस्तक	नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग

वस्तु	नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग
व्यक्ति	स्त्रीलिंग	पुंलिंग
वपय	नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग

क्योंकि फारसी में लिंगभेद नहीं होता है अतः फारसी शब्द हिंदी के लिंगों में से कोई एक लिंग ग्रहण कर लेता है। प्रायः हिंदी भाषा में व अपने पर्यायवाची शब्द के सदृश लिंग ग्रहण कर लेते हैं। जैसे 'शव' शब्द रात शब्द के अनुकरण में स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होने लगा। इसी तरह निम्न शब्द हिंदी में अपने हिंदी पर्यायवाचियों के अनुसार लिंग में प्रयुक्त होने लगे। जैसे 'याद'—'धारणा' के कारण धर्म—'लज्जा' के कारण 'जमीन'—'भूमि' के कारण, और 'जबान'—'जिह्वा' के कारण स्त्रीलिंग में बोले जाने लगे। इसी तरह 'व्यय' शब्द—'व्यय' के कारण पुंलिंग में हो गया है। अरबी शब्द प्रायः हिंदी में अपना लिंग नहीं बदलते हैं। जैसे हिदायत हिफाजत हालत, हुक्मत आदि स्त्रीलिंगवाची हैं। शक फक आदि पुंलिंगवाची हैं।

हिंदी में पर्यायवाची सज्ञा शब्दों के प्रभाव के कारण अरबी शब्दों में भी लिंग सम्बन्धी अनियमितताएँ कभी कभी होती हैं। जैसे 'कलम' शब्द अरबी में पुंलिंगवाची होता है, लेकिन हिंदी में उसके पर्यायवाची 'लेखनी' शब्द के प्रभाव से स्त्रीलिंग में भी प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार स्त्रीलिंगवाची 'किस्म' शब्द हिंदी में पुंलिंगवाची प्रकार शब्द से प्रभावित होकर पुंलिंग में भी व्यवहृत होता है।

अंग्रेजी भाषा में भी शब्दों के रूप में लिंगभेद प्रकट नहीं होता है। इसलिए अंग्रेजी शब्द हिंदी में या तो सम्बन्धित हिंदी पर्यायवाची शब्द का लिंग ग्रहण कर लेते हैं या फिर अपने रूप के अनुसार लिंग स्वीकार कर लेते हैं। जैसे निम्न अंग्रेजी शब्दों ने हिंदी में पर्यायवाची शब्दों के लिंग ग्रहण कर लिए हैं

हिंदी शब्द	अंग्रेजी शब्द
जूता—पुंलिंगवाची	बूट—पुंलिंगवाची
दीया—	लम्प—
अक—	नम्बर—
दक्षिणा—स्त्रीलिंगवाची	फीस—स्त्रीलिंगवाची
सभा—	मीटिंग—

जाकारात अंग्रेजी गद्द हिंदी में पुर्लिगवाची हा गए है। जैसे सोडा, डेल्टा कमरा आदि। अंग्रेजी सना शब्द जो हिंदी में ईकारान्त हो गए हैं वे स्त्रालिग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे बम्पनी कमरा चिमनी म्युनिसिपलिटी आदि।

अनेक अंग्रेजी सना शब्द हिंदी में या तो पुर्लिगवाची हा गए हैं (जैसे टिकट, नोट आदि) या स्त्रीलिगवाची हो गए हैं (जैसे काग्रेस कौंसिल, रिपोर्ट, अपील आदि)।

कई अंग्रेजी सना शब्द हिंदी में दोनों लिगा में प्रयुक्त होते हैं। जैसे फिल्म कलाम टूनामेट आदि।

वचन तथा कारक

हिंदी में रूप परिवर्तन की दृष्टि से सना की विशेषता वचन और कारक में होती है। वचन और कारक के अनुसार सनाओं का रूप परिवर्तन उनका प्रमुख पदवचना विषयक स्वरूप चिह्न होता है।

नीचे हम यह देखेंगे कि सनाओं का रूप परिवर्तन वचन के अनुसार किस तरह होता है। सनाओं के बहुवचन का निर्माण अमुक सना के एक वचन वाले लिग और जत्य प्रत्यया के अनुसार होता है किंतु हिन्दा में सभी सनाओं का वचन परिवर्तन नहीं होता है। कुछ ऐसी सनाएँ हैं जो केवल एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं। इनमें निम्नलिखित हैं

१ अधिकांश पदार्थवाचक सना शब्द। जैसे चादी भोना चाय दूध आटा आदि।

२ भाववाचक सना गद्द जो गुण विशेषता अवस्था व्यापार आदि धर्मों का निर्देश करते हैं। जैसे लम्बाई चौड़ाई मिठास दृढ़ता जदानी, पगई आदि।

हिंदी में ऐसी सनाएँ भी हैं जो भाववाचक अथ में केवल एकवचन में प्रयुक्त होती हैं परंतु मूल रूपसूचक अथ में या गुण की अभिव्यक्ति में उनका बहुवचन भी प्रयुक्त होता है। जैसे

कविता

कविताएँ

बोमारो

(छूत की) बोमारिया

३ अधिकांश व्यक्तिवाचक सनाएँ। जैसे दिल्ली ताजमहल कृष्ण आदि।

४ कुछ सनाएँ जब समूहवाचक अथ में प्रयुक्त होती हैं (रुपया माल,

माधान, ताश आदि) । जैसे (१) कई लाख रुपया इस निमाण काय मे खच हो चुका है । (२) भारत मे सोवियत सघ से कई तरह का माल आता है ।

दूसरी ओर कुछ सभाओ का केवल एकवचन होता है । उनमे निम्न लिखित का समावेश होता है

१ समूह विषयक वे सजाएँ जो लोग गण, जन, बन्द आदि शब्दो के साथ संयोजन से बनती है । जैसे किसान लोग, छात्रगण, स्त्रीजन, बालकबन्द ।

२ प्राण, दशन, होश तथा इस प्रकार की अथ सजाएँ (यद्यपि अथ के अनुसार उनका एकवचन मे प्रयोग होना चाहिए) । जैसे (१) उसने मेरे प्राण बचाए । (२) बहुत दिनों से आपके दशन नहीं हुए । (३) उसके होश उड़ गए ।

३ कुछ युग्म शब्द समुदाय, जब वे एक ही वस्तुओं के समूह का संकेत करते हैं । इस किस्म के शब्द समुदायो का प्रथम भाग एकवचन मे तथा द्वितीय भाग बहुवचन मे प्रयुक्त होता है । जैसे गाय भस, भेड़ बकरिया ।

४ ऐसे सना शब्द जो समय की अवधि या तथा ऋतुओं का निर्देश करते हैं । जैसे छुट्टिया, गर्मिया, गर्मियो मे जाडा मे ।

उपयुक्त प्रकार के सना शब्द एकवचन मे भी प्रयुक्त हो सकते हैं ।

जैसे छुट्टी, गर्मी, जाडा ।

हिंदी मे सनाओ का बहुवचन निम्नलिखित नियमो के अनुसार बनता

है

(क) आकारान्त और आकारान्त को छोटेकर सब प्रकार का पुल्लिङ्ग यजनान्त व स्वरान्त सनाओ का बहुवचन मे रूप अपरिवर्तित रहता है । जैसे

एकवचन	बहुवचन
बाप	बाप
घर	घर
भाई	भाई
पति	पति
मालू	मालू
प्रस्थाव	प्रस्ताव

(ख) आकारान्त पुल्लिङ्ग सनाआ म बहुवचन म आ के स्थान पर ऐ हो जाता है। जस

एकवचन	बहुवचन
बेडा	बेदे
कारखाना	कारखाने
मतका	गनके
मेला	मेले

सस्कृत फारसी और जरबी भाषाओं स हिंदी म जाए पुल्लिङ्ग आकारान्त शब्द तथा सम्बन्धमूचक आकारान्त शब्द उक्त नियम क अपवाद हैं। जस

एकवचन	बहुवचन
आका	आका
खुदा	खुदा
बरिषा	बरिषा
नेता	नेता
राजा	राजा
पिता	पिता
चाचा	चाचा
माया	माया
दादा	दादा

पूर्वोक्त प्रकार की सनाआ का वचन प्रसंग म ही पता चलता है।

(ग) आकारान्त पुल्लिङ्ग बाटे सना शब्द म आ के स्थान पर ऐ हो जाता है। जस

एकवचन	बहुवचन
कुआ	कुए
घुआ	घुए
रोआ	रोए

(घ) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बाट मना गट म इ क साथ या जुट जाता है। जस

एकवचन	बहुवचन
रोति	रोतियाँ

तिथि

तियिया

यवित

यवितयाँ

- (इ) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग वाले सना गदा म ई के साथ 'या' जुड़ जाता है। या' जुड़ते वकन दीध ई लघु हो जाता है। जैसे

एकवचन

बहुवचन

बेटो

बेटिया

सड़की

सड़किया

नदी

नदिया

खिड़की

खिड़किया

- (घ) 'इया' जिन स्त्रीलिङ्ग वाले सना-गदा के अन्त म हाता है उनका अन्तिम आ' बहुवचन म अनुनामिक हो जाता है। जैसे

एकवचन

बहुवचन

चिड़िया

चिड़ियाँ

बुड़िया

बुड़ियाँ

पुड़िया

पुड़ियाँ

दिड़िया

दिड़ियाँ

- (ङ) 'ई, ई और 'इया' जिन स्त्रीलिङ्ग गदा के अन्त म आता है उन्हें छोड़कर अय मके व्यजनान्त व स्वरान्त सना गदा म 'ऐ' या 'यें' लग जाता है। ऊँचागत स्त्रीलिङ्ग सना गदा के बहुवचन मे दीध 'ऊ' लघु उ हो जाता है। जैसे

एकवचन

बहुवचन

माता

माताएँ

यात्रा

यात्राएँ

सेना

सेनाएँ

बस्तु

बस्तुएँ

बहन

बहनें

पुस्तक

पुस्तकें

बड़

बड़एँ

लू

लूएँ

जोर

जोरएँ

हिंदी भाषा म मनाएँ अपने लिङ्ग और प्रत्ययान्त के अनुसार वाक्य म अपने रूप बदलती हैं।

कारक नामिक शब्दों का वह रूप होता है जो सज्ञा समुदाय में तथा वाक्य में अर्थ शब्दों के प्रति नामिक शब्दों के सम्बन्ध व्यक्त करता है। वाक्य के किसी अंग के साथ में नामिक शब्दों का प्रयोग मदा किसी न किसी कारक के रूप में होता है।

हमारे मतानुसार हिन्दी के सज्ञा शब्दों के तीन कारक होते हैं—सामान्य कारक (डायरेक्ट केस) असामान्य कारक (इन्डायरेक्ट केस) तथा सम्बोधन कारक।

सामान्य कारक के विशेष प्रत्ययात्त नहीं होते हैं जो वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ सज्ञा शब्दों का सम्बन्ध व्यक्त करता है। ये सम्बन्ध वाक्य में केवल सज्ञा शब्दों के स्थान से पता चलते हैं।

हिन्दी में सामान्य कारक असामान्य कारक के विपरीत होता है। असामान्य कारक कम विशेषताबोधक तथा गुणनिर्देशक विषयक सम्बन्धों को व्यक्त करता होता है।

हिन्दी में असामान्य कारक प्रायः स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त नहीं होता है। वह लगभग सदा किसी न किसी विभक्ति चिह्न के साथ व्यवहृत होता है जो असामान्य कारक के व्यापक अर्थ को सीमित तथा मूल बना देता है। जन्म लड़के का लड़के का लड़के पर आदि। परन्तु किसी न किसी विभक्ति चिह्न के साथ सज्ञा का प्रयोग कारक रूप नहीं है क्योंकि विभक्ति चिह्न कारक प्रत्यय नहीं हैं वे स्वतन्त्र रूप से वाक्य में अर्थ शब्दों के साथ मना के सम्बन्धों का निर्दिष्ट नहीं करते हैं। ये सम्बन्ध असामान्य कारक के विभक्ति चिह्न के मयो जन्म से ही निर्दिष्ट होते हैं।

हिन्दी में ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जिनमें असामान्य कारक विभक्ति चिह्न के बिना प्रयुक्त होते हैं। ऐसा होता है कि कुछ विशेषताबोधक शब्द समुदायों में क्रियानामिक समुदायों में गतिवाचक क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होने समय और असामान्य कारक में सज्ञाओं का दूसरे शब्दों में (क्रियाविशेषणा और विभक्ति चिह्नों में) सम्मेलन होने समय। जैसे इस समय पिछले साल भूखा भरना अपनी आँखों देखना नाना चने चबवाना अपने घरा जाना सबरे दिना दिन खुश हाथों के सामने।

सम्बोधन कारक सज्ञा का ऐसा रूप है जिसमें द्वान्वितीय का पुकारना या चाना सूचन होता है।

कारको का निर्माण

सामान्य कारक

सामान्य कारक एकवचन का रूप मना व उस रूप से मिलता है जो शब्दागम दिया गया होता है। सामान्य कारक बहुवचन के रूप सना व वही बहुवचन रूप हैं जिनका रूप विदग्गण किया जा चुका है।

असामान्य कारक

सना का असामान्य कारक एकवचन निम्नलिखित नियमों के अनुसार बनता है

(क) पुल्लिङ्ग आकारान्त और आकारान्त सनाओं में असामान्य कारक के एकवचन में आ तथा आ के स्थान पर ए' और ऐ' हुआ जाता है। अर्थात् एकवचन में इस प्रकार की सनाओं के सामान्य कारक रूप बहुवचन में सनाओं के सामान्य कारक रूप से मिलन-मुक्त हैं। जैसे

एकवचन

सामान्य कारक	असामान्य कारक
सड़का	सड़क
कमरा	कमरे
कुआँ	कुएँ

(ख) एकवचन वाले असामान्य कारक का रूप एकवचन वाले सामान्य कारक के रूप से निम्न प्रकार के सना-गणों में मिलता-जुगता होता है

(१) सारे स्त्रीलिङ्ग मना-गणों तथा पुल्लिङ्ग मना-शब्दों में (आकारान्त तथा आकारान्त पुल्लिङ्ग सना-गणों का छात्कर) जम

सामान्य कारक	असामान्य कारक
बहन	बहन
सड़की	सड़की
भाषा	भाषा
दुनिया	दुनिया
घर	घर

(२) आकारान्त पुल्लिङ्ग सना-गणों में जो हिन्दी में संस्कृत, फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी में आते हैं। वैसे।

सामान्य कारक

असामान्य कारक

राजा

राजा

छुदा

छुना

सोडा

सोडा

(३) पुल्लिंग मना गदा म जा पारिवारिक सम्बन्ध का सकेत करते हैं। जस

सामान्य कारक

असामान्य कारक

दादा

दादा

नाना

नाना

मामा

मामा

नौना लिंगा बाल सना-दादा का बहुवचन असामान्य कारक हव आ प्रत्यय द्वारा बनता है। यह प्रत्यय या ता सना व मूल रूप के साथ जुड़ जाता है या सना के बहुवचन सामान्य कारक रूप के प्रत्यय व स्थान पर आ जाता है। ईवारान्त पुल्लिंग मना गदा म बहुवचन असामान्य कारक म प्रयुक्त होने समय आ प्रत्यय से पहले य वष का आगम हो जाता है तथा अंतिम दीर्घ ई एषु व म बदल जाता है। आ' प्रत्यय म पूर्व पुल्लिंग सना गना का ऊ भा रूप उ म बदल जाता है। जस

एकवचन सामान्य कारक बहुवचन सामान्य कारक बहुवचन असामान्य कारक

अध्यापक

अध्यापक

अध्यापकों

भाई

भाई

भाइयों

विद्यार्थी

विद्यार्थी

विद्यार्थियों

पिता

पिता

पिताओं

बेटा

बेटा

बेटों

कुर्मी

कुए

कुओं

बहन

बहनें

बहनो

बेटी

बेटियाँ

बेटियों

बिटिया

बिटिया

बिटियों

बहु

बहुए

बहुओं

डाकू

डाकू

डाकूओं

सम्बोधन कारक

आवगमन पुल्लिंग मना गना का छोड़कर मारे मना-गना का एक

वचन सम्बोधन कारक रूप एकवचन सामान्य कारक रूप से मिलता जुलता है। जस

एकवचन

सामान्य कारक

माई

बेटी

बहन

दादा

राजा

सम्बोधन कारक

माई !

बेटी !

बहन !

दादा !

राजा !

आकारान्त पुलिग सना शब्द (उन सना गन्ना को छोड़कर जो पारि-
वारिक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं या दूसरी भाषाओं से आए हैं) एकवचन
सम्बोधन कारक में या तो अपरिवर्तित रहते हैं या जो क स्थान पर ए हो
जाता है। जस

एकवचन

सामान्य कारक

लडका

बेटा

बच्चा

सम्बोधन कारक

लडका ! लडके !

बेटा ! बेटे !

बच्चा ! बच्चे !

गाना लिया क सना गदा का बहुवचन सम्बोधन कारक 'ओ' प्रत्यय
द्वारा बनता है। ओ प्रत्यय या तो भीधे सना क भूत रूप में जुड़ जाता है या
बहुवचन सामान्य कारक क अत्यप्रत्यय क स्थान पर आ जाता है। बहुवचन
सम्बोधन कारक बनते समय इनकारात् सना गदा में ओ प्रत्यय से पहले 'य'
बण आ जाता है और दीध इ ह्रस्व इ' वन जाती है। ओ प्रत्यय से पहले
पुलिगवाचा सना गदा का अन्तिम ऊ' भी ह्रस्व हो जाता है। जैसे

सामान्य कारक

(एकवचन)

अध्यापक

विद्यार्थी

पिता

बेटा

सामान्य कारक

(बहुवचन)

अध्यापक

विद्यार्थी

पिता

बेटे

सम्बोधन कारक

(बहुवचन)

अध्यापको !

विद्यार्थियो !

पिताओ !

बेटो !

बहन	बहनें	बहनो !
बेटी	बेटियाँ	बेटियो !
डाकू	डाकू	डाकूओ !

सम्बोधन कारक म सज्ञा शब्दो स पढ़े प्राय य विस्मयादिबोधक शब्द प्रयुक्त हान हैं—ह जो ए अजी, र (पु०) अरे (पु०) री (स्त्री०), अरी (स्त्री०) । जसे 'जो लडक' । तू कहा जाता है ?

व्यक्तिवाचक सना शब्द प्राय अपने मूल सना रूप म ही प्रयुक्त होत है अपात उनक कोई कारक सम्बन्धी प्रत्यय नहीं होने हैं ।

सामान्य तथा असामान्य कारक मे सज्ञा शब्दो का प्रयोग

सामान्य कारक म मना गदा का प्रयोग होता है—

- (क) उद्देश्य के रूप म । जसे बहन पुस्तक पढ़ती है ।
- (ख) विभिन्न विधेया व नामिक जगा क रूप म । जैसे (१) मरा मित्र अध्यापन बन गया है । (२) भगत लोग उमे पीर मानत थे । (३) जिन लोगा न इमे राजनीतिक पतरेबाजी कहा था जब यह सहायता हिन्दुस्तान की सरकार को बाँटने के लिए द दी गई तो उनके मुह स धाल भी न फूटा ।
- (ग) प्रधान कम के रूप म । जसे वह उठी जीर दरवाजा अंदर स बंद किया ।
- (घ) परिमाण व भार निर्देशक के रूप म । जसे स्टेपन पर तीन टन गेहूँ पना है ।
- (ङ) समानाधिकरण के रूप मे । जैसे डाक्टर साहब अभी नही आय ।

असामान्य कारक म मना गदा का प्रयोग निश्चित विभक्ति चिह्न पर निर्भर करता है ।

असामान्य कारक का विभक्ति चिह्न सहित मना गद प्राय गुण निर्देशक का कार्य करता है तथा सम्प्रदान का अर्थ देता है । जसे—उसने मुझे मित्र का घर दिखाया ।

असामान्य कारक म की विभक्ति चिह्न सहित सना गद प्रधान कम या अप्रधान कम का कार्य करता है तथा कम या सम्प्रदान का अर्थ सूचित करता है । जैसे (प्रधान कम) उसने मोहिनी को बुलाकर पूछा क्या री जितने के बारे म तुझे कुछ मालूम है ?

अप्राणीवाचक सना शब्द प्राय प्रधान कम के रूप म सामान्य कारक

में प्रयुक्त होते हैं। जैसे दर तर अखबार वह नटि के सामने लिये रहा।

अप्राणीवाचक मना शब्द 'का' सहित असामाय कारक में प्रधान कम के रूप में सब प्रयुक्त होने हैं जब प्रधान कम पर जोर दिया जाता है या दुविधा को दूर करना होता है। जैसे (१) उसने अपने मुँह को छिपाया और धीमे धीमे सिमक उठा। (२) नदी के उस पार में घरों की दृष्टता हुई। जहाँ इस अंतिम वाक्य में 'को न हाना तो प्रधान कम का रूप घर होता और उससे यह भव्य हो सकता था कि 'गायन एक ही घर देखा जा रहा है' क्योंकि एकवचन और बहुवचन दाना में ही घर यह रूप होता है।

प्राणीवाचक मना शब्द प्रधान कम के रूप में प्रायः 'को' सहित असामाय कारक में प्रयुक्त होता है। जैसे जिन्ही जपन पुराने महपाठी सहाय को वह ध्यान में नहीं ला पाती थी (अप्रधान कम)। दैनिक व्यायाम मनुष्य के शरीर को बल देता है।

अप्रधान कम के रूप में सम्प्रदान का अर्थ के लिए, के वास्तव के हेतु, के निमित्त, के पाम' यहाँ तक कि का विभक्ति चिह्न सहित भी असामाय कारक में मना शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जैसे—केन्द्र में अकालपीडिता के लिए सहायता भेजा है। (१) कगीम ने राम के हेतु अपना हिंसा छोड़ दिया। (२) माता भूमि की सेवा के निमित्त वह अपना सबकुछ दे रहा है। (३) मैं भाई के पाम चिट्ठी भेज रहा हूँ। (४) नगर सहायता समिति का केन्द्र बाजमगढ़ गहर और जमपाम के क्षेत्रों में बाढ़-पीडिता की मदद करता है।

असामाय कारक में म, का, 'द्वारा', के द्वारा', के जगिय', 'की ओर से' तथा 'की तरफ से' विभक्ति चिह्न सहित मना शब्द करण का बोध कराते हैं तथा वाक्य में अप्रधान कम का काम करते हैं।

करण के अर्थ में उपराक्त विभक्ति चिह्न सहित असामाय कारक के मना शब्द का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

- (१) 'म' विभक्ति चिह्न के साथ अवलिखित प्रयोग।
- (२) प्रेरणाथक क्रियाज्ञा के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए। जैसे आपन यहाँ काट किस दर्जों से मिलाया है ?
- (३) कमवाच्य वाक्या में क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए। जैसे राम से यह घर बना गया है।
- (४) उन कर्तृवाच्य वाक्या में क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए जिनमें विषय अव्यय क्रिया वाले होते हैं। जैसे ओला

बहन	बहनें	बहनो !
बेटी	बेटियाँ	बेटियो !
डाकू	डाकू	डाकूओ !

सम्बोधन कारक म सत्ता शब्दों से पहले प्राय ये विस्मयादिबोधक शब्द प्रयुक्त होते हैं—हूँ आ ए जगो र (पु०) अरे (पु०) री (स्त्री०), जरी (स्त्री०) । जैसे जो लड़के ! तू कहा जाता है ?

यक्तिवाचक मत्ता शब्द प्राय अपन मूल सत्ता रूप म ही प्रयुक्त होते हैं अर्थात् उनके कोई कारक सम्बन्धी प्रत्यय नहीं होते हैं ।

सामा य तथा असामा य कारक में सत्ता शब्दों का प्रयोग

सामा य कारक म सत्ता शब्दों का प्रयोग होता है—

- (क) उद्देश्य क रूप म । जैसे बहन पुस्तक पढ़ती है ।
- (ख) विभिन्न विधेया क नामिक अगा क रूप म । जैसे (१) मेरा मित्र अध्यापक बन गया है । (२) भगत योग उसे धीरे मानते थे । (३) जिन लोगों ने इसे राजनैतिक पत्रिका कहा था, जब यह सहायता हिन्दुस्तान की सरकार को वाटने के लिए दे दी गई तो उनके मुँह से जाल भी न फूटा ।
- (ग) प्रधान कर्म के रूप म । जैसे वह उठी और बरबासा जदर से बंद किया ।
- (घ) परिमाण व भार निर्देशक क रूप म । जैसे स्टेशन पर तीन टन गेहूँ पड़ा है ।
- (ङ) समानाधिकरण क रूप म । जैसे डाक्टर साहब अभी नहीं आय ।

असामाय कारक म सत्ता शब्दों का प्रयोग निश्चित विभिन्न चिह्न पर निर्भर करता है ।

असामाय कारक का विभिन्न चिह्न सहित सत्ता शब्द प्राय गुण निर्देशक का कार्य करता है तथा सम्बन्ध का अर्थ देता है । जैसे—उसने मुझे मित्र का घर दिखाया ।

असामाय कारक म का' विभिन्न चिह्न सहित सत्ता शब्द प्रधान कर्म या अप्रधान कर्म का कार्य करता है तथा कर्म या सम्प्रदान का अर्थ सूचित करता है । जैसे (प्रधान कर्म) उसने मोहिनी को बुलाकर पूछा क्या रो, जितने के तार म तुझे कुछ मातूम है ?”

अप्राणीवाचक मत्ता शब्द प्राय प्रधान कर्म क रूप म सामाय कारक

में प्रयुक्त होने है। जैसे दर तब अस्तरवार वह दृष्टि के सामने लिये रहा।

अप्राणीवाचक सना गद्य 'को' सहित असामान्य कारक में प्रधान कम के रूप में तब प्रयुक्त होता है जब प्रधान कम पर जोर दिया जाता है या दुविधा को दूर करना होता है। जैसे (१) उसने अपने मुँह को छिपाया और धीमे धीमे मिसक उठा। (२) नदी के उस पार मैं घरों को देखता हूँ। अगर इस अंतिम वाक्य में को न होता तो प्रधान कम का रूप 'घर' होता और उससे यह नदेह हो सकता था कि 'गायद एक ही घर दगा जा रहा है' क्योंकि एकवचन और बहुवचन दोनों में ही 'घर' यह रूप होता है।

प्राणीवाचक सना गद्य प्रधान कम के रूप में प्रायः 'को' सहित असामान्य कारक में प्रयुक्त होता है। जैसे किन्हीं अपने पुगने सहपाठी सहाय को वह ध्यान में नहीं ला पाती थी (अप्रधान कम)। दैनिक व्यायाम मनुष्य के शरीर को बल देता है।

अप्रधान कम के रूप में सम्प्रदान का अर्थ के लिए 'के धाम्ने' के हतु 'के निमित्त' के पास यहाँ तक कि का विभक्ति चिह्न सहित भी असामान्य कारक में सना शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जैसे—केन्द्र न अकालपीडितों के लिए सहायता भेजी है। (२) बगीचों में राम के हतु अपना हिम्सा छोड़ दिया। (३) मातृ भूमि की सेवा के निमित्त वह अपना सबकु दे रहा है। (४) मैं भाई के पास चिट्ठी भेज रहा हूँ। (५) नगर सहायता समिति का केन्द्र आज्ञासंगत गहर और आमपास के क्षेत्रों में बाढ़-पीडिता की मदद करता है।

असामान्य कारक में 'से' का द्वारा के द्वारा के जगिय, 'का ओर से' तथा 'का तर्फ से' विभक्ति चिह्न सहित सना-गद्य कर्ण का बोध कराने है तथा वाक्य में अप्रधान कम का कार्य करते हैं।

करण के अर्थ में उपराक्त विभक्ति चिह्न सहित असामान्य कारक के सना-गद्य का निम्नलिखित प्रयोग जाना है—

- (१) 'मे' विभक्ति चिह्न के साथ अधात्विक प्रयोग।
- (क) प्रणायक किया जा के व्यापार के कता का व्यक्त करने के लिए।
जैसे आपन यह बात किस दर्जों से मिलवाया है?
- (ख) कमवाच्य वाक्यों में क्रिया के व्यापार के कता का व्यक्त करने के लिए। जैसे राम से यह घर उठा गया है।
- (ग) उन वतृवाच्य वाक्यों में क्रिया के व्यापार के कता को व्यक्त करने के लिए जिनमें विधेय अवयव क्रिया वास्तव में है। जैसे हमने

की बडाफट भार से शामामूमि गाँव मुखनि हो उठा ।

(घ) कतृ वाच्य वाक्या में साधन का व्यक्त करने के लिए । जैसे विद्यार्थी तन्त्र पर खडिया से लिखता है ।

(ङ) कर्मवाच्य वाक्या में साधन को व्यक्त करने के लिए । जैसे तेल का घुआ सुद जाने पर तेल पम्प से निकाला जाता है ।

(१२) 'का' विभक्ति चिह्न के माध्य प्रयोग । सर्वमक भूतकारिक कृदन्ता के कर्ता का व्यक्त करने के लिए । जैसे हमारे शिक्षक की लिखी हुई पुस्तक है ।

(१३) द्वारा के द्वारा तथा के जरिये विभक्ति चिह्न के माध्य प्रयोग ।

(क) प्रेरणादायक क्रियाओं के व्यापार के कर्ता का व्यक्त करने के लिए । जैसे यह पत्र बहन द्वारा (के द्वारा) (के जरिये) लिखाओ ।

(ख) कर्मवाच्य वाक्या में क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए । जैसे दक्षिण हिंदी प्रचार सभा द्वारा दक्षिण भारत में हिन्दी का अधिक प्रचार करने का निश्चय किया गया है ।

(ग) उन कतृ वाच्य वाक्यों में व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए जिनमें विधेय अवमक क्रिया वाच्य है । जैसे महिलाओं के जरिये (द्वारा) हुआ दस्त आदि बीमारियाँ फैलती है ।

(घ) कतृ वाच्य वाक्या में साधन का व्यक्त करने के लिए । जैसे वह हवाई जहाज द्वारा (के जरिये) माँको गया ।

(ङ) कर्मवाच्य वाक्या में साधन का व्यक्त करने के लिए । जैसे (१) सैकड़ों हजारों एकर खेती जमीन को जहाँ पानी का नामानिमान तक न था मसुबिन सिंचाई द्वारा हरा भरा बना दिया गया है । (२) मिट्टी का तेल मशीनों के जरिये माफ किया जाता है ।

(६) का और में तथा की तरफ से विभक्ति चिह्न के माध्य प्रयोग—

(क) कर्मवाच्य वाक्या में क्रिया के व्यापार के कर्ता का व्यक्त करने के लिए । जैसे (१) इस नगर की स्थानीय गाँवा की ओर से पन्द्रह अग्रजों की स्वयंसेवकता निवृत्ति मनाया गया । (२) गुलाम बनाया गई यूरोपीय कौमों की तरफ से हिटलर के विरुद्ध भारी मध्य छड़ा गया था ।

(ख) कतृ वाच्य वाक्या में क्रिया के व्यापार के कर्ता को व्यक्त करने के लिए ।

लिए। जैसे (१) सहायता समिति की ओर से जिले में तीन केन्द्र बनाकर काम हो रहे हैं। (२) फिरोजाबाद व मजदूरी की तरफ से सात नवम्बर को एक आम सभा हुई।

असामान्य कारक में 'पर', 'को', 'में', 'की' व निस्वतः विभक्ति चिह्नो तथा 'के' वारे में', 'क' विषय में, 'के' सम्बन्ध में' विभक्तिचिह्नवाचक शब्द-समुदायों सहित सज्ञा शब्द अधिकरण का बाध व्यक्त करते हैं। वाक्य में ये सज्ञा-शब्द अप्रधान कम का काम किया करते हैं।

अधिकरण के अर्थ में उपरोक्त विभक्ति चिह्नो तथा विभक्ति चिह्न वाचक शब्द समुदायों सहित असामान्य कारक के सज्ञा शब्दों का निम्नलिखित प्रयोग होता है

(१) पर विभक्ति चिह्न व साथ प्रयोग—

(क) जिसके विषय में बात है उस व्यक्त करने के लिए। जैसे किसानों के सघन पर धानदार फ़िल्म 'जमाना बदल गया है'।

(ख) क्रिया व व्यापार या अवस्था का स्थान व्यक्त करने के लिए। जैसे (व्यापार) सिपाही सड़ पर उतरने लग। (अवस्था) किताब इस मेज पर रखी है।

(ग) जिसके ऊपर किसी का कोई व्यापार होता है उस व्यक्ति या वस्तु का व्यक्त करने के लिए। जम बहुत अरसे से साम्राज्यवादी एशिया में अपने लिए नई निजारती मण्डियाँ ढूँढ रहे थे और एशिया के देशों पर अपना लालची निगाह जमाव बैठे थे।

(२) को विभक्ति चिह्न व साथ प्रयोग—

(क) जिसके विषय में बात है उस व्यक्त करने के लिए। जैसे (१) वह दाना चुप हो गए और बड़े भविष्य के सुनहर सपने देखने लग। (२) हर महीने उसे मखनी के बाप के एक-दो पत्र आ जाते थे जिनमें उनकी आने वाली शादी का चर्चा होती थी।

(३) 'में' विभक्ति चिह्न व साथ प्रयोग—

(क) क्रिया के व्यापार का स्थान या समय व्यक्त करने के लिए। जस (स्थान) उस समय रफी घर में नहीं था, वह बाज़िका में फूट तोड़ रहा था। (समय) माच के अंत में मेरा का सम्मेलन होना वाला है।

(ख) परिधान को निश्चान के लिए। जस अब ता गरमी लगनी है। पिताजी भी आज केवल कमीज और धोती में काम पर गए हैं।

- (४) जिस व्यक्ति या वस्तु पर बात हो रही है उसे 'यक्त करन' के लिए 'व' वारे में 'व' विषय में, 'के सम्प्रदान' में 'विभक्तिवाचक' 'तद' समुदाया तथा 'की' निस्वत आदि विभक्ति चिह्न के साथ प्रयोग। जैसे (१) जितेन के बारे में तुझे कुछ मालूम है। (२) ताजमहल की सुंदरता के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। (३) इस आदमी की निस्वत में कुछ नहीं जानता।

सज्ञा शब्दों की पुनरुक्तिया

हिंदी में 'तत्ता' पर बल देने का सबसे प्रचलित साधन है शब्दों की पुनरुक्ति अर्थात् उन्हें दोहराना। यह हिंदी भाषा की उत्प्रेक्षणीय विशेषता है। शब्दों की पुनरुक्ति साहित्य तथा बोलचाल दोनों में ही व्यवहृत होती है।

शब्दों की पुनरुक्ति वाले शब्दों का भाव अधिक स्पष्ट एवं जोरदार हो जाता है। प्रसंग के अनुसार उनमें पूर्णता, अस्पष्टता, बहुवचन तथा विभाजन का निर्देश होता है। हिंदी में योजक अव्ययों तथा निपात अव्ययों को छोड़कर बाकी सब शब्द भेदा में पुनरुक्ति में व्यवहृत होती है।

हिंदी में मनाआ की तीन प्रकार की पुनरुक्तियाँ होती हैं—

(१) पूर्ण पुनरुक्ति (२) अपूर्ण पुनरुक्ति और (३) समानाधिक पुनरुक्ति।

पूर्ण पुनरुक्ति कहते हैं ऐसी आदृष्टि की जिसमें किसी एक सज्ञा शब्द की आदृष्टि होता है। जैसे 'जन्मा, जन्मा'। मुझे भी अपना माय लो।

हिंदी में उक्त प्रकार की पुनरुक्तियाँ निम्न ज्यों में व्यवहृत होती हैं—

(क) सम्बोधन की अधिक संशकन बनाने के लिए। जैसे 'रमण रमण'। इधर आओ।

(ख) बहुवचन, पूर्णता तथा विभाजन को 'यक्त करन' के लिए। जैसे 'दंग-दंग' बार-बार स्थान-स्थान समय-समय।

ऊपर वर्णित पुनरुक्तियाँ के साथ साथ हिंदी में सज्ञाओं की ऐसी पूर्ण पुनरुक्तियाँ का प्रयोग बहुत व्यापक रूप में होता जिनमें सज्ञाओं के भाव में फारसी में आया 'त' उपसर्ग है और 'ता' निपात तथा 'का' और 'पर' विभक्ति चिह्नों का जायम होता है।

पर विभक्ति चिह्न सज्ञाओं के मध्य में या सज्ञाओं की पुनरुक्ति के पश्चात् प्रयुक्त होता है।

य उपसर्ग तथा 'पर' विभक्ति चिह्न वाली सज्ञाओं की पूर्ण पुनरुक्तियाँ

सामायता तथा आवृत्ति को प्रकट करती है। वे प्रायः विभाजन अथवा वाली होती हैं। जैसे रोज़रगेज सालबमाल दिन पर दिन कदम पर कदम, कदम-कदम पर, समय समय पर।

ही निपात वाली मनाजा की पूर्ण पुनरुक्तियाँ प्रसंगानुसार या तो विभाजनसूचक होती हैं या पुनरुक्ति में प्रयुक्त मना पर बर द रही होती हैं। जैसे बात ही बात, पानी ही पानी, रत ही रत विजय ही विजय।

'सा निपात वाली मनाजा की पूर्ण पुनरुक्तिपरक' आवृत्तियाँ सामायता और समानता का भाव प्रकट करती हैं। जैसे घर सा घर मित्र सा मित्र, गली सी गली।

'का (क की) विभक्तिचिह्न वाली मनाजा की पूर्ण पुनरुक्तियाँ निम्न भाव प्रकट करती हैं

(क) पूर्णता और सजाओ को अधिक सशक्त बनाना यदि पुनरुक्ति में 'का (की, के) विभक्तिचिह्न के पश्चात् प्रयुक्त मना सामाय कारक में है। जैसे माल का माल घर का घर, पानी का पानी पटन की पलटन धुण के धुण्ड। इन सबमें का, 'का', 'क' विभक्ति चिह्नों का प्रयोग पूर्णता के लिए व्यवहृत हुआ है।

(ख) विभाजन या मनाजा को अधिक सशक्त बनाना यदि पुनरुक्ति में 'का' (की के) विभक्तिचिह्न के पश्चात् प्रयुक्त मना असामाय कारक में विभक्तिचिह्न के साथ या उसके बिना व्यवहृत है। जैसे माल के माल महीने के महीने, बात की बात में दम के दम में।

अपूर्ण पुनरुक्ति कर्तृ हैं ऐसी आवृत्ति को जिसमें आवृत्ति का पूर्व या उत्तर भाग स्वयं प्रयुक्त नहीं होता है, किन्तु उत्तर भाग में जुड़कर इस प्रकार में आवृत्ति होता है जो आवृत्ति के पूर्व या उत्तर भाग को सशक्त बना देता है। जैसे बदला बदला अगेम पडोम। उक्त प्रकार की पुनरुक्तियाँ में पूर्ण भाग स्वयं प्रयुक्त नहीं होता है वह केवल आवृत्ति के उत्तर भाग को अधिक सशक्त बनाता है यद्यपि उसका भी गन्गन अथवा वही होता है।

निम्नलिखित अपूर्ण पुनरुक्तियाँ में उत्तर भाग स्वतन्त्र एवं पृथक् प्रयुक्त नहीं होता है। जैसे छूनछान, पूछनाछ घूमघाम।

अपूर्ण पुनरुक्तिपरक मनाजा की आवृत्तियाँ ऐसी भी समझी जा सकती हैं जिनमें पूर्व भाग में प्रथम व्यंजना के स्थान पर 'म' 'व' तथा 'म' व्यंजन प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार की पुनरुक्तियाँ मना का अधिक सशक्त बनाने के अलावा

उनका बहुवचन भी प्रयुक्त करता है। जैसे मिठाई सिठाई, खाना बाना राटी बोनी, पानी बानी झूठ मूठ।

समानाधिक्य पुनरुक्ति कहते हैं एसी आवृत्ति को जिसमें प्रत्येक भाग का अपना अर्थ होना है और पुनरुक्ति के बिना भी वह भाग प्रयुक्त हो सकता है। समानाधिक्य पुनरुक्तियाँ हिन्दी में बहुत अधिक प्रचलित हैं। वे या तो अपने भागों के अर्थों का संश्लेष बनाती हैं या समूह का भाव व्यक्त करती हैं। जैसे रग-ढग (रग और ढग), आदर सम्मान (आदर और सम्मान) कूड़ा-कचरा (कूड़ा और कचरा) नौकर चाकर (नौकर और चाकर)।

संज्ञाओं की समानाधिक्य पुनरुक्तियों में निम्न शब्द आ सकते हैं

(क) संस्कृत तत्समा के दो संज्ञा शब्द। जैसे सम्बन्ध-सम्पत् (सम्बन्ध और सम्पत्) धन सम्पत्ति (धन और सम्पत्ति) आचार-व्यवहार (आचार और व्यवहार)।

(ख) अरबी और फारसी के दो संज्ञा शब्द। जैसे गोर गुल (गोर और गुल) खना कसूर (खता और कसूर) कौल-करार (कौल और करार), माज मामान (माज और मामान)।

(ग) हिन्दी के दो संज्ञा शब्द। जैसे ओढ़ना बिछौना (ओढ़ना और बिछौना), जान मान (जान और मान) सुध बुध (सुध और बुध)।

(घ) हिन्दी की क्रिया की दो धातुएँ जो संज्ञा शब्दों के अर्थ में प्रयुक्त होती हैं। जैसे मार-पीट (मारना और पीटना) चीर फाड़ (चीरना और फाड़ना) चील पुकार (चीलना और पुकारना)।

(ङ) हिन्दी शब्द और संस्कृत तत्सम शब्द। जैसे सोच विचार (सोच और विचार) जड़ मूल (जड़ और मूल)।

(च) अरबी फारसी शब्द और संस्कृत तत्सम या हिन्दी शब्द। जैसे मर सपाटा (मर और सपाटा), चीज वस्तु (चीज और वस्तु) शांति विवाह (शांति और विवाह) आब-पानी (पानी और आब) किस्मा-कहाना (किस्मा और कहानी)।

(छ) संस्कृत तत्सम शब्द या हिन्दी शब्द और अरबी या फारसी शब्द। जैसे सवा चाकरी (सवा और चाकरी) धन दौलत (धन और दौलत) बाल बच्चे (बाल और बच्चे), भाई बिरादर (भाई और बिरादर)।

वाक्य में संज्ञाओं की पुनरुक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं—

(क) उद्देश्य के रूप में। जैसे उन्होंने साचा था कि सब जगह उनकी

विजय-ही विजय होगी। उमक पास न धन दोलन है न महल अटारिया न नौकर-चाकर हैं।

(स) कम के रूप में। जैसे पाई-पाई मुझे पसीन के बल कमानी हानी है।

(ग) गुणनिर्णय के रूप में। जैसे इस घटना में दग-दग की आम जनता का दिग्गज अपाङ्ग उमाह में भरा है।

(घ) विशेषक के अर्थ के रूप में। जैसे यह लड़क-लड़कियाँ उमक बाल-बच्चे हैं।

(ङ) विभिन्न प्रकार के विषयनामवाचक के रूप में। जैसे (१) मोहनेजोदारों में जगह-जगह पक्क होठ भी मिलन हैं। (२) मैंने उमका घर घर तलाश किया। (३) इस सम्मेलन के लिए विश्व के कान-कान में पनिनिधि व्याप्त हैं। (४) समय-समय वह भाग्य आता है। (५) बात-ही-बात वे झगड़ने लगते हैं। (६) बाल-की-बाल में हवाई जहाज लट्टि में आश्रय हो गया।

संज्ञा शब्दों की निश्चितता तथा अनिश्चितता की अभिव्यक्ति

(१) हिंदी में यकिन या बस्तु का अनिश्चितता एक सन्ध्यावाचक 'तथा' तथा 'कई', कुछ कनिष्ठ 'क', 'बन्द', 'बाज अनिश्चयवाचक सवनामा द्वारा व्यक्त का जाता है।

(क) सन्ध्यावाचक 'तथा' एक का प्रयोग एकवचन में अनिश्चितता सूचित करने के लिए होता है। जैसे (१) तुम्हारे यहाँ एक आदमी आया है। (२) यहाँ एक लड़का है।

(ख) 'को' अनिश्चयवाचक सवनाम एकवचन में बहुवचन दोनों में ही अनिश्चितता का सूचक है। जैसे (१) कोई औरत आपकी प्रतीक्षा कर रही है। (२) वहाँ कोई भण्डार है।

(ग) 'कुछ अनिश्चयवाचक सवनाम गणनीय तथा अगणनाय सन्ध्यावाचक 'साथ' प्रयुक्त होता है। गणनाय सन्ध्यावाचक के साथ प्रयोग में कुछ सवनाम का अर्थ होता है 'कई' या 'थोड़ा'। जैसे (१) मञ्च पर कुछ पुस्तकें पड़ी हैं। (२) मेरे पास कुछ रुपय हैं।

अगणनीय सन्ध्यावाचक 'साथ' प्रयोग में 'कुछ' सवनाम का अर्थ होता है 'थोड़ा-सा'। जैसे कृपया कुछ पाना लाइयें।

(घ) 'कई', कनिष्ठ 'क', 'बन्द', 'बाज अनिश्चयवाचक सवनाम बहु-

वचन में अनिश्चितता यमन वर्ग के लिए प्रयुक्त होते हैं। तब कई विद्यार्थी अपने अध्यापक से मिलने गये।

(२) हिंदी में सना गाना की निश्चितता व्यक्त होती है—

(क) यह वह निर्देशवाचक भवनामा तथा मय हर प्रत्येक आदि निश्चयवाचक भवनामा द्वारा। तब (१) यह आदमी मेरा शिक्षक है। (२) वह कितना उसका नहीं है। (३) आज सब विद्यार्थी श्रेणी में उपस्थित हैं।

(ख) स्वामित्ववाचक भवनामा द्वारा। जस मरी काफी कहाँ है ?

(ग) का' विभक्तिचिह्न महित सज्ञा शब्द या क्रियाविशेषण द्वारा। जस (१) रमेश का बाप चकटर है। (२) मुझे आज का समाचार पत्र नहीं मिला है।

(घ) क्रमवाचक मरया गाना द्वारा। जस वह तीसरी मजिल पर रहते हैं।

सना गाना निश्चितता या अनिश्चितता के सूचक गाना के बिना तब प्रयुक्त होते हैं जब कोई बात किसी निश्चित वस्तु के बारे में नहीं अपितु एक सी वस्तुओं में से किसी एक के विषय में कही जाती है जैसा कि निश्चित व्यक्ति या वस्तु के बारे में कोई चर्चा होती है और व्यक्ति या वस्तु की निश्चितता प्रसंग में पता चलती है। जैसे (१) क्या इस कमरे में कुर्सी है ? (२) वह पानी भरने शर्त। (३) तुम्हारे घर में चीजें गन् तुम्हें देनी पड़ेगी।

उपयुक्त तीसरे उदाहरण में प्रसंग है गायब हुई कण्ठमाला का।

विशेषण

विशेषण ऐसा शब्द भेद है जो वस्तु के गुण, दोष आदि विशेषताओं को बताता है और सजा शब्द के साथ प्रयुक्त होता है। जैसे अच्छा आदमी चौड़ी मेज, प्यारा दरवाजा, महत्वपूर्ण समस्या औद्योगिक विकास।

हिंदी में विशेषण शब्द सजाओं की निम्नलिखित विशेषताओं को सूचित करते हैं—

रंग—जैसे लाल, पीला नीला भूरा काला।

परिमाण—जैसे चौड़ा ऊँचा, नीचा, लम्बा, उँडा छाटा आदि।

आकार—जैसे गाल टेढ़ा, मुकांग चौकांग आदि।

गुण—जैसे नया, पुराना, मजबूत, चतुर आदि।

अवस्था—रोमा, झुका, गंगा, सूखा आदि।

पदार्थ—ऊनी, सूता, फौगदी, कागजी देतीला इत्यादि।

व्यवसाय—व्यापारी, औद्योगिक आदि।

स्थान—पटासी नन्दीकी, दूर, दक्कती।

समय—आगामा अगल पिछल।

दिशा—पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी दक्षिणी आदि।

अपने अर्थों और व्याकरण-सम्बन्धों के अनुसार हिन्दी में सारे विशेषण दो भागों में बँटते हैं—गुणवाचक विशेषण और सम्बन्धवाचक विशेषण। गुणवाचक विशेषण वस्तु का गुण या विशेषता दूसरी वस्तु के प्रति निर्णय भाव में बताते हैं। य गुण या विशेषता वस्तु में अस्तित्व या गुण परिमाण में हो सकते हैं अतएव जहाँ किन्हीं निश्चित शब्दों से उनका निर्देश किया जा सकता है। जैसे

सुन्दर—अधिक सुन्दर, कम सुन्दर बहुत सुन्दर।

मजबूत—बहुत मजबूत कम मजबूत, बहुत मजबूत।

गुणवाचक विशेषण वस्तुओं के उन गुणों तथा विशेषताओं का व्यक्त

वर्तते हैं जो प्रत्यक्ष रूप में चन्द्रिया में अनुभूत होते हैं। जम

(क) बाह्य भौतिक विवेचनाएँ—

रंग—रंग भर्षा हरा पीरा आति ।

तापमान—गरम ठण्ण आति ।

समय—पिछरा जमरा आति ।

स्वाद—मीठा गट्टा नमकीन आति ।

भार—हका भारी बजना आदि ।

आयु—जवान अधड ठूरा आति ।

(ख) गंगा और पशुआ की शारीरिक विवेचनाएँ—

जैसे अधा लगडा मजदूर बन्ग बमखार बीमार सधुस्त आदि ।

(ग) आदमी के चरित्र व बुद्धि-सम्बन्धी विवेचनाएँ—जसे उदार

साहसी बुद्धिमान ब्रुह बहादुर चाहाक आति ।

(घ) वस्तु की मूल्यांकनपरक विवेचनाएँ—जसे आवश्यक महत्व

पूरा लाभदायक हानिकारक उचित गलत आदि । वाक्य में

गुणवाचक विशेषणों का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

(१) गणनिर्देशक के रूप में । जैसे इन छात्रों में बड़का सत्य था ।

(२) विधेयक के नामित अंग के रूप में । जैसे (१) गंगा मामूली थे

मगर उनका मतलब मामूली न था । (२) इन कपड़ों में बड़ा बहुत सुन्दर निवार्ड देनी था ।

सम्बन्धवाचक विवेचना वस्तु की विवेचना अथ वस्तु के सम्बन्ध में बताता है । इस प्रकार के विवेचना सना गलत क्रियाविशेषण तथा क्रियाओं में बन हात है ।

जसे शान्तिमय (शान्ति मना से) भीतरी (भीतर क्रियाविशेषण से) खुश (खुशना क्रिया से) ।

सम्बन्धवाचक विवेचना में अभिव्यक्ति विशेषण वस्तु में निहित होती है । ये विवेचनाएँ न कम और न अधिक हो सकती हैं । उनका अभिव्यक्ति 'मूनाधिक' परिमाण में होती हो सकती है क्योंकि सम्बन्धवाचक विवेचना वस्तु की अपरिवर्तनाय विवेचनाओं को बताता है ।

जिन्हीं में सम्बन्धवाचक विशेषण सूचित करते हैं—

(क) वस्तु का लक्ष्य । जसे फौजी जगज (फौजी विवेचना फौज मना में बना है) व्यापारा बन्ग (व्यापारी विवेचना व्यापार मना से बना है) ।

(ख) किसी दंग में सम्बन्ध या जाति । जैसे हसा (हस' व्यक्ति वाचक सना से बना है) भारतीय (भारत व्यक्तिवाचक सना से बना है) ।

(ग) वस्तु का स्थान या समय में सम्बन्ध । जैसे पहाड़ी गस्ता (पहाड़ी विशेषण 'पहाड़ सना से बना है) । साप्ताहिक पत्र (साप्ताहिक विशेषण 'साप्ताहिक सना से बना है) ।

(घ) वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी है । जैसे फौलादा छरी (फौलादी विशेषण 'फौलाद पदार्थवाचक सना से बना है) रेशमा कपड़ा (रेशमी विशेषण रेशम पदार्थवाचक सजा से बना है) ।

(ङ) सम्बन्धवाचक विशेषण उन भाववाचक शब्दों में भी सम्बन्ध व्यक्त करत हैं जो व्यापक रूप में विज्ञान तकनीकी और सामाजिक जीवन के क्षेत्र में व्यवहृत होते हैं । जैसे वैज्ञानिक (भाववाचक सजा विज्ञान से बना है) सामाजिक (भाववाचक सजा 'समाज से बना है) राजनीतिक (भाववाचक सजा राजनीति से बना है) ।

वाक्य में सम्बन्धवाचक विशेषणों का निम्नलिखित प्रयोग होता है—

(क) गुणनिर्देशक के रूप में । जैसे जेडिन इलना भुचें ज़रूर उम्मीद है कि अगर कोई दूसरा सिपाहा इस मर्ग का पड़ेगा तो मरने वालों का कौमी बर्दी की बाइ तरफ की जग में ज़रूर हाल होगा ।

(ख) विधेय के नामिक अंग के रूप में । जैसे यह एक एक गांव की बाइ है जहाँ की आबादी जाति में बहुत मिलित निरक्षर था ।

स्मरण रहे कुछ भारिभाषिक सम्बन्धवाचक विशेषण नामिक विधेयक में बहुत कम प्रयुक्त होते हैं । जैसे भौगोलिक, भौगमिक प्राविधिक शब्दादि ।

विशेषण विकार

एक विकार का विशेषणवाक्य अनुसार हिदा में विशेषण का वर्गों में बँटता है—विकारी विशेषण और अविकारी विशेषण । विकारी विशेषण का सना में मर्ग (अवयव) होता है । अविकारी विशेषण का सना में काइ मर्ग नहीं होता है । सना में मर्ग होत हुए प्रथम धम के विशेषण लिये, वचन तथा नारक में रूप वर्णन है परन्तु हम प्रवाक के विशेषणों के लिये वचन तथा नारकों

के रूप स्वतन्त्र नहीं होत है। व सना स विशेषण का सम्बन्ध व्यक्त करते हैं तथा उस सना के लिंग, वचन तथा कारक व अनुसार होत हैं जिससे किसी विशेषण का मल होता है। द्वितीय वग के विशेषण अपन रूप में नहीं बदलते हैं। विकारी विशेषणों में जाकारात् तथा जाकारान्त विशेषण परिगणित होत हैं। जैसे अच्छा, बड़ा, चौड़ा, दाया, बाया, डम्बाँ आदि।

सामान्य कारक में विकारी विशेषण के निम्नलिखित अन्त्य प्रत्यय होते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
(पुंलिंग)	आ आं	ए ए (यें)
(स्त्रीलिंग)	ई इ	ई इ

इस प्रकार सामान्य कारक में विकारी विशेषणों का वचन में सना में मल केवल पुंलिंग रूप में यत्न होता है। स्त्रीलिंग में एकवचन तथा बहुवचन में अन्त्य प्रत्यय एक जैसे होते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
(पुंलिंग)	अच्छा लड़का	अच्छे लड़के
"	दाया हाथ	दायें हाथ
(स्त्रीलिंग)	अच्छी लड़की	अच्छी लड़कियाँ
	दाइ भाँख	दाइ भाँखें

असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक में भी विकारी विशेषणों के अन्त्य प्रत्यय एक जैसे होते हैं। दोनों वचना के पुंलिंग असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक में विकारी विशेषणों के अन्त्य प्रत्यय ए तथा ए हैं जो बहुवचन सामान्य कारक के अन्त्य प्रत्ययों में मिलते जुलते हैं। असामान्य कारक तथा सम्बोधन कारक में विकारी विशेषणों के निम्नलिखित अन्त्य प्रत्यय होते हैं —

	एकवचन	बहुवचन
(पुंलिंग)	ए ए	ए ए
(स्त्रीलिंग)	ई इ	ई इ जैसे
(पुंलिंग)	प्यारे बेटे को	प्यारे बेटों को
"	अरे प्यार बेटे !	अरे प्यारे बेटों !
(स्त्रीलिंग)	प्यारी बेटी को	प्यारी बेटियों को
	अरी प्यारी बेटो !	अरी प्यारी बेटियों !

जबकि ऊपर दिये गए उदाहरणों से दाखला है कारक में विशेषण का सनाओं में मेल केवल पुंलिंग में होता है।

यदि विकारी विगेषा दा या दा स अधिक विभिन्न लिख वाली सनाओ के साथ प्रयुक्त होता है तो उनके लिए और बचन निकटवर्ती सना व अनुसार होता है। जैसे छोट लम्बे लड़कियाँ।

अविकारी विगेषा में आकारान्त तथा आकारान्त विगेषा को छोड़कर अन्य नव स्वरान्त तथा व्यञ्जनान्त विगेषा आ जाते हैं। इन वा क विगेषा का सनाओ न काइ मल नहीं होता है। कारक में केवल सना व रूप बलान्त हैं तथा उनमें सम्बन्धित विगेषा के रूप नहीं बदलते हैं।

सामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुंलिङ्ग)	बुद्धिमान लड़का	बुद्धिमान लड़के
"	धनी आदमी	धनी आदमी
(स्त्रीलिङ्ग)	बुद्धिमान लड़की	बुद्धिमान लड़कियाँ

असामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुंलिङ्ग)	बुद्धिमान लड़के	बुद्धिमान लड़की
"	धनी आदमी	धनी आदमियों
(स्त्रीलिङ्ग)	बुद्धिमान लड़की	बुद्धिमान लड़कियों

सम्बोधन कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुंलिङ्ग)	बुद्धिमान लड़के ! धनी आदमी !	बुद्धिमान लड़की ! धनी आदमियों !
(स्त्रीलिङ्ग)	बुद्धिमान लड़की !	बुद्धिमान लड़कियों !

अविकारी विगेषा में कुछ ऐसे आकारान्त विगेषा का भी परिगणन होता है जो हिन्दा में अरबी और फारसी में आते हैं। जैसे उम्मा, बसा जुना, ज्यादा राखाना गमिदा हजानि।

अविकारी विगेषा में हम हिन्दा में प्रयुक्त सरल स्त्रीलिङ्ग विगेषा का भी समावेश कर सकते हैं। इस प्रकार के विगेषा हिन्दी में अपना रूप नहीं बदलते हैं। उनका उपयोग बचने स्त्रीलिङ्गवाची सनाओ व साथ दिया जाता है परन्तु उनका लिख दूसरे विकारी विगेषा की भाँति नहीं कर दिया

अनुसार नहीं होता है बल्कि पुल्लिङ्गवाची विशेषणा के साथ 'ग' प्रत्ययो द्वारा बनता है। जैसे 'शक्तिधारिणी' ('शक्तिधारी' विशेषण से बना है), 'शक्तिशालिनी' ('शक्तिशाली' विशेषण से बना है), इत्यादि।

तुलना

हिंदी में तुलना की दृष्टि से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं—
मूलावस्था उत्तरावस्था और उत्तमावस्था।

मूलावस्था में विशेषण वस्तु को अथ वस्तुओं से निरपेक्ष भाव से सीधे निर्दिष्ट करत है। इस अवस्था में एक वस्तु की दूसरी वस्तु से गुण या दोष की मात्रा में तुलना नहीं की जाती है। इसलिए मूलावस्था में विशेषण की तुलना स्पष्ट रूप से नहीं प्रतीत हुआ करती है। मूलावस्था वाग विशेषण प्रायः शब्द-कोश में दिया होता है। जैसे अच्छा बुरा मजबूत।

उत्तरावस्था में दो वस्तुओं की तुलना करके उनमें से एक वस्तु को गुण या दोष अधिक बतलाया जाना है। जैसे लोहा लकड़ी से कड़ा है।

उत्तमावस्था में किसी वस्तु को सबसे अधिक गुणशाली या दोषी बताया जाता है। जैसे वह हमारी रक्षा में सबसे अच्छा विद्यार्थी है।

हिंदी में केवल गुणवाचक विशेषणों का तुलना अवस्था होता है क्योंकि ये विशेषण वस्तुओं के उन गुणों या दोषों का व्यक्त करत हैं जो वस्तुओं में अधिक या 'यून' मात्रा में होते हैं। सम्बन्धवाचक विशेषण किसी विशेषताओं को बताते हैं जो अधिक या 'यून' मात्रा में नहीं हो सकती हैं। इसलिए उनकी तुलनावस्थाएँ नहीं होती हैं। परन्तु हिन्दी में ऐसे गुणवाचक विशेषण भी होते हैं जिनकी तुलनावस्थाएँ नहीं होती हैं। इनमें निम्नलिखित का परिगणन है—

(क) अधिकतर नकारात्मक विशेषण। जैसे अभिन्न अक्षय्य अप्रिय आदि।

(ख) ऐसे विशेषण जिनके द्वारा 'यक' गुण या दोष की तुलना नहीं की जा सकती। जैसे अच्छा बुरा नगा अनिरक्त आदि।

तुलनावस्थाओं की अभिव्यक्ति

हिन्दी में तुलनावस्थाओं व्यक्त करने के लिए गुणवाचक विशेषणों में अपने परस्पर विषयक रूप में ही होते हैं। इसलिए तुलनावस्थाओं का प्रतीति विशेषण वाक्यरचना विषयक 'ग' समुदाया में होता है। इस विशेषणों के कुछ प्रयोग होते हैं जो संस्कृत या फार्सी में हिन्दी में आते हैं। इस प्रकार के

विशेषणा की तुलनावस्थाएँ हिन्दी में उक्त विशेषणा के माथ प्रयुक्त प्रत्ययों के द्वारा व्यक्त की जाती हैं।

उत्तरावस्था हिन्दी में निश्चित वाक्यरचना द्वारा निर्दिष्ट होती है जिसमें तुलना की जाने वाली वस्तु उद्देश्य होती है मूलावस्था में प्रयुक्त विनोपण विधेयक का अंग होता है और सज्ञा शब्द या सबनाम जिससे दूसरी वस्तु की तुलना की जाती है किसी निश्चित विभक्ति चिह्न के साथ असामान्य कारक में होता है। उत्तरावस्था में निम्नलिखित विभक्ति चिह्नों का प्रयोग होता है—

(क) से। जैसे (i) यह सेब शहद से मोठा है। (ii) मेरा भाई उससे बड़ा है।

(ख) में, में से। जैसे इन घरों में (में से) हमारा घर ऊँचा है।

(ग) की अपेक्षा की तुलना में के मुकाबले, की बनिस्बत। जैसे (i) मस्तूत की अपेक्षा हिन्दी सरल है। (ii) उसकी तुलना में मेरा भाई बलवान है। (iii) यह किताब उस किताब के मुकाबले दिलचस्प है। (iv) गधे की बनिस्बत घोड़ा मजबूत है।

उत्तरावस्था 'के जागे' और 'में सामने' विभक्ति चिह्नों द्वारा भी व्यक्त की जा सकती है। जैसे वह मेरे आगे छोटा है। स्त्री पुरुष के मामले में कमजोर होती है।

संस्कृत से आए विनोपणा की उत्तरावस्था तर प्रत्यय द्वारा भी प्रकट की जा सकती है। जैसे उच्चतर श्रेष्ठतर हीनतर कोमलतर आदि।

उत्तमावस्था हिन्दी में निम्न प्रकार से अभिव्यक्त होती है।

(क) निर्देशक सबनाम 'मैं' तथा विभक्ति चिह्न 'से' या 'में' के संयोजन द्वारा मूलावस्था में प्रयुक्त विनोपण के साथ। जैसे (i) हमारे नगर में यह सबसे लम्बी सड़क है। (ii) यह घड़ी सबसे अच्छी है।

(ख) 'स' या 'में' विभक्ति चिह्नों द्वारा। 'में' दत्ता में निर्देशक सबनाम सब विभक्ति चिह्न 'स' या 'में' पहले नहीं प्रयुक्त होता है, वह प्रयुक्त होता है उस सज्ञा से पहले जिसमें तुलना की जाती है। इसमें विनोपण मूलावस्था जैसे ही होता है। जैसे यह घर सब घरों से (में) बड़ा है।

(ग) में विभक्ति चिह्न के साथ विनोपण की आरति द्वारा। जैसे (i) बड़े में बड़ा घर। (ii) अच्छी-से अच्छी पुस्तक।

संस्कृत से आए विनोपणा की उत्तमावस्था 'तम' प्रत्यय द्वारा भी प्रकट की जा सकती है। जैसे उच्चतम श्रेष्ठतम, हीनतम, कोमलतम आदि।

हिन्दी में विनोपणा की 'यून' या अधिक मात्रा उन निम्नलिखित 'यून'ों

द्वारा यवन की जा मरती है जो मूलावस्था वाले विशेषणों से जुड़ जाते हैं— अधिक, ज्यादा, बड़ी, कम बहुत याड़ा, जरा किंचित और (और भी), कुछ बड़ा, काफी, बिल्कुल। जैसे अधिक बचवान ज्यादा मजबूत, बड़ी अच्छा, कम चौड़ा बहुत ठंडा, यादा लम्बा जरा ऊँचा और गम, और भी गम कुछ नग बड़ा सुंदर, काफी लाभदायक बिल्कुल अनुचित।

विशेषणों का सज्ञाकरण

विशेषणों के सज्ञाकरण का अर्थ सनाआ में विशेषण का सन्मरण है। हिंदी में सना के गण्य भेद में केवल कुछ विशेषणों का पूर्ण सन्मरण हुआ है। ऐसे विशेषणों में 'बड़ी', 'कड़ी' आदि जैसे गण्य गिन जा सकते हैं। अधिनाश विशेषण सनाआ के अर्थ में प्रयुक्त हान है तथा विशेषणों के अर्थ में। ये प्रायः व्यक्तियों में निहित गुणा वाले विशेषणों में सम्बन्धित होते हैं। जैसे गरीब धनी, बकार, बामार बवान जवा, बहरा आदि।

सना के अर्थ में प्रयुक्त हान समय इस प्रकार के विशेषण वस्तु की विशेषता को तही बन्वि स्वयं उम वस्तु का ही निर्देश करने लगते हैं। सना के अर्थ में प्रयुक्त विशेषण उस निर्दिष्ट वस्तु के अनुसार पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में व्यवहृत हो सकते हैं परंतु प्रायः वे पुल्लिंग में प्रयुक्त हान हैं। स्त्रीलिंग में उनका सब प्रयोग होता है जब वे स्त्रीलिंगवाची व्यक्तियों का निर्देश करते हैं। जैसे अधा (पुरुष) अधी (स्त्री) बहरा (पुरुष) बहरी (स्त्री)।

सना के अर्थ में प्रयुक्त विशेषणों का रूपान्तर उनके सना लिंग और अन्त्य प्रत्यय वाले सनाओं की भांति होता है। विकारी विशेषणों का रूपान्तर रुढ़का बटा आदि सना गठने की भांति होता है। अविकारी विशेषणों का रूपान्तर विमान भाई, आदि सना गठने की भांति होता है। जैसे

सामान्य कारक

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	अधा	अ धे
	जवान	जवान
„	धनी	धनी

असामान्य कारक

(पुस्तिका)	एकवचन अधे	बहुवचन अधो
"	जवान	जवाना
"	घनी	घनिया

सम्बोधन कारक

(पुस्तिका)	एकवचन अधे !	बहुवचन अधो !
"	जवान !	जवानो !
"	घनी !	घनियो !

विशेषण की पुनरुक्ति

हिंदा में विशेषण की पुनरुक्ति का बहुत प्रचलन है। इस तरह की पुनरुक्ति में विशेषण अवधारणसूचक होता है। जैसे (१) छाटी छोटी लड़की। (२) लम्ब-लम्ब घाल।

विशेषणों का पुनरुक्तियाँ अवधारणपरक निम्नलिखित अथ व्यक्त करती है—

- (क) भिन्नता। जैसे नय नय खेल।
- (ख) एकजातीयता। जैसे बड़ बड़े लोग तथा छोटे छोटे बच्चे अपनी-अपनी जगह बैठे।
- (ग) अतिशयता। जैसे मीठ मीठे अमूर।
- (घ) गूनाता। जैसे सटट चटटे नाजू।

सख्या-शब्द

सख्या शब्द गणना का कहत है जिसमें एक से नौ का समावेश होता है जो अर्थात् तथा अर्थात् में सूचित माना एवं परिमाण को व्यक्त करते हैं।

हिन्दी में सख्या शब्द अपने गठन के अनुसार तीन प्रकार के होते हैं—
सामान्य जटिल तथा संयुक्त।

सामान्य सख्या शब्द के कहलाने हैं जो स्वतन्त्र मूल के होते हैं। इन सामान्य सख्या शब्दों में निम्नलिखित का परिगणन होता है—

(क) एक से दस तक की संख्याएँ।

जैसे एक दो तीन आदि।

(ख) गणना के नाम। जैसे दस बीस, तीस चालीस आदि।

(ग) सौ हजार लाख करोड़ अरब आदि।

जटिल सख्या-शब्द के कहलाने हैं जो दो मूल वाले होते हैं। उनमें समावेश होता है 'पूरा दशक सख्या शब्दों का छोड़कर ग्यारह के बाद प्रारम्भ होने वाले प्रत्येक दशक के तमाम सख्या शब्दों का। जैसे बीसह इक्कीस बीसह तीस, बीसह पच्चीस, छत्तीस सत्ताईस और अठ्ठाईस। (इसी तरह फिर हर दशक में सौ तक)।

इस समय जटिल सख्या शब्दों के निर्माण के सामान्य निदानों को निर्धारित करना ज़रूरी नहीं है। कारण, उनमें समाविष्ट अंशों का अपना मूल रूप काफी रूपान्तरित हो चुका है। किंतु प्रत्येक दशक के सख्या शब्दों में संयोजन का निम्न निश्चित क्रम है—पहले आता है बगले हुए रूप में एक से नौ तक के सामान्य सख्या शब्द इसके पश्चात् आते हैं प्रायः बढ़ा हुए रूप में दशकों के सख्या शब्द। जैसे बीसह (चार का बढ़ा रूप 'बी' बीस)। इक्कीस (एक का बढ़ा रूप 'इ' साठ का बढ़ा रूप 'सठ')।

नवासी तथा नियानव सख्या शब्दों को छोड़कर उन्नीस उन्नीस उन्नालीस आदि शब्द संयोजन से नहीं बल्कि उन द्वारा बनते हैं। 'ऊन' का

यहाँ अथ होता है एक अथ कम । 'ऊन' इस अथ में दशकों के नाम के पूर जुड़ता है । जैसे उतीस, उनसठ, उनासी ।

नवासी तथा नित्यानवे जटिल सख्या शब्द है । उनका निर्माण अन्य जटिल सख्या-शब्दों की भांति हुआ है ।

सयुक्त सख्या शब्द वे कहलाते हैं जिनमें दो या दो से अधिक (सामान्य या जटिल) सख्या शब्दों का समावेश होता है । हिन्दी में ये सख्या-शब्द होने हैं 'सौ' सख्या-शब्द के बाद । जैसे एकसौ एक दो सौ तीन सौ बीस चार-सौ उन्तालीस इत्यादि ।

अपने अर्थों के अनुसार हिन्दी में सर्या शब्दों के दो मुख्य भेद हैं—
गणनावाचक तथा क्रमवाचक । गणनावाचक सख्या शब्दों में निर्माण तथा उपयोग की दृष्टि से समुदायवाचक सख्या शब्दों का विशेष समावेश होता है । सख्या शब्दों की विशेष श्रेणी में आते हैं लण्डवाचक सख्या शब्द तथा मिश्रित सख्याओं के सूचक शब्द और शब्द समुदाय पृथक् श्रेणी में आते हैं 'आवृत्तिवाचक सख्या शब्द तथा 'लगभग मात्रा सूचक शब्द ।

गणनावाचक सख्या शब्द हिन्दी में गणनावाचक सख्या शब्द स्वतन्त्र रूप से या संज्ञा शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं । संज्ञा शब्दों के साथ इनका प्रयोग सदा सामान्य-कारक में होता है और लिंग तथा वचन अपरिवर्तित रहते हैं । जैसे पाँच आदमी, पाँच आदमियाँ के लिए । सात लड़कियाँ सात लड़कियों के लिए ।

गणनावाचक सख्या शब्द एक अनिश्चयवाचक भवना में 'कोई' के अर्थ में एकवचन में अनिश्चितता व्यक्त करने के लिए प्रायः प्रयुक्त हुआ करता है । जैसे यहाँ एक आदमी आया था ।

गणनावाचक सख्या शब्दों की पुनर्वक्तियों विभाजकता का अर्थ दिया करती हैं । जैसे एक एक, दो-दो इत्यादि ।

हजार, लास, करोड, अरब आदि जैसे गणनावाचक सख्या शब्द प्रायः विशेष गणनक शब्द समझे जाते हैं और उन दशा में बीसी, सैकड़ा आदि गणनक शब्दों की भांति 'आ' प्रत्यय उनके अंत में जुड़ता है जिससे अनिश्चयवाचक समुदायवाचक सख्या शब्द बन जाते हैं, जैसे बीसियों, हजारों लासों, करोडों आदि ।

एक से सौ तक के गणनावाचक संख्या शब्द

इकाई १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दशक									

१ एक दो तीन चार पाच छ सान जाठ नौ दस
 २ ग्यारह बारह तेरह चौन्ह पंद्रह सोलह सत्रह अठारह उनीस बीस
 ३ इक्कीस बाइस तेईस चौबीस पच्चीस छब्बीस सत्तास अठारस उतीस तास
 ४ इक्कीस बत्तीस ततीस चौतीस पतीस छत्तीस सत्तीस जडनीस उतालीस चालीस
 ५ इक्तालीस बयालीस तितालीस चबालीस पतालीस छियालीस मतालीस

अठतालीस उनचास पचास

६ इक्यावन बावन त्रेपन चौवन पचपन छप्पन सनावन अठावन उनसठ साठ
 ७ इक्कसठ बामठ त्रसठ चौमठ पसठ छियासठ सडमठ अडमठ उनहत्तर मत्तर
 ८ इक्कहत्तर बहत्तर तिहत्तर चौहत्तर पचहत्तर छिहत्तर मनहत्तर अठहत्तर उनामी
 अस्सी

९ इक्यासी बयासी तिरासी चौरासी पचासी छियासी सनासी अठासी नवासी नव
 १० इक्यानव बानव तिरानव चौरानव पचानव छियानव मनानव अठानव
 निम्नानव नौ

खण्डवाचक संख्या शब्द

हिन्दी में निम्नलिखित खण्डवाचक संख्याएँ पृथक् संज्ञा से व्यक्त की जाती हैं। जैसे पाँच चौध चौथाई तिहाई आधा पौन, पौना पौन सवा डेढ़ टाई, अठ्ठाई साढ़े।

ऐसे खण्डवाचक संख्याओं को 'यकन' करने के लिए हिन्दी में कोई पथक शब्द नहीं है।

ध्यान-रूप-संज्ञा विशेषताओं की दृष्टि से हिन्दी में खण्डवाचक संख्या-शब्द एक जैसे नहीं हैं। तिहाई तथा 'चौध व चौथाई' संख्या शब्द वास्तव में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द होते हैं। वे खण्डवाचक संख्याओं का 'यकन' करते हैं। प्रायः एक, दो तथा तीन गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ प्रयोग में। जैसे एक तिहाई दो तिहाई एक चौथाई दो चौथाई इत्यादि।

आधा तथा पौना खण्डवाचक संख्या शब्द अपने रूप के अनुसार विकाश विधेयण शब्द हैं। उनके लिए वचन तथा कारक रूप अपने विभाज्य के अनुसार बदलते हैं। जैसे आधी दजन, आधा घण्टा आध घण्टे तक, पौना घण्टा पौन

घण्टे में आदि। 'आधा' सरया शब्द पुल्लिङ्ग सज्ञा शब्द की भाँति प्रयुक्त हो सकता है। जैसे आधे से कुछ अधिक। दोष खण्डवाचक सरया शब्द अविकारी होते हैं। 'डेढ़', 'ढाई' तथा 'अढ़ाई' खण्डवाचक सग्या शब्दों के साथ या सौ, 'हजार', 'लाख' 'करोड़' आदि जैसे गणनावाचक सरया शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे डेढ़ दिन, ढाई दिन, अढ़ाई दिन, डेढ़ सौ, डढ़ हजार डेढ़ लाख, डेढ़ करोड़, ढाई सौ और ढाई हजार, ढाढ़ लाख, ढाई करोड़ आदि। 'पीने' 'साँठे' खण्डवाचक सरया शब्द केवल गणनावाचक सरया शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। उनमें 'साँठे' खण्डवाचक सग्या शब्द का प्रयोग गणनावाचक तान सग्या शब्दों से लेकर अगली सब गणनावाचक सरयाओं के साथ ही होता है।

'पीने', 'साँठे', 'डेढ़', 'ढाई', 'अढ़ाई' तथा 'साँठे' खण्डवाचक सग्या शब्द समय बताने के लिए भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे पीने दो बजे (१५) साँठे चार बजे (४१५), डेढ़ बजे (१३०) ढाई बजे (२३०), साँठे पाँच बजे (५३०)।

भि न

हिंदी में तीन प्रकार की भिन्न होती है—परल भि न, दशमलव भि न तथा मिश्र भि न।

सरल भि न तीन या चार शब्दों वाले शब्द समुदाय से व्यक्त की जाती है। इसमें पहले के सग्या शब्द होते हैं जो पूर्णांक होते हैं दूसरे सग्या शब्द भाग्य को सूचित करने हैं, तीसरा शब्द 'बटना' क्रिया का सामान्य भूतकालिक वृद्धत 'बटा' होता है जो भाग करने का व्यापार सूचित करता है और चौथा सग्या शब्द भाजक को सूचित करता है। भि न में जब कोई पूर्णांक होना है तब चार शब्दों का समुदाय उस भि न का व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है अथवा तीन शब्दों का ही समुदाय प्रयुक्त होता है। जैसे (१) पाँच पूर्णांक साँठे आठ (= ५३३)। (२) चार बजे पाँच (= ५) पूर्णांक के स्थान पर सही शब्द का व्यवहार भी होना है।

दशमलव भि न इस तरह लिखा तथा पढ़ी जाती है—जैसे ०.७ को पढ़ेंगे नूय दशमलव साँठे। ०.७८ को पढ़ेंगे नूय दशमलव साँठे आठ। ३.६२ को पढ़ेंगे तीन दशमलव चार तीन।

मिश्र भि न वे हैं जिनमें सरल भि न तथा दशमलव भि न का

संयुक्त रूप से प्रयोग होता है। जैसे २३-१ ७८। इस तरह की मिश्र भिन्न का पढ़ेंगे दो पूर्णांक तीन बटे पांच योग एर दसमल्व साठ आठ।

समुदायवाचक संख्या शब्द

समुदायवाचक संख्या शब्द वस्तुओं की मात्रा एक समूह के रूप में सूचित करते हैं। उनका निर्माण गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ ओ प्रत्यय के संयोजन से होता है। जैसे दोना तीना चारो इत्यादि।

आवृत्तिवाचक संख्या शब्द

आवृत्तिवाचक संख्या शब्दों का निर्माण गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ गुना प्रत्यय के संयोजन से होता है। दा तीन चार पांच सात आठ के मूल रूपों में 'गुना' प्रत्यय के संयोजन से परिवर्तन विकल्प में हो सकता है। जैसे दोगुना, या दुगुना। तीनगुना या तिगुना। चारगुना या चौगुना आदि।

आवृत्तिवाचक संख्या शब्दों का अपन विशेष्य के अनुसार लिंग वचन तथा कारक में रूप कभी बदलता है कभी नहीं बदलता है। जैसे पंचगुनी वृद्धि। मातगुना विस्तार के लिए।

'लगभग' मात्रा की अभिव्यक्ति

हिन्दी में लगभग मात्रा व्यक्त होती है—

- (क) गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ लगभग करीब तथा तबरीबन शब्दों के प्रयोग से। जैसे लगभग पांच बजे। करीब दस रुपये। तबरीबन बीस आदमी।
- (ख) गणनावाचक संख्या शब्दों के साथ कोई अनिश्चितवाचक संघ नाम के प्रयोग से। जैसे कोई तीस व्यक्ति।
- (ग) गणनावाचक संख्या शब्दों के पश्चात् एक संख्या शब्द के प्रयोग से। जैसे सात एक कापिया।
- (घ) दो गणनावाचक संख्या शब्दों के एक साथ प्रयोग से। जैसे दो चार तीन चार आदमी चाहिए।

क्रमवाचक संख्या शब्द

'एक दो तीन चार तथा छ' गणनावाचक संख्या शब्दों के क्रमवाचक रूप क्रमा होने हैं पहला दूसरा तीसरा, चौथा तथा छठा।

मौ ममेन नप नमवाचक सत्या गदा के पाछे वा प्रत्यय जाडन से । जय पाचवा सातवा नसका पचासवाँ मौवा ।

समुक्त नमवाचक सत्या गदा का निमाण समुक्त गणनावाचक सत्या-गदा के समुदाय के अन्तिम भाग के साथ 'वा' प्रत्यय जाडन से होता है । जैम चार सौ बीसवा ।

हिंदी में नमवाचक सत्या गदा अपने विगद्य के अनुसार लिंग वचन तथा कारक में अपना रूप बदलता है । नमवाचक सत्या गदा का विकार विकारी विशेषणों की भांति होता है । जैम चौथा लड़का, चौथी लड़की चौथे लड़के की चौथी लड़की की चौथे लड़के, चौथी लड़का । पाचवा जिन पाचवें दिन के लिए, पाचवी तिथि पाचवा तिथि का ।

समुक्त नमवाचक सत्या गदा में विकारी शब्द है अन्तिमिक शब्द । जय दो सौ तीसवाँ आदमी । दो सौ तीसवें आत्मा का, दो सौ तीसवाँ स्त्री ।

'दूसरा' नमवाचक सत्या गदा जैम गदा के अथ में भी प्रमुख दिया जाता है । जय उन लोगों के अथवा दूसरा आत्मा भी महा आया था ।

वाक्य में नमवाचक सत्या गदा प्रायः गुणनिर्देशक ह्रास्व ह या विधर्म के नामिक अग होते हैं । जैसे (१) वह उनका तीसरा बच्चा है । (२) हमारा गाड़ी का डिब्बा इसका है ।

मज्ञा गदा के साथ प्रमाण में नमवाचक सत्या गदा वाक्य में विशेषतादीर्घको का वाय भी कर सकत है । जय सड़क के दूसरी ओर मरा मित्र खड़ा था । (२) वह बीसवीं फरवरी को आयेगा ।

हिंदी में कभा-कभी मस्कृत के नमवाचक सत्या-गदा का प्रमाण होता है । जय प्रथम द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम आदि ।

समुच्चय रूप से प्रयोग होता है। जैसे $2\frac{1}{2} + 1 = 3\frac{1}{2}$ । इस तरह की मिश्र भिन्न का पढ़ने दो पूर्णांक तीन बटे पांच योग एक दशमलव सात आठ।

समुदायवाचक सख्या शब्द

समुदायवाचक सख्या शब्द वस्तुओं की मात्रा एक समूह के रूप में सूचित करने हैं। उनका निर्माण गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ 'आ' प्रत्यय के संयोजन से होता है। जैसे दोनो, तीना, चारो इत्यादि।

आवृत्तिवाचक सख्या शब्द

आवृत्तिवाचक सख्या शब्दों का निर्माण गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ गुना प्रत्यय के संयोजन से होता है। दा तीन, चार, पांच, सात, आठ के मूल रूपों में गुना प्रत्यय के संयोजन से परिवर्तन विकल्प से हो सकता है। जैसे दोगुना या दुगुना। तीनगुना या तिगुना। चारगुना या चौगुना आदि।

आवृत्तिवाचक सख्या शब्दों का अपने विशेष्य के अनुसार लिंग, वचन तथा कारक में रूप कभी बदलना है कभी नहीं बदलता है। जैसे पंचगुनी बढ़ि। सातगुना विग्नार के लिए।

'लगभग' मात्रा की अभिव्यक्ति

हिंदी में 'लगभग' मात्रा व्यक्त होती है—

- (क) गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ 'लगभग' करीब' तथा 'तकरीबन' शब्दों के प्रयोग से। जैसे लगभग पाँच बजे। करीब दस रुपये। तकरीबन बीस आदमी।
- (ख) गणनावाचक सख्या शब्दों के साथ कोई अनिश्चयवाचक संघ नाम के प्रयोग से। जैसे कोई तीस व्यक्ति।
- (ग) गणनावाचक सख्या शब्दों के पश्चात् एक सख्या शब्दों के प्रयोग से। जैसे मात्र एक कापिया।
- (घ) दो गणनावाचक सख्या शब्दों के एक साथ प्रयोग से। जैसे दो, चार, तीन, चार आदमी चाहिए।

क्रमवाचक सख्या शब्द

एक, दो, तीन, चार तथा 'छ' गणनावाचक सख्या शब्दों के क्रमवाचक रूप क्रम में होते हैं पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा तथा छठा।

'मौ मम नैष क्रमवाचक सख्या-ग-ग के पीढ़ का प्रत्यय जाडन में । जम पाचवा, मानवी दमवा पचामवा सीवा ।

मयुक्त क्रमवाचक सख्या-ग-ग का निमाण मयुक्त गगनावाचक मय्या ग-ग क ममुदाय के अन्तिम भाग क माय 'वा प्रत्यय जाडन में होता है । जम चार मौ बीमवा ।

हिन्दा में क्रमवाचक सख्या-ग-ग अपन विगप्य के अनुसार लिग वचन तथा कारक में अपना रूप बदलत है । क्रमवाचक सख्या-ग-ग का विकार विकारी विगप्या की भांति होता है । जम चौया लडका, चौयी लडकी, चौय लडके को चौयी लडकी को, चौये लडक चौयी लडकी । पाचवा दिन पाचवें दिन के लिए, पाचवी नियि पाचवी नियि को ।

मयुक्त क्रमवाचक सख्या-ग-ग दो में विकार होता है अन्तिमिक ग-ग । जम दो सौ तीसवा आदमी । दो सौ तीसवें आदमा का, दो सौ तीसवीं स्त्री ।

'दूमरा क्रमवाचक सख्या-ग-ग जय ग-ग के जय में भी प्रयुक्त होता जाता है । जस उन लोग के अलावा दूमरा आदमा भा यह आया था ।

वाक्य में क्रमवाचक सख्या-ग-ग प्राय गुणनिर्णयक होते हैं या विघ्न के नामिक भग होते हैं । जम (१) वह उनका तीसरा बच्चा है । (२) गाड़ी का डिब्बा दसवा है ।

सर्वनाम

सर्वनाम ऐसे शब्द हैं जो मना गये विषय तथा सत्यता के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। सना गये विषय तथा सत्यता शब्दों से सर्वनामों का यह भेद है कि वे वस्तुओं तथा उनकी विशेषताओं और निश्चित मात्राओं को साक्षात् नहीं बताते हैं केवल उनका निर्देश करते हैं। सर्वनामों का अपना कोई स्थायी अर्थ नहीं होता है वे उस शब्द का अर्थ ग्रहण कर लेते हैं जिसके स्थान पर वे प्रयुक्त होते हैं। इसलिए प्रसंग से ही पता चलता है कि क्या वस्तु विशेषता या मात्रा अमुक सर्वनाम सूचित कर रहा है।

अपने अर्थों के अनुसार हिन्दी में सर्वनामों के निम्नलिखित भेद हैं—

- (१) पुरुषवाचक सर्वनाम। जैसे मैं तू यह वह तुम हम आप मैं वे।
- (२) निर्देशवाचक। जैसे यह, वह य, व, एसा, वैसा इतना उतना।
- (३) प्रदानवाचक। जैसे क्या कौन कसा, कौन सा कितना।
- (४) स्वामित्ववाचक। जैसे मेरा तेरा हमारा तुम्हारा अपना।
- (५) निजवाचक। जैसे आप।
- (६) सम्बन्धवाचक। जैसे जो जैसा जितना।
- (७) निश्चयवाचक। जैसे आप स्वयं, खुद सब सारा तमाम समूचा हर, प्रति प्रत्येक।
- (८) अनिश्चयवाचक। जैसे कोई कुछ कई अनेक चार, पाँच।

हिन्दी में नकारात्मक सर्वनाम नहीं हैं। उनका काम करते हैं 'कोई', तथा 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनामों के साथ नहीं तथा 'न' निपाता के प्रयोग।

सर्वनामों का प्रयोग

पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनामों का तीन पुरुष हान है—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अथ पुरुष । उनमें एकवचन तथा बहुवचन हान हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम, आप
अथ पुरुष	यह, वह	ये, वे

पुरुषवाचक सर्वनामों का अपना कोई स्थायी लिंग नहीं होता है । व जिस शब्द के स्थान पर प्रयुक्त हान हैं उसी शब्द के अनुसार वाक्य में उनका लिंग निर्धारित होता है । सब पुरुषवाचक सर्वनाम वाक्य में स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त हान हैं । व उद्देश्य, क्रम तथा विधेय के नामिक अंग का कार्य करते हैं ।

‘मैं’ सर्वनाम बोलता अपने बारे में कोई बात व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।

‘तू’ सर्वनाम उस व्यक्ति को सूचित करता है जिसको सम्बोधन करके बात कही जाती है । ‘तू’ सर्वनाम का प्रयोग अपनाकृत क्रम होता है । वह प्रायः तब प्रयुक्त होता है जब किसी छोट बच्चे को बहुत घनिष्ठ व्यक्ति को, भगवान् एवं अभीष्ट देवता को या अनादर भाव सूचित करने का सम्बोधन करने कुछ कहा जाता है ।

‘हम’ सर्वनाम व्यक्तियों के ऐसे समूह का सूचित करता है जिसमें उत्तम पुरुष के बराबर या एक से अधिक अन्य व्यक्ति भी होते हैं ।

‘तुम’ सर्वनाम दो या दो से अधिक उन व्यक्तियों का सूचित करता है जिनका सम्बोधन करके बात कही जाती है । ‘तुम’ सर्वनाम सामान्य सम्बोधन में अत्यन्त अधिक प्रयुक्त होता है । इस सर्वनाम का प्रयोग एक व्यक्ति का भी सम्बोधन करके कहा जा सकता है । ‘तुम’ का यह प्रयोग होता है प्रायः मायियाँ घनिष्ठ मित्र तथा सम्बन्धियों का सम्बोधन करने के लिये ।

‘यह’ सर्वनाम मध्यम पुरुष का कार्य करने हुए विधेय आत्मसूचक सम्बोधन में प्रयुक्त होता है । उसके साथ क्रिया का रूप बहुवचन अथपुरुष का प्रयुक्त होता है । जहाँ आर का ज्ञान है ?

‘यह’, ‘वह’, ‘ये’, ‘वे’ सर्वनाम उन व्यक्ति या वस्तु का सूचित करने

हैं जिसके बारे में बात हो रही होगी है। यह तथा ये' मवनाम निकटवर्ती व्यक्ति या वस्तुओं को सूचित करते हैं। वह तथा 'वे' सबनाम दूरवर्ती या अनुपस्थित व्यक्ति या वस्तु को सूचित करने हैं।

बहुवचन अथ म ये तथा वे के स्थान पर कभी-कभी यह तथा वह भी प्रयुक्त किये जाते हैं। ये व तथा यह वह' का प्रयोग प्रायः अनेक व्यक्तियों के स्थान पर केवल एक व्यक्ति के लिए किया जाता है। इस तरह का प्रयोग में आदर का भाव सूचित होता है। अतः किया बहुवचन किया प्रयुक्त होती है। जैसे (१) यह (ये) यहाँ पढ़ते हैं। (२) वह (वे) शिक्षक हैं।

ये 'व' यह वह एक या अनेक व्यक्ति या वस्तु के लिए वाक्य में प्रयुक्त हुए हैं इसका प्रयोग में पता लगता है।

एकवचन अथपुरुष के अथ में प्रायः आप' मवनाम का प्रयोग होता है। ऐसे प्रयोग से उस व्यक्ति के प्रति आदर व्यक्त किया जाता है जिसका नाम का उल्लेख हुआ चुका है। जैसे आज सावजनिक सभा में मंत्री महोदय ने भाषण किया। भाषण में 'आपने जनता से शांति का मुद्दा करने की अपील की।

निर्देशवाचक सबनाम

यह तथा 'ये' निर्देशवाचक सबनाम निकटवर्ती व्यक्ति या वस्तुओं को सूचित करते हैं। वह तथा वे सबनाम दूरवर्ती तथा अनुपस्थित व्यक्ति या वस्तुओं का सूचित करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। उनका अपना कोई लिंग नहीं होता है। जैसे यह लड़का यह लड़की। ये लड़के ये लड़कियाँ।

बहुवचन अथ म बहुधा ये तथा वे के स्थान पर यह तथा वह का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे यह (ये) पुस्तकें हैं।

ये तथा वे मवनाम एक व्यक्ति के प्रति आदरसूचक भाव व्यक्त करने के लिए भी प्रयुक्त होते हैं।

'ऐसा, वसा, 'इतना' तथा 'उतना' निर्देशवाचक सबनाम गुणनिर्देशक के रूप में या स्वतंत्र रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे ऐसा आदमी बसा आदमी इतना दूध ऐसा के लिए 'तनो को।

एसा तथा वसा सबनाम गुणा का निर्देश करते हैं और इतना तथा उतना सबनाम मात्रा का। जैसे एसी पुस्तक। इतनी पुस्तकें।

एसा तथा इतना मवनाम निकटवर्ती व्यक्ति या वस्तु का निर्देश करने के लिए वसा तथा उतना किन्हीं दूरवर्ती एवं अनुपस्थित व्यक्ति या वस्तुओं का।

प्रदत्तवाचक सवनाम

प्रदत्तवाचक सवनाम किसी व्यक्ति या वस्तु, उनकी विशेषता या स्वामित्व या उनकी सख्या के विषय में प्रदत्त व्यक्ति करने के लिए प्रयुक्त होता है।

'क्या' तथा कौन प्रदत्तवाचक सवनाम का लिंग नहीं होता है। सामान्य तौर पर उनके बहुवचन रूप नहीं होते हैं। ये सवनाम किसी भी लिंग तथा वचन के सहा गठन के साथ व्यवहृत हो सकते हैं। जैसे क्या पुस्तक ? क्या पुस्तकें ? कौन पुरुष ? कौन स्त्रियाँ ?

असामान्य तौर पर ये प्रदत्तवाचक सवनामों का वचन विशेष्य सहा गठनों के अनुसार होता है।

'क्या' सवनाम का प्रयोग स्वतन्त्र रूप में या सहा गठन के साथ होता है। स्वतन्त्र प्रयोग में क्या सवनाम जानवरों तथा अप्राणीवाचक वस्तुओं का निर्देश करता है। सहा गठन के साथ उसका प्राणीवाचक तथा अप्राणीवाचक दोनों के साथ प्रयोग होता है तथा वस्तु की विशेषता के बजाय यह सामान्यता का निर्देश करता है। जैसे (१) (प्रश्न) यह क्या है ? (उत्तर) यह कुत्ता है। (२) यह क्या पुस्तक है ? (३) यहाँ क्या आगामी है ?

कौन प्रदत्तवाचक सवनाम प्रायः व्यक्तियों के विषय में प्रयुक्त होता है। यह सवनाम भी स्वतन्त्र रूप में या व्यक्तिवाचक सहा गठन के साथ व्यवहृत होता है। जैसे (१) (प्रश्न) यह कौन है ? (उत्तर) यह हमारा मित्र है। (२) आज कौन विद्यार्थी अनुपस्थित है ?

'कौन' तथा कौनसा प्रदत्तवाचक सवनाम बहुधा सहा गठन के साथ प्रयुक्त होता है। कौन सवनाम वस्तु के गुण का बोध कराता है। 'कौन' या सवनाम का प्रयोग तब होता है जब अनन्त एक ही वस्तुओं में से किसी का निर्देश करना अभीष्ट होता है या जब अनन्त क्रम का सहा गठन की इच्छा होती है। जैसे (१) (प्रश्न) यह कौनसे पक्षी है ? (उत्तर) यह लाल पक्षी है। (२) (प्रश्न) यह कौनसा दिनांक है ? (उ०) वह जून की दिनांक है। (३) तुम्हारे घर का नाम कौनसा है ?

कितना प्रदत्तवाचक सवनाम स्वतन्त्र रूप में या सहा गठन के साथ प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (१) यह कितनी बार ? (२) कितनी बार ? कितना मजें है ?

साथ या स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (i) मंत्र लाग (ii) आज मंत्र उपस्थित हैं।

शेष निश्चयवाचक मन्त्रनामा का प्रयोग सना-शब्दों के साथ होता है। आप स्वयं खुद मन्त्रनाम सना-शब्दों तथा पुष्पवाचक मन्त्रनामा के साथ प्रयुक्त होते हैं। 'तमाम समूचा सारा' 'हर प्रत्येक ब्रह्म सना-शब्दों के साथ व्यवहृत होते हैं। गणनीय सना-शब्द सब तथा तमाम मन्त्रनामा के साथ प्रयोग में बहुवचन में होता है जबकि हर प्रति, प्रत्येक मन्त्रनामा के साथ एकवचन में। प्रति मन्त्रनाम प्रायः त्रियाविंशत्यक्षर शब्द समुदाय में प्रयुक्त होता है। जैसे प्रतिष्ठा प्रतिव्यक्ति।

तमाम समूचा, 'सारा हर प्रति प्रत्येक मन्त्रनाम अपने विनोद से पहले प्रयुक्त होते हैं। आप तथा स्वयं मन्त्रनाम विनोद में पहले या पश्चात् कहीं भी प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे मैं आप हम खुद खुद हम व स्वयं य सब मन्त्र य।

अनिश्चयवाचक मन्त्रनाम

अनिश्चयवाचक मन्त्रनाम अज्ञात अनिश्चित यज्ञिया तथा यन्त्रुजा और उनका विनोदता का निर्देश करते हैं इसलिए उनका अर्थ स्पष्ट नहीं होता है।

अनिश्चयवाचक मन्त्रनामा का लिंग नहीं होता है। अनिश्चयवाचक मन्त्रनामा का प्रयोग या सना-शब्दों के साथ होता है या स्वतंत्र रूप में। वे सना विनोद में पूरे प्रयुक्त होते हैं। कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक मन्त्रनाम एकवचन में या बहुवचन अर्थ में प्रयुक्त हो सकते हैं किन्तु कई चन्द्र तथा बाज ब्रह्म बहुवचन अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। चन्द्र चन्द्र तथा बाज ब्रह्म गणनीय सना-शब्दों के साथ इन्मेमाल होता है। कुछ तथा काइ गणनीय तथा अगणनीय दाना ही सना-शब्दों के साथ व्यवहृत हो सकते हैं। गणनाय सना-शब्द कुछ कई अनेक चन्द्र तथा 'बाज मन्त्रनामा के साथ मन्त्र ब्रह्म वचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे कुछ पुस्तकों कई (चन्द्र बाज) लड़के।

संयुक्त मन्त्रनाम

संयुक्त मन्त्रनाम पृथक् श्रेणी के मन्त्रनाम हैं। वे अपने-अपने अनुसार समुक्त मन्त्रनामा का ऊपर वर्णित मन्त्रनामा के किमी न किमी भेद में समावेश हो सकते हैं परन्तु मन्त्रनामा के मन्त्र भेद से उनका भिन्नता इसलिए है क्योंकि

उनमें एक शब्द नहीं बल्कि एक से अधिक शब्द होते हैं। समुक्त सवनाम स्वतंत्र रूप से या सना-शब्दों के साथ भी प्रयुक्त होते हैं। समुक्त सवनामों का निर्माण होता है—

- (क) जो सब हर सवनामा तथा 'और विशेषण के साथ कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक सवनामों के समायोजन से। जैसे जो कोई 'सब कोई, 'हर कोई, 'और कोई, कोई और जो कुछ' सब कुछ और कुछ' कुछ और।
- (ख) कोई तथा कुछ अनिश्चयवाचक सवनामों के साथ एक सम्यवाचक तथा भा निपात के समायोजन से। जैसे कोई एक, 'एक कोई' 'कोई भी कुछ एक, कुछ भी।
- (ग) 'हर' निश्चयवाचक सवनाम के साथ एक सख्या शब्द के संयोजन से।
- (घ) 'कोई' तथा कुछ अनिश्चयवाचक सवनामों की पुनरुक्ति से जिनके बीच 'न' निपात होता है। जैसे कोई-न कोई, कुछ न-कुछ।
- (ङ) कोई तथा 'कुछ अनिश्चयवाचक सवनामों की पुनरुक्ति से। जैसे कोई-कोई कुछ कुछ।

वाक्य में सवनामों का कार्य

सवनाम ऐसा विशेष शब्द है जिसका सना शब्द विशेषण और सख्या-शब्दों के साथ सम्बन्ध होता है। अपने विकारी रूपों, ऊपर वर्णितों से सम्बन्ध तथा वाक्य में अपने कार्यों के अनुसार हिन्दी में सवनामों के निम्नलिखित तीन प्रकार हैं—

'सना सवनाम, विशेषण सवनाम तथा 'सख्या सवनाम।

हिन्दी में बहुधा एक ही सवनाम वाक्य में अपने कार्य के अनुसार सना सवनाम या विशेषण सवनाम के रूप में प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (i) कौन आया है? (ii) कौन आया है? (iii) ऐसा वा घर में न आना। (iv) ऐसा घर मुझे पसन्द है।

सजा सवनाम वाक्य में सना-शब्दों का निर्माण करता है। उनमें समाविष्ट हैं—

(क) मात्रे पुरुषवाचक सवनाम।

(ख) 'कौन तथा क्या प्रश्नवाचक सवनाम।

(ग) 'आप' निजवाचक सवनाम ।

(घ) निजवाचक सवनाम के अथ म प्रयुक्त 'अपना' स्वामित्ववाचक सवनाम ।

(ङ) जो सम्बन्धवाचक सवनाम ।

(च) 'सब', 'हर' हर एक 'प्रत्येक' निश्चयवाचक सवनाम ।

(छ) 'कोई' और कुछ अनिश्चयवाचक सवनाम ।

कुछ सवनाम को छोड़कर सब सना सवनाम कारक म विकारी होने हैं । सना सवनाम का अपना कोई लिंग नहीं होता है । सामान्य कारक म एकवचन म बदलते हैं केवल उत्तम तथा मध्यम पुरुष के पुरुषवाचक सवनाम । असामान्य कारक म 'कोई' कुछ तथा आप सवनामो को छोड़कर सबके बहुवचन रूप हान हैं ।

विशेषण सवनाम वाक्य म विशेषणो तथा क्रमवाचक सवनाम का निर्देश करत है । विशेषणा की तरह वे वाक्य मे प्राय सना गद्दो क साथ प्रयुक्त हान है । उनमे परिगणित होने है—

(क) इतना तथा उतना सवनामो को छोड़कर नेप निर्देशवाचक सवनाम ।

(ख) कितना सवनाम को आन्तर अथ प्रश्नवाचक सवनाम ।

(ग) स्वामित्ववाचक सवनाम ।

(घ) कितना सवनाम को छोड़कर अथ सम्बन्धवाचक सवनाम ।

(ङ) निश्चयवाचक सवनाम ।

(च) 'कोई' तथा कुछ अनिश्चयवाचक सवनाम ।

मयुक्त सवनाम सना सवनामो या विशेषण सवनामो की भाति वाक्य म प्रयुक्त हो सकते हैं ।

सख्या सवनाम वाक्य म सख्या गद्दो का निर्देश करते है । गणना वाचक सख्या गद्दो की भाति वे वाक्य म उद्देश्य कम तथा गुणनिर्णय के रूप म प्रयुक्त हो सकते हैं ।

सख्या सवनामो म परिगणित हान हैं —

(क) इतना तथा 'उतना' निर्देशवाचक सवनाम ।

(ख) कितना प्रश्नवाचक सवनाम ।

(ग) कई 'अनेक' च २ तथा बाज अनिश्चयवाचक सवनाम ।

सर्वनामो का विकार

सज्ञा-सर्वनामो का विकार

सच्चा सर्वनामा के विकार में भी वही नियम लागू होने हैं जो मनाओ के विकार में लागू होने हैं। तदनुसार सच्चा सर्वनामा के सामान्य कारक में रूप विभक्तिचिह्ना के बिना होते हैं तथा असामान्य कारक में रूप विभक्तिचिह्नों के साथ प्रयुक्त होते हैं। परंतु सच्चा सर्वनामा के विकार की कुछ निश्चित विशेषताएँ हैं—

(क) उनके सम्बोधन कारक होने हैं।

(ख) उनके सामान्य कारक रूप सामान्य कारक रूपा से बहुत भिन्न होते हैं।

(ग) कुछ सज्ञा सर्वनामा के विशेष बहुवचन असामान्य कारक रूप होते हैं जो न विभक्ति चिह्न के साथ प्रयुक्त होते हैं।

(घ) अधिकतर सच्चा सर्वनामा का कम कारक होता है जिसमें एक वचन में 'ए' कारकात् प्रत्यय होता है तथा बहुवचन में 'ए' या 'ह' कारकात् प्रत्यय होते हैं। प्रयोग के अनुसार यह कम कारक को विभक्तिचिह्न सहित असामान्य कारक रूप के समान होता है।

इस प्रकार सम्बोधन कारक के अभाव में होने भी 'आप' 'मैं', कोई' तथा कुछ सर्वनामा का छोड़कर शेष सच्चा सर्वनामा के तीन कारक होते हैं सामान्य कारक, असामान्य कारक और कम कारक।

सच्चा-सर्वनामा का सामान्य कारक रूप शब्दकोश में लिया गया रूप होता है।

असामान्य कारक विभक्तिचिह्ना के साथ प्रयुक्त सर्वनामो का रूप होता है। सर्वनामा के असामान्य कारक रूप का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता है उनके अर्थ का निर्धारण उस विभक्तिचिह्न द्वारा होता है जिसके साथ वे प्रयुक्त होते हैं।

कम कारक स्वतंत्र रूप से विभक्तिचिह्ना के बिना प्रयुक्त होते हैं। यह सम्प्रदान और कम का अर्थ देता है।

पुरुषवाचक सवनाम

कारक	उत्तम पुरुष		मध्यम पुरुष		अन्य पुरुष	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	मैं	हम	तू	तुम	यह वह य, व	
असामान्य कारक	मुझ	हम	तुझ	तुम	इस उस इन उन	
ने के साथ प्रयुक्त						
असामान्य कारक	मैं	हम	तुम	तुम	इस उस इहा उन्हा	
कम कारक	मुघ	हमे	तुझे	तुम्ह	इसे उस इ'ह, उ'ह	

उपरोक्त तालिका में पता चलता है कि आप 'सवनाम' के विकारी रूप नहीं होते हैं। हम तथा तुम उत्तम तथा मध्यम पुरुष वाले सवनामों के असामान्य कारक रूप उनके रूपों के समान होते हैं। ने के साथ प्रयुक्त उत्तम तथा मध्यमपुरुष वाले सवनामों के असामान्य कारक रूप भी सामान्य कारक के समान होते हैं। अन्य पुरुष वाले सवनाम यह तथा वह ये तथा वे ने के साथ विभिन्न असामान्य कारक रूप में प्रयुक्त होते हैं।

इसके अलावा उल्लेखनीय बात यह है कि दोनों वचनों के उत्तम तथा मध्यमपुरुष वाले पुरुषवाचक सवनामों का असामान्य कारक रूप उन जिनके विभक्तिचिह्न के साथ प्रयुक्त नहीं होता है जिनका पूरा भाग होता है के या 'नी' विभक्तिचिह्न। उन पुरुषवाचक सवनामों के असामान्य कारक रूप के स्थान पर स्वामित्ववाचक सवनामों का प्रयोग होता है।

'क्या' तथा 'कौन' प्रश्नवाचक सवनाम

कारक	एकवचन		बहुवचन	
सामान्य कारक	क्या	कौन	क्या	कौन
असामान्य कारक	किस	किस	किन	किन
ने के साथ प्रयुक्त				
असामान्य कारक	किस	किस	किहा	किहा
कम कारक	किसे	किस	किह	किह

जैसा कि ऊपर दी गई तालिका से स्पष्ट है, क्या तथा कौन सवनामों के विकारी रूप एक ही होते हैं। बहुवचन में उनका विशेष असामान्य कारक रूप है जो केवल ने के साथ प्रयुक्त होता है।

‘आप’ निजवाचक सवनाम

‘आप’ निजवाचक सवनाम का कम कारक नहीं होता है और उसका असामान्य कारक म रूप प्रायः सामान्य कारक क रूप जैसा होता है। उदाहरणार्थ, आपकी, आपम, आपम।

कभी-कभी आप’ सवनाम का पुगना असामान्य कारक रूप ‘आपम’ प्रयुक्त होता है। इस पुगने रूप का प्रयोग केवल ‘का’ तथा ‘म’ विभक्तिचिह्नों के साथ होता है। जैसे आपस का, आपस म।

जमा उल्लेख किया जा चुका है निजवाचक सवनाम का काम बहुधा किसी भी विभक्तिचिह्न के साथ ‘अपना स्वामित्ववाचक सवनाम का असामान्य कारक कर रहा होता है। जैसे अपने का अपने स, अपने म।

आप तथा ‘अपना सवनाम दोनों वचना के ज्यों में प्रयुक्त होते हैं तथा वे दोनों णिगा में तीनों पुरुषों में सम्बंधित हो सकते हैं। ‘आप तथा ‘अपना के एक साथ प्रयोग में दोनों सवनाम अपने अर्थ का अनिश्चयता का प्रकट किया करते हैं। जैसे अपने आप का अपने आप स।

जब अपना सवनाम सचा-सवनाम की भांति प्रयुक्त होता है तब उसका विकार आकारान्त सचा णिगा के समान होता है।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	अपना	अपने
असामान्य कारक	अपने	अपना
सम्बोधन कारक	अपना ! अपने !	अपना !

‘जो’ सम्बन्धवाचक सवनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	जो	जो
असामान्य कारक	जिम	जिन
न’ के साथ प्रयुक्त		
असामान्य कारक	जिम	जिहा
कम कारक	जिस	जिह

अब पुरुष वाले सवनाम तथा ‘क्या और ‘कौन’ प्रश्नवाचक सवनामों

की भाँति जो 'सम्बन्धवाचक सवनाम' का 'ने' विभक्ति चिह्न के साथ प्रयुक्त होने वाला विशेष असामान्य कारक रूप है।

निश्चयवाचक सवनाम

सजा भवनाम के रूप में प्रयुक्त 'सब' निश्चयवाचक सवनाम के दो कारक होते हैं—सामान्य कारक तथा असामान्य कारक। जैसे सब, सबों। परन्तु सब सवनाम विभक्तिचिह्न के साथ सामान्य कारक के रूप में भी प्रयुक्त हो सकता है। जैसे सरको, सबके साथ इत्यादि।

हर हर एक प्रत्येक निश्चयवाचक सवनाम अविकारी होते हैं।

अनिश्चयवाचक सवनाम

सजा सवनामों के रूप में प्रयुक्त कोई अनिश्चयवाचक सवनाम के असामान्य कारक का एकवचन तथा बहुवचन में एक ही रूप होता है। 'मी' रूप का उपयोग ने विभक्तिचिह्न के साथ भी होता है। जैसे सामान्य कारक है कोई और असामान्य कारक है किनो'। 'कुछ अनिश्चयवाचक सवनाम अविकारी हैं।

विशेषण सवनाम का विकार

विशेषण की भाँति विशेषण सवनाम विकार की विशेषणवाचक अनुसार विकारी तथा अविकारी दो तरह के होते हैं। विकारी विशेषण सवनाम अपने विशेष्य सजासदा के अपने रूप बदलते हैं। अविकारी विशेषण सवनामों के रूप अपरिवर्तित रहते हैं। विकारी विशेषण सवनामों में समाविष्ट हैं निम्नलिखित सवनाम—

(क) 'यह, वह, य, वे ऐसा' तथा वना निर्देशवाचक सवनाम।

(ख) 'किस, कौन, कसा तथा कौन सा' प्रश्नवाचक सवनाम।

(ग) मेरा, तूरा, हमारा, तुम्हारा तथा अपना स्वामित्ववाचक सवनाम।

(घ) जो तथा जसा सम्बन्धवाचक सवनाम।

(ङ) ममूचा तथा मारा निश्चयवाचक सवनाम।

(च) कोई अनिश्चयवाचक सवनाम।

अविकारी विशेषण सवनामों में समाविष्ट हैं निम्नलिखित—

(क) आप, स्वयं, 'बहुद' 'सब' 'तमाम', 'हर', 'प्रत्येक' निश्चय

वाचक मवनाम ।

(ख) 'कुछ' अनिश्चयवाचक मवनाम ।

'यह', 'वह' ये, वे तथा 'जो' विधेयण-मवनामा का कारक रूप अपने विधेय्या के अनुसार बदलता है ।

'एमा' 'वमा', 'वैमा', 'कौन मा', 'मेरा' तरा 'तुम्हारा', 'हमारा', 'अपना' 'जैमा', 'ममूचा', 'मारा' विधेयण सबनाम अपन विधेय्य सना शब्दा के अनुसार आकारात्त विकारी विधेयणा की भाति लिंग, वचन तथा कारक में बदलत हैं । जम ऐमा लड्का ऐमे लड्के ऐमी लड्की ऐसी लड्किया एम लड्के को, एमी लड्की का मेरी पुस्तक मेरी पुस्तक, मेरी पुस्तक में ।

कोई विधेयण मवनाम अपने विधेय्य सना शब्द के अनुसार प्राय कारक में बदलता है ।

निर्देशवाचक सबनाम

'यह', 'वह' 'य' तथा वे निर्देशवाचक मवनामा के केवल दो कारक होते हैं—सामाय कारक तथा असामाय कारक ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामाय कारक	यह	य
	वह	व
असामाय कारक	इस	इन
	उस	उन

'एमा तथा वसा' निर्देशवाचक मवनामो के दो कारक होते हैं—सामाय कारक तथा असामाय कारक । पुल्लिंग में दोनों वचना का कारक रूप बहुवचन के सामाय कारक के रूप के समान होता है । स्त्रीलिंग में दोनों वचना में ई अत्य प्रत्यय सामाय है ।

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सामाय कारक	एमा	एमी	एमे	ऐसी
	वैमा	वमी	वसे	वैमा
असामाय कारक	एमे	एमो	एमे	एमो
	वम	वैमी	वसे	वैमी

प्रश्नवाचक सवनाम

‘क्या तथा कौन प्रश्नवाचक सवनामों के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। ‘क्या तथा ‘कौन सवनामों के असामान्य कारक एक जते होते हैं।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	क्या	क्या
	कौन	कौन
असामान्य कारक	किस	किन
	किस	किन

‘क्या तथा ‘कौन प्रश्नवाचक सवनामों के भी दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। इन सवनामों के रूप भी ऐसा तथा ‘क्या’ निर्देशवाचक सवनामों की भांति वर्तित हैं।

स्वामित्ववाचक सवनाम

‘मेरा, ‘तुम्हारा’ हमारा तुम्हारा तथा अपना स्वामित्ववाचक सवनाम बना गाना के माथ तीनों कारकों अर्थात् सामान्य असामान्य और सम्बोधन कारकों में प्रयुक्त हो सके हैं। सामान्य तथा असामान्य कारक में ये सवनामों के अत्यंत प्रत्यय ग्रहण कर लते हैं जो ‘मेरा तथा ‘तुम्हारा’ निर्देशवाचक सवनामों ग्रहण किया करते हैं। सम्बोधन कारक में उनमें अत्यंत प्रत्यय असामान्य कारकों के अत्यंत प्रत्ययों में होते हैं।

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	स्त्रीलिंग
सामान्य कारक	मेरा	मेरी	मेरे	मेरी
असामान्य कारक	मेरे	मेरी	मेरे	मेरी
सम्बोधन कारक	मेरे	मेरी	मेरे	मेरी

‘मेरा हमारा तुम्हारा तथा अपना स्वामित्ववाचक सवनामों में ‘मेरा सवनाम की तरह अपने कारकों में वर्तित हैं। जब स्वामित्ववाचक सवनामों का प्रयोग जन्म विभक्तिचिह्नों के माथ होता है तब जन्मविभक्तिचिह्नों के पूर्व भाग में या की का लोप हो जाता है और स्वामित्ववाचक

विभक्ति चिह्न का पूव भाग के विभक्तिचिह्न हा या स्त्रीलिङ्ग 'ड' अर्थात् जल्यय ग्रहण कर लेत हैं वसतें जटिल विभक्तिचिह्न का पूव भाग की विभक्तिचिह्न हा । जैसे मये पाव (के पाव) । हमारी आर (की आर) ।

सम्बन्धवाचक सवनाम

'जा' सम्बन्धवाचक सवनाम के दो कारक हात है सामान्य तथा असामान्य ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
सामान्य कारक	जा	जो
असामान्य कारक	जिम	जिनि

जसा सम्बन्धवाचक सवनाम एसा' तथा वसा निर्देशवाचक सवनामा की भाति कारका म अपना रूप बदलत है ।

निश्चयवाचक सवनाम

समूचा' तथा सारा' निश्चयवाचक सवनामा के रूप कारको म एसा' तथा वसा' निर्देशवाचक सवनामा की भाति बदलते है ।

'कोई' अनिश्चयवाचक सवनाम

'कोई' अनिश्चयवाचक सवनाम क दो कारक है सामान्य तथा जसा माय । सामान्य कारक के दोनो वचना म उसका रूप हाता है 'कोइ' किन्तु असामान्य कारक क एकवचन म किसी' तथा बहुवचन म किही हाता है । जस कोई पुस्तक, काइ पुस्तक । किमा पुस्तक मे किही पुस्तका म ।

समुक्त सवनामो का विफार

'काइ' के साथ निर्मित समुक्त सवनामा क दो कारक हात हैं—सामान्य तथा असामान्य । जस

सवनाम	सामान्य कारक		असामान्य कारक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जो कोई	जा काइ	जा कोई	जिम किसी	जिनि किसी
सब का	—	सब काई	—	सब किसी
हर बोद	हर बोद	—	हर किसी	—

सवनाम	सामान्य कारक		असामान्य कारक	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
और कोई	और कोई	और कोई	और किसी	और किसी
का और	कोई और	काई और	किसी और	किसी और
हमारे कोई	दूसरा कोई	हमारे कोई	हमारे किसी	दूसरे किसी
कोई दूसरा	कोई दूसरा	कोई दूसरा	किसी दूसरा	किसी दूसरा
कोई एक	कोई एक	—	किसी एक	—
एक कोई	एक कोई	—	एक किसी	—
कोई भी	कोई भी	कोई भी	किसी भी	किसी भी
कोई न कोई	कोई न कोई	कोई न कोई	किसी न किसी	किसी न किसी
कोई कोई	कोई कोई	कोई कोई	किसी किसी	किसी किसी

कुछ के साथ निर्मित संयुक्त सवनाम । जैसे 'जा कुछ सब कुछ
'और कुछ इत्यादि । इनके विकारी रूप नहीं होते हैं ।

हर एक संयुक्त सवनाम भी अविकारी है ।

संज्ञा सवनामों का विकार

संज्ञा सवनाम अपने विकारों की विविधता तथा वाक्य में उनके कार्य के अनुसार होते हैं

(क) विकारी । जैसे इतना उतना कितना जितना ।

(ख) आशिक रूप में विकारी । जैसे कइ अनेक तथा बाज ।

(ग) अविकारी । जैसे 'चंद ।

स्वतंत्र प्रयोग में इतना, उतना कितना तथा जितना संज्ञा सवनामों का विकार आकारात् संज्ञा संज्ञा का भान होता है । सजा सजा के साथ प्रयोग में उनके लिये ध्वनन तथा कारक अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं । जैसे इतना दूध इतनी राख इतने घर इतनी बाणियाँ इत्यादि । उद्देश्य के रूप में भी उनके द्वारा सवनाम प्रायः उक्त सजा सजा का लिये ग्रहण कर लते हैं जिसका व निष्पन्न करते हैं । जैसे (i) आज दो विद्यार्थी अनुपस्थित हैं वर भी उतने अनुपस्थित थे । (ii) मर पास पाच पुस्तक हैं आपक पास कितना ?

कई अनेक तथा बाज संज्ञा सवनाम स्वतंत्र प्रयोग में (अर्थात् उद्देश्य तथा कम के रूप में) कारक में अपना रूप बदलते हैं । सजा सजा के

साथ प्रयोग में कारक में वे अविकारी होते हैं। जैसे कई (अनेक, बाज) औरतें। कई (अनेक बाज) औरतों के लिए।

'ब'द सरया सबनाम स्वतंत्र या मना शब्दा के साथ प्रयोग में अविकारी ही रहता है।

जब 'कई', 'अनेक' तथा 'बाज' सग्या सबनाम वाक्य में उद्देश्य का वाक्य करत है तब उनका विधेय बहुवचन में होता है। जैसे क' (अनेक बाज) बाज आये है, कई क'।

मना शब्दा के साथ प्रयोग में 'इतना' 'उतना' 'कितना' तथा 'जितना' सग्या-सबनामा के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। उनके वही अर्थ प्रत्यय होते हैं जो 'एसा' तथा 'बैसा' निर्देशवाचक सबनामा के हान हैं। जैसे

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग
सामान्य कारक	इतना	इतनी	इतने	इतनी
असामान्य कारक	इतने	इतनी	इतने	इतनी

'उतना, कितना' तथा 'जितना' सग्या सबनाम मना शब्दा के साथ प्रयोग में इतना सबनाम की भांति बदलत हैं। स्वतंत्र प्रयोग में इतना 'उतना, 'कितना तथा 'जितना' सग्या-सबनामा के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। जैसे

कारक	एकवचन		बहुवचन	
	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग
सामान्य कारक	इतना	इतनी	इतने	इतनी
असामान्य कारक	इतने	इतनी	इतने	इतनी

ये सबनाम 'इतने' की भांति अपने रूप बदलत हैं।

कई, अनेक तथा 'बाज' सग्या सबनामा के दो कारक होते हैं—सामान्य तथा असामान्य। सामान्य कारक—कई, अनेक, 'बाज'। असामान्य कारक—कग्या, अनेसा, 'बाजा'। परन्तु उक्त सबनाम विभक्तिचिह्ना के साथ कभी-कभी सामान्य कारक के रूप में भी व्यवहृत होते हैं।

सबनामा के निश्चयार्थक रूप

नामो तथा जो सम्बन्धवाचक सवनाम के निश्चयाथक रूप होते हैं जा एकवचन में ही तथा ई निपाता के योग से और बहुवचन में ही तथा इ' निपाता के योग से बनते हैं। निश्चयाथक रूप में उक्त सवनामा का प्रयोग स्वतंत्र रूप से या मना ग-ना के साथ होता है। अयपुरुष के सवनामा तथा निर्देशवाचक सवनामा के निश्चयाथक रूप एकमे होते हैं।

एकवचन		बहुवचन	
सामान्य कारक	असामान्य कारक	सामान्य कारक	असामान्य कारक
मैं ही	मुझी	हम ही, हमी	हमी
तू ही	तुझा	तुम्हा तुम्ही	तुम्ही
यही	इमी	य ही,	इ ही
वही	उसा	व ही	उहा
जो ही	जिसी	जा ही	जिहा

उत्तम तथा मध्यम पुरुष के सवनामा व असामान्य कारक के एकवचन में निश्चयाथक रूप मुझा तथा तुझा को छोड़ करके सवनामा के उक्त मार निश्चयाथक रूप असामान्य कारक में न विभक्तिचित्त के साथ भा प्रयुक्त हान हैं। उत्तम तथा मध्यम पुरुष के सवनाम एकवचन में न विभक्तिचित्त के साथ प्रयोग में असामान्य कारक के रूप में व्यवहृत होते हैं। जैसे मैं ही न यह कहा। तू ही न यह काम किया।

सब सवनाम का निश्चयाथक रूप है ममी। वह स्वतंत्र रूप में या सज्ञा ग-ना के साथ प्रयुक्त होता है।

क्रिया

क्रिया में ऐसे शब्दों का समावेश होता है जो व्यापार या अवस्था को व्यक्त करते हैं।

वाक्य में क्रिया मुख्य रूप से विधेय का वाच्य किया करती है। इसलिए क्रिया के विधेय सम्बन्धी विशेष रूप है—प्रकार (मूड), काल, विधि (ऐम्प्लिट्यूड) वचन, पुरुष इत्यादि।

वस्तुस्थिति के प्रति व्यापार के सम्बन्धों का व्यक्त करने के लिए हिन्दी में क्रिया के चार प्रकार होते हैं—निष्पाद्यक, आनाद्यक, सम्भावनाद्यक तथा सकृताद्यक।

क्रिया के प्रकारों के साथ हिन्दी में काल का घनिष्ठ सम्बन्ध है। कारण क्रिया के व्यापार के समय के साथ क्रिया के व्यापार या अवस्था का सम्बन्ध व्यक्त करता है।

क्रिया के विभिन्न प्रकारों के निष्पाद्यक भेद उत्पन्न-अलग सम्बन्धों होते हैं। निष्पाद्यक प्रकार में १५ क्रियापरक भेद हैं। सम्भावनाद्यक तथा सकृताद्यक प्रकार में चार-चार निष्पाद्यक भेद हैं। आनाद्यक प्रकार में क्रिया के विनाश भेद हैं।

हिन्दी में क्रिया के दो वचन होते हैं—एकवचन तथा बहुवचन। प्रत्येक वचन के तीन पुरुष होते हैं—उत्तम, मध्यम और अन्य।

व्यापार के क्रम की दृष्टि से क्रियाएँ होती हैं सक्रमक तथा अक्रमक। सक्रमक क्रियाओं के साथ प्रधान क्रम होता है जो उस वस्तु का व्यवस्त करता है जिस पर व्यापार का प्रभाव होता है, जैसे पानी पीना, या उस वस्तु का व्यक्त करने हैं जो व्यापार का फल होती है। जैसे घर बनाना।

उन क्रियाओं के साथ प्रधान क्रम नहीं आता है जो ऐसे व्यापार या अवस्था को व्यक्त करता है जिसका प्रभाव दूसरी वस्तु पर नहीं होता है। जैसे हँसना, खाना, पहनना आदि। इस प्रकार की क्रियाओं में समाविष्ट होता है

कतृ वाच्य और कर्मवाच्य । जमे पढ़ना, पढ़ा जाना । लिखना, लिखा जाना ।

- (च) क्रिया का सामांय रूप सामांय क्रिया विधेय का वाय कर सकता है । ऐसा तब होता है जब क्रिया क यापार की प्रेरणा, जाना या निषध व्यक्त करना होता है । जैसे आज ही यह करना । वहाँ कभी मत जाना ।
- (छ) क्रिया के सामांय रूप में ऐसी वाक्यरचना बनती है जो अर्थ के अनुसार क्रिया के पुरुषवाचक रूपों की भांति होती है । जैसे दानी के सब बाल मफेन हैं जान के बावजूद गंगा न चिरागदान के बाप अडुलगनी का पहचान लिया ।
- हिंदी में क्रिया का सामांय रूप ध्यापार का निश्च करने के साथ साथ क्रियायक भाववाचक मना भा होता है । जैसे जाना खाना पाना ।

क्रियायक भाववाचक सना हान हुए क्रिया के सामांय रूप की सजा सम्बन्ध निम्न विवेचताएँ हैं—

- (क) क्रिया के सामांय रूप का लिंग होता है पुलिग ।
- (ख) क्रिया के सामांय रूप के दो कारक होते हैं सामांय कारक तथा असामांय कारक । कारक में क्रिया के सामांय रूप चलते हैं केवल एकवचन में । क्रिया के सामांय रूप के सामांय कारक का अत्य प्रत्यय उसके हिंदी गदकोष में लिय रूप जमा होता है । उसके असामांय कारक का अत्य प्रत्यय होता है ए जो हिंदी के आकागत सना गंगा के एकवचन असामांय कारक के अत्य प्रत्यय की भांति है । जमे खाना खान ।
- (ग) असामांय कारक में क्रिया का सामांय रूप उही विभक्तिचिह्ना के साथ प्रयुक्त होता है जो सनागना के साथ प्रयुक्त होता है । जैसे खाने का खान का खान के लिए चल्यानि ।
- (घ) क्रिया के सामांय रूपों के साथ विवेचन मवनाम तथा सनागना का प्रयोग हो सकता है । जमे मुझे अच्छा पढ़ना पसंद है । मरे आन से वह प्रसन हुआ । राम के जाने में राम में बाधा पहुँचा ।
- (ङ) क्रिया का सामांय रूप वाक्य में वह वाय भा कर सकता है जो मजागना करता है । जमे (उन्हे) महाना अच्छा है ।

भाति प्रयुक्त होना है। जैसे ममज्ञ चमक झूट जादि।

क्रियाओं की अनेक धातुओं ने मूल जय ग्रहण कर लिये और हमके साथ ही वचन भी। जैसे भाग—भागें 'लूट—लूटें'।

सिद्धांततः क्रिया की प्रत्येक अव्युत्पन्न धातु भाववाचक सामान्य की भांति प्रयुक्त हो सकती है, परन्तु वर्तमान हिन्दी भाषा में क्रिया की अनेक अव्युत्पन्न धातुओं का प्रयोग सनासदा की तरह नहीं होता है। जैसे पढ़ लिख, कह। क्रिया की व्युत्पन्न धातुएँ क्रियायक सनासदा की भांति कभी भी प्रयुक्त नहीं होती हैं उनसे क्रिया के अपरुपवाचक तथा पुरुषवाचक रूपों का निमाण होता है। इस प्रकार की धातुओं में समाविष्ट होती है व सामान्य नामिक क्रियाओं की धातुएँ जो ना अत्य प्रत्यय द्वारा बनी होती हैं। जैसे बदलना—बदल। विचारना—विचार।

वास्तव में उक्त क्रियाओं की धातुएँ मूल सनासद के व्याकरणपरक समनाम गण हैं जिसमें स्वतंत्र प्रयोग में अपने में निहित स्वरूप चिह्न बने रहते हैं। जैसे डगना क्रिया की धातु है डर। यह डर पुल्लिङ्ग सनासद की भांति प्रयुक्त होता है क्योंकि इसमें क्रिया बनने से पूर्व उसका पुल्लिङ्गवाचक प्रयोग हुआ। खरीदना क्रिया की धातु है खरीद। यह खरीद स्वनपुं प्रयोग में स्त्रीलिङ्ग है किन्तु वह स्त्रीलिङ्ग इसलिए नहीं है क्योंकि वह धातु है प्रत्युत इस लिए है क्योंकि वह अपने में बनी खरीदना क्रिया में पूर्व स्त्रीलिङ्ग थी।

व्युत्पन्न तथा अव्युत्पन्न दोनों प्रकार की क्रियाओं की धातुएँ पूर्वकालानुवृत्त तथा आनाथक प्रकार के एववचन मध्यम पुरुष के रूप में मिलती जुलती होती हैं। जैसे घरा में लोग आम-ए-चारा तरफ बठ तम्बाकू पी रहे थे। बठ। बोले। जा। पिठा।

क्रिया की धातुओं में निम्नलिखित का निर्माण होता है सामान्य वर्तमानकालिक वृद्धन्त सामान्य भूतकालिक वृद्धन्त, सातत्यबोधक वृद्धन्त प्रथम भविष्यतकाल सम्भावनायक प्रकार का सामान्य रूप आनाथक प्रकार के रूप, 'सकना तथा चुकना अपूर्णार्थक क्रियाओं के साथ क्रियापरक संयोजन गति बोधक संयुक्त क्रियाएँ आदि।

वृद्धन्त

वृद्धन्त क्रिया का ऐसा रूप होता है जिसमें एक साथ क्रिया तथा विनियोग दोनों की विधानाएँ होती हैं इसलिए वृद्धन्त का कभी-कभी क्रियायक विनियोग कहते हैं।

वृत्त क्रिया का अप्रत्यक्षवाचक रूप है अतः उसके प्रकार (भूत) तथा पुरुष नहीं होते हैं। हिन्दी में कई विस्म के वृद्धन्त हैं—सामान्य वर्तमानकालिक वृद्धन्त सामान्य भूतकालिक वृद्धन्त, संयुक्त वर्तमानकालिक वृद्धन्त, संयुक्त भूतकालिक वृद्धन्त 'वाला' प्रत्ययान्त वृद्धन्त सातत्यवाचकालिक वृद्धन्त आदि।

उपरि लिखित वृद्धन्ता का क्रिया सम्बन्धों निम्न विश्लेषणाएँ हैं

(क) वृद्धन्त सक्रमक और अवक्रमक होना ही हो सकता है। सक्रमक क्रियाओं में सक्रमक वृद्धन्त बनते हैं और अवक्रमक क्रियाओं में अवक्रमक वृद्धन्त। जैसे (१) किनास पटनी (हुई) लटकी। (२) चिट्ठी लिख बग लटका। (३) चल्नी (हुई) गाढ़ा। (४) गिला (हुआ) पूरा। (५) काम कर रहे मजदूर। (६) हो रहा सम्मेलन।

(ख) सामान्य वृद्धन्ता के माध्य प्रधान क्रम प्रयुक्त हो सकता है। जैसे (१) जानकी काट पहाती हुई घर में निकली। (२) यहाँ पर माना उगलने वाली जमीन है।

(ग) वृद्धन्ता के माध्य स्थान समय जाति विशेषतावाचक प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे (१) तुमका दूकान पर बड़े गम्भीर नज़र आती? (२) वह आज ज्ञान बाग है। (३) यहाँ पर साला तक फल हुए दरिया और मीठे हैं।

(घ) वृद्धन्ता के माध्य क्रिया के पुरुषवाचक स्था के अभिव्यक्तिवाचक ही प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे घागी में निकलता हुआ नाग। (१) उल्लेख्य वस्तु वगैरह में दबाव स्था में बाध आ रहा। (२) नमस्ते का दिन में हृषिकेश्वर, फौजवाला दल वाले परिवार में सम्मान।

(ङ) क्रिया की भाँति सक्रमक वृद्धन्ता के दो वाच्य भाग हैं—कर्तृवाच्य और वक्रमवाच्य। जैसे

कर्तृवाच्य	वक्रमवाच्य
सुनाता (हुआ)	सुना जाता (हुआ)
सुना (हुआ)	सुना गया
सुनने वाला	सुना जाने वाला
कर रहा	किया जा रहा

इसके अलावा स्वयं वृद्धन्ता में वाच्य की विभिन्नताएँ प्रकट होती हैं। क्रिया के अर्थ के अनुसार वृद्धन्ता के अर्थ या तो कर्तृवाच्य हो सकते हैं या वक्रमवाच्य। सक्रमक तथा अवक्रमक क्रियाओं के सामान्य व संयुक्त वर्तमानकालिक वृद्धन्त, वाला प्रत्ययान्त वृद्धन्त सातत्यवाचकालिक वृद्धन्त तथा अवक्रमक क्रियाओं के सामान्य व संयुक्त भूतकालिक वृद्धन्त सभी कर्तृवाच्य होते हैं। जैसे पन्ता

(ग) आता (हुआ) आया (हआ) बग्न बाग्न, लिख रहा ।

मरुमक त्रियाआ व मामाय व मयुक्त भूतकालिक कृत कृत वाच्य या वमवाच्य म म काई भी हा सकता है । जम (१) पकटा (हई) तितनी ।

(५) पनाम पाया (हुआ) लगा ।

(च) कृतन यापार की पूणता या अपूणता का लियत है । मामाय एव मयुक्त वनमान कालिक कृत तथा मानत्यबोधकालिक कृतन अपूण यापार मूचक हान है । जस दखना (हुआ), पहुँचना (हुआ) चल रहा ।

सामाय व मयुक्त भूतकालिक कृत पूण व्यापारमूचक हान हैं । जमे दखा (हुआ), पहुँचा (हुआ) । बाला प्रययात कृत प्रसंग व अनुमाय या ता अपूण व्यापारमूचक गता ह या पूण यापारमूचक । जम (१) मरने वाला जादमी । (२) हम गवग म मरने बाग्न व गिल्लदाग्न म हमारी का काग्न पहलू नही निकल था ।

(छ) कृतन मापनिक बाग्न का लिखत है । मामाय व मयुक्त कृत स्वतन्त्र रूप म प्रयुक्त हाने समय ऐसा काग्न लिखत है जो त्रिया व पुरुषवाचक रूप स निर्दिष्ट काग्न व मदग हाना है या उसस पूर्व व काग्न जसा हाना है । जम (१) मैं कन्न आपको रामनाथ क साथ बातचीत करत (हुए) दखा । (२) उमन घाड पर चढे बटूक चलायी ।

त्रिया व मयुक्त पुरुषवाचन रूपा म सामाय तथा सातयगोधक काल बाग्न कृतन म निर्दिष्ट यापार का काग्न त्रिया व काल म स्पष्ट किया जाता है । जम मैं पत्ता हू । मैं पत्ता था । मैं पत्ता लगा । य किताब पढा जायगा । वह पन्न रना है ।

बाग्न प्रत्ययात तथा गुणनिर्देशक व रूप म प्रयुक्त सातयबोधन काग्न कृतन व व्यापार का काग्न मदा त्रिया के पुरुषवाचक रूप स निर्दिष्ट व्यापार व काग्न पर अधिकृत हाना है । जम (१) गति आग्न म हिम्मा ग्न बाग्न हर व्यक्ति वा तकाजा है कि हमने मजबूत बनाने म कोई काम न रख । (२) उमन चौबीसचवार्षिक योजना पर हो रही चह्य म भाग लिया । (३) यह प्रस्ताव पाच म लेकर तीस मर् तक हान बाग्न अधिवान म पास किया जायेंगे ।

(ज) बाग्न प्रययात तथा सातयगोधकालिक कृतता को छाग्नर अय म कृन्ना म एमी वाक्यरचना वन जाता है जो जथ व अनुसार त्रिया के पुरुषवाचन रूपा की तरह हैं । जस भुज जदी दौउन (हुए) चाट गया । (२) उम गय (हुए) दो महीन हा गय है ।

कृदन्ता की विगेषण मन्त्राद्या निम्नलिखित विगेषणाएँ हैं —

(क) विकारी विगेषणा का तरह कृदन्त अपन विगेष्य सन्नाहक गिग, वचन और वाक्य के अनुमा रूपान्तरित हान हैं। जैसे बहता (हुआ) पानी। गाती (हुई) लटकी। खेतन (हुए) लटके का।

(ख) वाक्य में कृदन्त वहाँ वाच्य करने हैं जो विगेषण किया करन है। अपान गुणनिर्देशक तथा विधेय के नामिक अंग के रूप में वाच्य करने हैं। जैसे (१) बहता पानी साफ होना है। (२) वह आया हुआ है। (३) मैं अपन मिन का चिटठी लिखने बाग हूँ।

कतृ वाचक और कमवाचक कृदन्त

जैसाकि ऊपर बताया गया है हिंदी में कतृ वाचक और कमवाचक दो प्रकार के कृदन्त होते हैं। मकमक क्रियाओं में कतृ वाचक और कमवाचक कृदन्त बनते हैं। मकमक क्रियाओं में केवल कतृ वाचक कृदन्त बनते हैं। कतृ वाचक कृदन्त उस वस्तु की विगेषणा को बनाता है जो स्वयं व्यापार करता है। जैसे (१) काम करती (हुई) औरत। (२) खीलता (हुआ) पानी। (३) सोया (हुआ) बच्चा। (४) बिनाब पड़ने वाला लड़का।

कतृ वाचक कृदन्त उस वस्तु की विगेषणा बताता है जो अन्य वस्तु के व्यापार से प्रभावित होता है। कतृ वाचक कृदन्त में निर्दिष्ट व्यापार का साधन प्रकट या अप्रकट रह सकता है। अगर यह साधन प्रकट है तो वह 'से' 'द्वारा', 'की आर से' तथा इस प्रकार के अन्य विभक्तिचिह्नों के साथ असामान्य कारक के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे (१) डाक से भेजा गया चिट्ठा। (२) पमिछ द्वारा खींचा गया चित्र। (३) मावियत सरकार की आर से भारत का शी गया सहायता।

कृदन्तो का निर्माण

कतृ वाचक कृदन्तों का निर्माण

(क) सामान्य वतमानकालिक कृदन्त क्रिया की धातु के माथ ता प्रत्यय जानने से बनता है। जैसे

क्रिया की धातु	सामान्य वतमानकालिक कृदन्त
बोल	बोलता
लिख	लिखता
पढ़	पढ़ता

(ख) सामान्य भूतकालिक कृदन्त क्रिया की धातु के साथ 'आ' प्रत्यय जोड़न से बनता है। जैसे

क्रिया का मूल रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त
बोल	बोला
लिख	लिखा
पढ़	पढ़ा

अगर क्रिया की धातु आकारान्त एकारान्त ओकारान्त या ईकारान्त होता है तो क्रिया की धातु तथा आ प्रत्यय के बीच य वण का जागम हो जाता है। जैसे —

क्रिया की धातु	सामान्य भूतकालिक कृदन्त
आ	आया
से	सेया
ओ	ओया
पी	पीया (पिया)

होना करना देना लेना जाना, ठानना और मरना क्रियाभ्रातृ सामान्य भूतकालिक कृदन्त उपरोक्त नियम के अपवाद हैं। इन कृदन्तों का निर्माण होने समय अग्रा म परिवर्तन निम्नलिखित प्रकार से होता है — ओ ऊ म परिवर्तित होता है आ 'इ' म परिवर्तित होता है 'ए' इ म परिवर्तित होता है 'आ' अ म और अ 'उ' म परिवर्तित होता है। करना, 'ठानना और मरना क्रियाभ्रातृ से बन कृदन्तों में कुछ व्यञ्जना का रूप होना है जिससे क्रिया की धातु काफी परिवर्तित हो जाता है। जाना क्रिया का सामान्य भूत कालिक कृदन्त 'गया' अथवा क्रिया की धातु से बना है। उदाहरणार्थ —

क्रिया का सामान्य रूप	क्रिया की धातु	सामान्य भूतकालिक कृदन्त
होना	हो	हुआ
करना	कर	किया (करा हिन्दी बोलियों तथा कविता में प्रयुक्त होता है)
देना	दे	दिया
लेना	ले	लिया
ठानना	ठान	ठंथा, ठांथा, ठाना
मरना	मर	मृता (कविता में प्रयुक्त होता है) मरा
जाना	जा	गया

(ग) मयुक्त वतमानकालिक कृदन्त सामांय वतमानकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामांय भूतकालिक कृदन्त के साथ संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामांय रूप सामांय वतमानकालिक मयुक्त वतमानकालिक

	कृदन्त	कृदन्त
बोलना	बोलता	बोलता हुआ
करना	करता	करता हुआ
पढ़ना	पढ़ता	पढ़ता हुआ

(घ) मयुक्त भूतकालिक कृदन्त सामांय भूतकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामांय भूतकालिक कृदन्त के साथ संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामांय रूप सामांय भूतकालिक कृदन्त मयुक्त भूतकालिक कृदन्त

आना	आया	आया हुआ
भेजना	भेजा	भेजा हुआ
लिया	लिया	लिया हुआ

(ङ) वाला प्रत्ययात् कृदन्त क्रिया के सामांय रूप के असामांय कारक के साथ उक्त प्रत्यय के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामांय रूप क्रिया के सामांय रूप का 'वाला' प्रत्ययात् कृदन्त

असामांय कारक

पढ़ना	पढ़ने	पढ़ने वाला
लिखना	लिखने	लिखने वाला
होना	होने	होने वाला

(च) सातत्यबोधक कृदन्त क्रिया की धातु के साथ रहना क्रिया के सामांय भूतकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामांय रूप क्रिया की धातु 'सातत्यबोधक कृदन्त

खेलना	खेल	खेल रहा
चलना	चल	चल रहा
होना	हो	हो रहा

कर्मवाचक कृदन्त का निर्माण

हिन्दी में कर्मवाचक क्रियाओं में लगभग सब कर्तृवाचक कृदन्तों के साथ धिग कर्मवाचक रूप होता है जो सामांय भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना

क्रिया के विभिन्न कृदन्तों के संयोजन से बनता है।

- (क) कमवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ जाना क्रिया के सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जस

क्रिया का सामान्य रूप सामान्य भूतकालिक कृदन्त कमवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त

पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाता
भेजना	भेजा	भेजा जाता
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाता

- (ख) कमवाचक सामान्य भूतकालिक कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ जाना क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जसे

क्रिया का सामान्य रूप सामान्य भूतकालिक कृदन्त कमवाचक सामान्य भूतकालिक कृदन्त

पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा गया
भेजना	भेजा	भेजा गया
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा गया

- (ग) कमवाचक संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ जाना क्रिया के संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जस

क्रिया का सामान्य रूप सामान्य भूतकालिक कमवाचक संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त

पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाता हुआ
भेजना	भेजा	भेजा जाता हुआ
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाता हुआ

- (घ) कमवाचक 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ जाना क्रिया के 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त के संयोजन से बनता है। जस

क्रिया का सामान्य रूप सामान्य भूतकालिक कमवाचक 'वाला' प्रत्ययान्त कृदन्त

पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जान वाला
भेजना	भेजा	भेजा जान वाला

छोड़ना

छोड़ा

छोड़ा जान वाला

(८) कमवाचक सातत्यबोधक कृदन्त सक्रमक क्रिया व सामान्य भूत कालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त के संयोजन में बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कमवाचक सातत्यबोधक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जा रहा
करना	किया	किया जा रहा

कृदन्त विकार

हिन्दी में कृदन्त का विकार कदता के प्रयोग पर निर्भर करता है। सामान्य वर्तमानकालिक तथा सामान्य भूतकालिक कृदन्त क्रिया के पुरुषवाचक रूपों के अंग होते हुए एकल लिंग और वचन में बदलते हैं। आकारात् विकारी विभक्तियों के सदृश अत्य प्रत्ययों के अलावा स्त्रीलिंग बहुवचन में क्रिया के पुरुषवाचक रूप में जब कदन्त सहायक क्रिया के बिना प्रयुक्त होता है तब उनके अत्य प्रत्यय 'इकारात्' बन जाते हैं। जैसे

पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलता	बोलते	बोलती	बोलती, बोलतीं
लिखता	लिखते	लिखती	लिखती लिखती
पढ़ता	पढ़ते	पढ़ती	पढ़ती, पढ़तीं

सब प्रकार के कृदन्त स्वतंत्र रूप से व्यवहृत होते हुए लिंग, वचन और कारक में अनेक रूप बदलते हैं। लिंग वचन और कारक में अपना रूप बदलते हुए बना साथ वही अत्य प्रत्यय जुड़ता है जो आकारात् विकारी विभक्तियों के साथ जुड़ता है। जैसे 'ए' अत्य प्रत्यय, जो पुंलिंग बहुवचन सामान्य कारक में तथा दोनों वचनों में असामान्य कारक प्रयुक्त होता है और 'ई' अत्य प्रत्यय जो स्त्रीलिंग में दोनों वचनों और कारक में प्रयुक्त होता है। जैसे

सामान्य कारक एकवचन

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पकड़ता (हुआ)	पकड़ती (हुई)
पकड़ा (हुआ)	पकड़ी (हुई)

क्रिया के विभिन्न कृदन्तों के संयोजन से बनता है।

(क) कमवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप सामान्य भूतकालिक कृदन्त कमवाचक सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त

पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाता
भेजना	भेजा	भेजा जाता
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाता

(ख) कमवाचक सामान्य भूतकालिक कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कमवाचक सामान्य भूतकालिक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा गया
भेजना	भेजा	भेजा गया
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा गया

(ग) कमवाचक संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कमवाचक संयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाता हुआ
भेजना	भेजा	भेजा जाता हुआ
छोड़ना	छोड़ा	छोड़ा जाता हुआ

(घ) कमवाचक वाला प्रत्ययान्त कृदन्त सक्रमक क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जाना' क्रिया के वाला प्रत्ययान्त कृदन्त के संयोजन से बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कमवाचक वाला प्रत्ययान्त कृदन्त
पढ़ना	पढ़ा	पढ़ा जाने वाला
भेजना	भेजा	भेजा जाने वाला

छोड़ना

छोड़ा

छाड़ा जान वाला

(३) कमवाचक सातत्यबोधक कृदन्त सक्रमक क्रिया व सामान्य भूत-
कालिक कृदन्त व साथ जाना क्रिया व सातत्यबोधक कृदन्त के
संयोजन में बनता है। जैसे

क्रिया का सामान्य रूप	सामान्य भूतकालिक कृदन्त	कमवाचक सातत्यबोधक कृदन्त
पड़ना	पड़ा	पड़ा जा रहा
करना	किया	किया जा रहा

कृदन्त विकार

हिन्दी में कृदन्त का विकार कृदन्तों के प्रयोग पर निर्भर करता है। सामान्य वर्तमानकालिक तथा सामान्य भूतकालिक कृदन्त क्रिया के पुरुषवाचक रूपों के अंग हात हुए कमल लिंग और वचन में बदलते हैं। आकारान्त विनारी विभेदना के सदृश अत्यन्त प्रत्ययों के अलावा स्त्रीलिंग बहुवचन में क्रिया के पुरुषवाचक रूप में जब कृदन्त सहायक क्रिया के बिना प्रयुक्त होता है तब उनका अत्यन्त प्रत्यय ईकारान्त बन जाते हैं। जैसे

पुंलिंग

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलता	बोलते	बोलती	बोलती, बोलतीं
लिखता	लिखते	लिखती	लिखती लिखतीं
पढ़ता	पढ़ते	पढ़ती	पढ़ती, पढ़तीं

सब प्रकार के कृदन्त स्वतन्त्र रूप में व्यवहृत होते हुए क्रिया, वचन और कारक में अपना रूप बदलते हैं। लिंग वचन और कारक में अपना रूप बदलते हुए उनमें साथ वही अत्यन्त प्रत्यय जुड़ता है जो आकारान्त विकार विभेदना के साथ जुड़ता है। जैसे 'ए' अत्यन्त प्रत्यय जो पुंलिंग बहुवचन सामान्य कारक में तथा जाना वचना में असामान्य कारक प्रयुक्त होता है और 'ए' अत्यन्त प्रत्यय जो स्त्रीलिंग में जाना वचना और कारक में प्रयुक्त होता है। जैसे

सामान्य कारक एकवचन

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पढ़ता (हूँ)	पढ़ती (हूँ)
पढ़ा (हूँ)	पढ़ा (हूँ)

पकड़ने वाला
पकड़ रहा

पकड़ने वाली
पकड़ रही

असामान्य कारक एकवचन

पुर्लिंग	स्त्रीलिंग
पकड़ते (हुए)	पकड़ती (हुई)
पकड़े (हुए)	पकड़ी (हुई)
पकड़ने वाला	पकड़ने वाली
पकड़ रहे	पकड़ी रही

सामान्य कारक बहुवचन

पुर्लिंग	स्त्रीलिंग
पकड़ते (हुए)	पकड़ती (हुई)
पकड़े (हुए)	पकड़ी (हुई)
पकड़ने वाला	पकड़ने वाली
पकड़ रहे	पकड़ रही

असामान्य कारक बहुवचन

पुर्लिंग	स्त्रीलिंग
पकड़ते (हुए)	पकड़ती (हुई)
पकड़े (हुए)	पकड़ी (हुई)
पकड़ने वाला	पकड़ने वाली
पकड़ रहे	पकड़ रही

सामान्य तथा समुक्त कृत्यों के पुर्लिंग असामान्य कारक के रूप की विशेषता यह है कि उसका भाषा प्रायः कोई विभक्तिचिह्न नहीं लगता है। सामान्य और समुक्त कृत्यों का असामान्य कारक के स्थायी अविकारी रूप में विभिन्न वाक्यरचना सम्बन्धी कार्यों में व्यवहार होना है। विशेष करके विनायता बाधक तथा विधेयक के अंग के कार्यों में और स्वतन्त्र (तन्मातृपूट) वाक्यरचना में। जिस (१) का औरत एक दूसरे से बात करती (हुए) रास्त पर जा रही थी। (२) वह पन्त-पन्त सा गया। (३) मैं वहीं बैठ कर किय सोचने लगा। (४) अब निम्नान अनात्र से भरी (हुई) गान्धी जिन नाम में आया। (५)

मुखिया एक हाथ स बच्चे को पकड़े (हुए) थी । (६) घर गिर चार महीने बीत गये ।

अकर्मक क्रियाओं के मयुक्त वर्तमानकालिक वृद्धता समुक्त भूतकालिक वृद्धता तथा प्रत्यय प्रसार की मकर्मक या अकर्मक क्रियाओं के वाला अर्थ प्रत्यय वृद्धता का सत्ता के अर्थ में प्रयोग होता है और उनके रूप आकारात् सत्ताओं की भांति बनते हैं ।

सामान्य कारक

एकवचन	बहुवचन
गिरता हुआ	गिरत हुए
आया हुआ	आये हुए
सुनने वाला	सुनने वाले

समाना य कारक

एकवचन	बहुवचन
गिरत हुए	गिरत हुआँ
आये हुए	आये हुआँ
सुनने वाले	सुनने वालो

सम्बोधन कारक

एकवचन	बहुवचन
गिरते हुए ।	गिरते हुआँ ।
आये हुए ।	आये हुआँ ।
सुनने वाले ।	सुनने वालो ।

उदाहरणार्थ (१) मैंने इन लौट हुआ को फारम पर रहने और काम करने के लिए बुलाया है । (२) मैं बटिकट मफर करने वाला को पकड़ा करता था ।

वृद्धता का प्रयोग

हिन्दी में वृद्धता का बहुत व्यापक रूप में प्रयोग होता है । व क्रिया के विभिन्न कालिक रूपों और पुष्पवाचक रूपों के नियमों में तथा स्वतन्त्र रीति से व्यवहृत होते हैं । वृद्ध वाचक वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक नहीं देना

कृदन्त कमवाचक सामान्य वतमानकालिक तथा भूतकालिक कृदन्त और मातृत्व बोधक कृदन्त प्रायः क्रियाके पुरुषवाचक रूपों के अग की भाँति प्रयुक्त होते हैं। अपुरुषवाचक रूप में अर्थात् स्वतन्त्र रूप में सब कृत्ता का व्यवहार नहीं होता है। उदाहरण के त्रिग कमवाचक सामान्य वतमानकालिक कृदन्त स्वतन्त्र रूप से प्रायः प्रयुक्त नहीं होते हैं। अर्थ प्रसार के कृदन्त स्वतन्त्र रूप की भाँति प्रयुक्त होते हैं। स्वतन्त्र शब्दों की भाँति के प्रयोग में वाक्य में कृत्ता व काय भिन्न भिन्न होते हैं। उनके प्रयोग गुणनिर्देशको (एटीम्यूट) विगपताबोधकी तथा विधेय के अग के रूप में हो सकते हैं। मनागाना के अर्थ में प्रयुक्त कृदन्त वाक्य में उद्देश्य कम तथा विगपताबोधक हा मबन है।

कृदन्तों के स्वतन्त्र प्रयोग की कुछ विशेषताएँ

सामान्य वतमानकालिक कृदन्त

सामान्य वतमानकालिक कृदन्तों का निम्नलिखित स्वतन्त्र प्रयोग होता है —

- (क) उद्देश्य के रूप में। जस मरता क्या नहीं करता।
- (ख) कम के रूप में। जस हूबत का तिनके का सहारा।
- (ग) गुणनिर्णयक के रूप में। जस चरती गाड़ी उड़ता पक्षी।
- (घ) विधेय के नामिक अर्थ के रूप में। जस (१) गाड़ी निकट आती दिवामी दे रही है। (२) उसे किसी ने यह काम करते नहीं दिया।
- (ङ) समय विगपताबोधक के रूप में। जस (१) सोते में भी वह भूम रहत हैं और जागते में भी भूखे रहत है। (२) तुमको दुकान पर बैठते गम नहीं जाता।

समय विगपताबोधक के रूप में प्रायः प्रयुक्त होता है जसामान्य कारण में सामान्य भूतकालिक कृदन्त का निपात के संयोजन से। इस संयोजन का प्रयोग ऐसे पुरुष व्यापार का निर्देश करने के लिए होता है जो विधेय से अभिहित व्यापार के ही पूर्व हुआ या हो रहा है। ही निपात के साथ सामान्य वतमानकालिक कृदन्त के संयोजन का अर्थ ज्यादा ही सन्तुष्ट होना है। जस आते ही वह बैठ गया।

उन संयोजन में सामान्य वतमानकालिक कृदन्त का रूप उम वाक्य के अर्थ के लिए पुरुष वचन तथा कारण में प्रभावित नहीं होता है जिसके

विषय के साथ य सयोजन सम्बन्धित होत है। जस (१) पहुँचत ही मैं अपने मित्र स मिलने गया। (२) आत ही वह पत्र लिखन लगा (लगी लग)। (३) पह मसाधार मुनत ही भा न बंट का एक सार भेज दिया।

ऊपर दिय गय उदाहरणों में 'ही' निपात के साथ सयोजनों में कृदन्ता व कता तथा वाक्यों के उद्देश्य एक ही है परन्तु हिंदी में 'ही' न साथ प्रयुक्त कृदन्त का प्राय अपना कर्ता होता है जो वाक्य के उद्देश्य से भिन्न भी हो सकता है। ऐसी स्थिति में कृदन्त का कता मयाशब्द के सामान्य कारक या क विभक्ति चिह्न महित अथ मुख्य वाचक सवनाम व असामान्य कारक से अभि व्यक्त होता है। जैसे (१) मरी छुट्टियाँ शुरू हान ही हम दोनों गिमल जाना चाहत है। (२) मरीज के आत ही डाक्टर ने उसे बँठन का कता। (३) उसक चिट्ठी लिखत ही हम डाक्टर गये।

अगर कृदन्त का कता होता है उत्तम या मध्यम पुरुषवाचक सवनाम तो वह असामान्य कारक में सम्बन्धित स्वामित्ववाचक सवनाम से अभिव्यक्त होता है। जस (१) मेरे आत ही वह अखबार पढ़ने लगा। (२) तुम्हारे आते ही वह चुप हो गयी।

'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वतमानकाङ्क कृदन्त तथा व्यापार व्यक्त करत है जो क्रिया के पुरुषवाचक रूप से निदिष्ट व्यापार से पूर्व होता है। इस कृदन्त में व्यक्त व्यापार का काल क्रिया के पुरुषवाचक रूप से व्यक्त काल पर निर्भर करता है। जब विषय में क्रिया वतमान काल में होती है तब 'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वतमानकाङ्क कृदन्त पूर्व वतमान काल को व्यक्त करता है। जस शिक्षक व श्रेणी में आत ही विद्यार्थी उठ जाते हैं।

यदि विषय में क्रिया भूतकाल में होती है तो 'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वतमानकाङ्क कृदन्त पूर्व भूतकाल व्यक्त करता है। जस कुत का दमक भी बरबाद होकर रो उठा।

अब विषय में क्रिया भविष्यकाल में होता है तब 'ही' निपात के साथ प्रयुक्त सामान्य वतमानकाङ्क कृदन्त पूर्व भविष्यकाल व्यक्त करता है। जस घर जात ही मैं टेलीफोन करूँगा।

'ज्या हा क अथ में ही निपात के साथ सामान्य भूतकाङ्क कृदन्त की पुनराक्ति भी व्यवहृत होता है। जस आत ही आत उसने यह कहा।

समय विनियन्तावाचक के रूप में असामान्य कारक में सामान्य वतमान काङ्क कृदन्त तथा समय या व्यक्त के सयोजनों का भी प्रयोग होता है। जस गान समय (गान) चिट्ठी पढ़न समय (पढ़न)।

‘ममय तथा वक्त’ व साथ प्रयुक्त सामान्य वतमानकालिक कृदन्त यह दिखाने हैं कि विधेय में निदिष्ट मुख्य व्यापार की पूर्ति में उद्देश्य क्या करता है। इस प्रयोग में सामान्य भूतकालिक कृदन्त का वर्तमान तथा वाक्य का उद्देश्य अलग अलग हो सकता है। सामान्य भूतकालिक कृदन्त का वर्तमान प्रायः निदिष्ट नहीं जाना है, परन्तु वह प्रसंग से पता चलता है। जैसे (१) काम करते समय (वक्त) वह कभी नहीं वालता है। (२) आज घर बाण्ड बन समय (वक्त) मुझे अपना पुराना मित्र मिला।

(च) प्रकार विनोदताबोधक के रूप में। प्रकार विनोदताबोधक के रूप में सामान्यतया सामान्य वतमानकालिक कृदन्त की पुनरवित्या व्यबहृत होती है जो अपने में अभिहित व्यापार के सातत्य का सूचित करता है। जैसे (१) दीटना दीटना घर गया और तितलियो वाला डबा ले जाया। (२) अम्मा रात रात सो गया था।

सामान्य भूतकालिक कृदन्त

सामान्य भूतकालिक कृदन्ता का निम्नलिखित स्वतंत्र प्रयोग होता है —

(क) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे साया बच्चा। लिखी चिट्ठा।

(ख) विधेय के नामिक अंग के रूप में। जैसे (१) आज वहाँ का स्थिति बदली नजर आ रही है। (२) सड़क के बीच खून से लाल हुई जगह पर एक आदमी बहोरा पड़ा था। (३) दूसरे दिन मुबह गाव वालों ने छत्रपति को इस चट्टान पर बँठा पाया।

हिन्दी में बहुधा विधेय के नामिक अंग के रूप में सक्रमक सामान्य भूतकालिक कृदन्त भी प्रयुक्त होते हैं। विधेय के नामिक अंग के रूप में सक्रमक सामान्य भूतकालिक कृदन्ता का दो प्रकार का प्रयोग होता है। एक प्रकार के प्रयोग में व असामान्य कारक में अविकारी पुल्लिङ्ग बाँध होना है। जैसे वह नया कोट पहने था।

दूसरे प्रकार के प्रयोग में व विधेय के नामिक अंग के रूप में लिंग तथा वचन (पुल्लिङ्ग) में उद्देश्य का अनुगमन करता है। जैसे लिफाफे पर तीन टिकट लगाये हैं।

पहले प्रकार के उपरान्त प्रयोग में सक्रमक सामान्य भूतकालिक कृदन्ता का बहुवाच्यपरक अर्थ होता है। दूसरे प्रकार के प्रयोग में उक्त कृदन्तो का वमवाच्यपरक अर्थ जाना है। वमवाच्यपरक अर्थ वाले कृदन्त भूतकाल के ऐसे

सम्मानित व्यापार का निर्देश करत है जो अपने फल के कारण वतमान भूत या भविष्यकाल में सम्बन्धित है जिसका मकेत हाना महायक किया करती है। जैसे सड़ मेजें भजपोशी स ढकी हैं (ढंकी थी ढंकी होगी)।

(ग) प्रकार विपत्ताबाधक के रूप में। प्रकार विपत्ताबाधक के रूप में सामान्य भूतकालिक कृदन्त (क) विना तथा (के) बगैर विभक्ति चिह्न के साथ प्रयुक्त होते हैं। इस प्रयोग में विभक्तिचिह्न या तो कृदन्त से पूर्व प्रयुक्त हो सकते हैं या पश्चात्। जैसे उससे मिले मिना, बगैर रके। (के) विना तथा (क) बगैर विभक्तिचिह्न के साथ प्रयुक्त सामान्य भूतकालिक कृदन्त पूरक नकारात्मक व्यापार व्यक्त करत है। जैसे (१) ठाकुर न विना रत्तीभर इधर उधर हिल डुल पूछा क्या? (२) उससे बातें निया बगैर मैं क्या कर सकता हूँ?

प्रकार विपत्ताबाधक के रूप में '(के) विना तथा '(के) बगैर विभक्तिचिह्न के साथ सामान्य भूतकालिक कृदन्त का विशेष व्यापक प्रयोग उन नकारात्मक वाक्यों में होता है जिनमें अर्थ के अनुसार दो नकारात्मक निपाता की आवश्यकता होती है। इस तरह के वाक्यों में विशेष 'रहना किया या रह सकना' क्रियापरक शब्दसमुदाय में व्यंजित होता है। ऐसे वाक्यों में विशेष में पूर्व एक नकारात्मक निपात प्रयुक्त होता है जो प्रायः न निपात होता है। जैसे (१) मैं इस पर हँस बिना न सूँगा। (२) वह मरने बिटोरी का उत्तर निया बगैर न रह सका।

(घ) अवस्थाबाधक प्रकार विपत्ताबाधक के रूप में। इस काय में कबल अमामान्य कारक में अविकारी पुल्लिङ्गवाले रूप में प्रायः सक्रमक सामान्य भूतकालिक कृदन्तों का प्रयोग होता है। ये विपत्ताबाधक उस अवस्था का निर्णय करते हैं जिसमें मुख्य व्यापार हो रहा होता है और साथ-ही साथ ये उस व्यापार का स्पष्ट कर देते हैं। अवस्थाबाधक प्रकार विपत्ताबाधक के रूप में सामान्य भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्य का अर्थ देते हैं। जैसे (१) एक फटा गी रजार्द ओढ़े ठाकुर बाहर निकल आया। (२) मूय अपना मुनहला घाल लिये पूरक में पश्चिम में जा पहुँचा था।

समुक्त वतमानकालिक कृदन्त

समुक्त वतमानकालिक कृदन्तों का मूल स्वतंत्र प्रयोग होता है। यह प्रयोग प्रायः निम्नलिखित होता है —

(क) श्रुतिनिर्णय के रूप में। समुक्त वतमानकालिक कृदन्तों का

गुणनिर्देशक दो प्रकार के होते हैं—पूर्ववर्ती तथा पश्चवर्ती। पूर्ववर्ती गुणनिर्देशक के रूप में मयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग वचन तथा वाक्य में आकारान्त विशेषणा की भाँति विशेष्य का अनुगमन करते हैं। जैसे जाता हुआ आदमी जाते हुए आदमी जाते हुए आदमियों में जानी हुई औरत जानी हुई औरतें।

पश्चवर्ती गुणनिर्देशक के रूप में जो प्रायः विधयवाचक होता है सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन में वाक्य के उद्देश्य के अनुसार होते हैं। जैसे (१) एक लटका मिर के बड़े बड़े बालों का खुजलाता हुआ चला आ रहा है। (२) पीछे उसकी पत्नी कराहती, कापती हुई गठरी-सी बनकर सिमट गई।

(क) विधेय के नामिक अंग के रूप में। विधेय के नामिक अंग के रूप में सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य का उद्देश्य या वाक्य का प्रधान कर्म निर्दिष्ट करते हैं। उद्देश्य को निर्दिष्ट करते हुए वाक्य के विधेय के क्रियापरक अंग के रूप में निम्न अकर्मक क्रियाएँ तथा क्रियानामिक शास्त्रमुदाय प्रयुक्त होते हैं—दिखाइ देना दिखाई पड़ना जान पड़ना नजर आना मालूम होना, प्रतीत होना आदि। मयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य के उद्देश्य का अनुगमन करते हैं। जैसे (१) इनमें ही गुरलीन आना हुआ दिखा दिया। (२) बहुत लड़कियाँ जंगल की ओर जाता हुईं नजर आ रही हैं।

जब सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य के प्रधान कर्म का निर्देश करता है तब विधेय के क्रियापरक अंग के रूप में प्रयुक्त होती है दखना सुनना पाना जसी क्रियाएँ। विधेय के नामिक अंग का प्रधान कर्म के साथ 'याकरण' परक सम्बन्ध प्रधान कर्म के रूप में अनुसार नामिक अंग द्वारा अभिव्यक्त होता है। विधेय के नामिक अंग के रूप में सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सामास्य कारक में प्रधान कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार होते हैं। जैसे वह एक गाड़ी निकट आती हुई दख रहा है।

यदि प्रधान कर्म को विभिन्न चिह्न सहित अमासाय कारक में मना गता तथा सवनाम है या कर्मकारक में सवनाम होता विधेय के नामिक अंग के रूप में प्रयुक्त सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त वाक्य प्रधान कर्म के कर्मकारक से होता है या वह सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त सामास्य कारक एकवचन पुल्लिङ्ग में होता है। जैसे (१) उसे आज नव बिसी ने बान बग्न हुए नष्ट मुना। (२) अभी मैंने उनका सटक पर जाता हुआ दखा।

क्रिया के नामिक अंग के रूप में प्रयुक्त तथा विधयवाचक गुणनिर्देशक के रूप में प्रयुक्त सयुक्त वर्तमानकालिक कृदन्त में भक्त क्रिया आना चाहिए।

विधयवाचक गुणनिर्देशक वाक्य व उद्देश्य तथा विधेय दाना का निर्देश करते हैं किन्तु अर्थानुसार उनका अधिक सम्बन्ध विधय म ही जाना है। जस लड़की हैमती हुई जा गयी थी।

विधेय का नामिक अग विधय म क्रिया व अनुसार कवल वाक्य के उद्देश्य का या कवल वाक्य व प्रधान कर्म का निर्देश करना है। जैसे (१) दूर स वह चीज चलती हुई दिखाई पड़ता है। (२) उहान न लड़का का नदी म डूबते हुए पाया।

इसक अनिरिक्त वाक्य म विधयवाचक गुणनिर्देशक तथा विधेय के बीच विगपता वाचक कर्म और यहा तक कि उद्देश्य भा जा सकत हैं जबकि विधेय का नामिक अग तथा विधय का क्रियापदक अग साथ साथ रहत है और उनके मध्य म निपाना को छोड़कर वाक्य का कोई भी अर्थ अग नहा जा सकता है। जस (विधयवाचक गुणनिर्देशक) — (१) गराबी उसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ गली म ल चला। (२) बल्लाक साचता हुआ वह घुपचाप घर म निकला। (विधेय का नामिक अग) — उस दिन व बाद उस किसी ने मुमकरात हुए मही देखा।

(ग) समय विगपताबोधक क रूप म। कम तरह व प्रयोग म मयुक्त वतमानकालिक कृत्य पूण स्वतंत्र होत हैं। स्वतंत्र कृत्य का कता वाक्य के उद्देश्य स भिन्न होता है। जैसे घर जाते हुए मरा मित्र दफ करने लगा। इस वाक्य म अर्थानुसार कृत्य का कता है 'म' किन्तु वाक्य म उद्देश्य है मित्र।

(घ) प्रकार विगपताबोधक क रूप म। प्रकार विगपताबोधक क रूप म मयुक्त वतमानकालिक कृत्य मत्त अविशारी रूप म विभक्तिचित्त रहित असामान्यवाक्य म प्रयुक्त होते हैं। जैसे (१) बड़े दुगार म उसका मुह पाछन हुए उम लकर वह फाटक के बाहर चला आया। (२) टटालत हुए सलान ने मिट्टी की त्रिबरी जलाकर वह फट कम्बल व नीचे कुछ सोजन लगा।

(ङ) मति अधक (कल्मान) विगपतावाचक क रूप म। सति-अपक विगपताबोधक क रूप म मयुक्त वतमानकालिक कृत्य भी निपात व साथ असामान्य वाक्य म प्रयुक्त होत हैं। जैसे (१) बहून डरत हुए भी मैंने उनका दाना व जवाय म एक भाषण तयार किया। (२) यह जानत हुए भी कता दफ आगा थी कि चंग लटका पला किसी जोग ममयगा है।

समुक्त भूतकालिक कृत्य

मयुक्त भूतकालिक कृत्य सत्त स्वातंत्र्य म प्रयुक्त जात हैं। स्वतंत्र

रूप से सामान्य भूतकालिक कृत्ता की अपेक्षा इनका प्रयोग अधिक प्रचलित है। उनका प्रयोग प्रायः निम्नलिखित होता है—

(क) कम के रूप में। इस रूप में बहुधा अवमक समुक्त भूतकालिक कृदन्ता का इस्तमाल होता है। जैसे इन लौटे हुआ को फारम पर रहन और काम करने के लिए बुलाया गया है।

(ख) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे (१) इसके बाद दिनभर के घरे हुए पति पत्नी भोगे गये। (२) उन्होंने पट्टी हुई पतंग उठाकर देखी।

अवमक समुक्त भूतकालिक कृदन्त परवर्ती विवेकवाचक गुणनिर्देशक के रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे बाका गुमान अपनी कोठरी के द्वार पर बठा हुआ यह कौतुक बड़े ध्यान से देख रहा था।

गुणनिर्देशक के रूप में सक्रमक समुक्त भूतकालिक कृदन्त प्रायः कम वाच्य का अर्थ देता है। यदि एम कृत्ता का कर्ता अभिहित होता है तो वह असामान्य कारण में का (क की) विभक्ति चिह्न सहित सप्ताश-दया सब नाम होता है। यदि उन कृत्ता का कर्ता उत्तम या मध्यम पुरुष वाला मवनाम होता है तो वह सम्प्रधित स्वामित्ववाचक मवनाम में अभिप्रेक्षित होता है। जैसे (१) दिल्ली और भारत के दूसरे भागों में इन बादशाहों की वनवासी हुई इमारतों के खण्डहर आज भी देख जाते हैं। (२) उसकी पत्नी हुई पुस्तक। (३) मेरी लिखी हुई चिट्ठी।

जब गुणनिर्देशक के रूप में सक्रमक समुक्त कृदन्त का अपना प्रधान कम होता है तो वह कत वाच्य का अर्थ देता है। जैसे मैंने घुटनों से ठुडकी लगाए हुए एक निराह बाग़ के दबा।

(ग) विधय के नामिक अंग के रूप में। जैसे (१) उत्तर में भारत की सीमा अफगानिस्तान और चीन की सीमाओं से मिली हुई है। (२) वह बहुत घमराया हुआ मालूम होता था। (३) अब मैं जब कभी छान्नी लडकी की जाख सूजी हुई और गाल लाल देखता हूँ तो समझ लेता हूँ कि किसी बड़े घर में चीनी के बतन टूट हैं।

जब विधय के नामिक रूप में सक्रमक समुक्त कृदन्त का प्रयोग होता है तो वह असामान्य कारण में अविकारा पुलित्य वाक्य रूप में होता है या के लिए तथा वचन (पुर्णिमा) उत्पन्न का अनुगमन करता है। अविकारा रूप के प्रयोग में सक्रमक समुक्त भूतकालिक कृत्ता केन वाच्यपरक अर्थ देता है। जैसे मन्दिर के मंत्र में भारग अपनी विष्णुता बनाए हुए है।

विनाश प्रयोग में केन वाच्यपरक अर्थ देता है तथा सामान्य भूतकालिक

वृद्धन्तो की भाँति ऐसे सम्पादित व्यापार का निर्देश करते हैं जो अपने फल के कारण उस वतमान, भूत या भविष्यत काल से सम्बन्धित है जिसका शकैत सहायक क्रिया करती है। जैसे जलमारी में कितना रखी हुई है (थी हागी)।

(ग) समय विशेषताबोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में संयुक्त भूतकालिक वृद्धन्त प्रायः पूर्ण स्वतन्त्र होता है। जैसे (१) उस गय हुए दो महीने हो गये हैं। (२) यह घोड़ा सरीदे हुए तीन साल हो चुके हैं।

(घ) अवस्थावाचन प्रकार विशेषता बोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में केवल असाधारण कारण में अविकारी पुनर्गम वाले रूप में प्रायः सामान्य भूतकालिक वृद्धन्त का व्यवहार होता है। इस प्रकार के विशेषताबोधक उस अवस्था का निर्देश किया करते हैं जिसमें मुख्य व्यापार हो रहा होता है। इसके साथ ही ये उक्त व्यापार को भी स्पष्ट किया करते हैं। इस प्रकार के संयुक्त भूतकालिक वृद्धन्त वृत्तवाच्यपरक अर्थ दिया करते हैं। जैसे (१) एक गन्दी काठरी का दरवाजा डबलकर वालक को लिये हुए वह भीतर पहुँचा। (२) कुत्ता कुम दबाये हुए लारी के पास पहुँचा।

‘बाला’ प्रत्ययान्त वृद्धन्त

‘बाला’ प्रत्ययान्त वृद्धन्तों का संकेत स्वतन्त्र प्रमाण होता है। ये वृद्धन्त किसी वस्तु की ऐसी विषयगत विशेषता का निर्देश किया करते हैं जो प्रमत्ता नुसार वतमान भविष्यत तथा भूतकाल में से किसी भी काल से सम्बन्धित हो सकती है अथवा जो क्रिया के सामान्य रूप में व्यस्त व्यापार का उदयतत्ता या संपादा सूचन करती है।

‘बाला’ प्रत्ययान्त वृद्धन्तों का निम्नलिखित प्रमाण होता है —

(क) उत्पन्न के रूप में। जैसे बताने वाला न बनाया कि गराब के मत छानी, मुट्ठी और पग पर बर्फ की हल्की-सा चादर बिपक गई थी।

(ख) कम के रूप में। जैसे दर में आने वाले को मभा में बटन की जगह नहीं मिली।

(ग) गुणनिर्देश के रूप में। इस तरह के प्रयोग में वृद्धन्त के विंग वचन तथा कारण अपन विनेय्य के अनुसार होता है। जैसे वह माथ के उन बालों वस्तुओं को बटोरने लगा।

वाक्य में जब बाला प्रत्ययान्त एवं से अधिक उक्त विंगों एवं ही विनेय्य के हल है तब ‘बाला’ प्रत्यय प्रायः विनेय्य में पूर्व एवं इस चार प्रमुख

रूप से सामान्य भूतकालिक कृदन्ता की अपेक्षा इनका प्रयोग अधिक प्रचलित है। उनका प्रयोग प्रायः निम्नलिखित होता है—

(क) कम के रूप में। इस रूप में बहुधा अव्यय समुक्त भूतकालिक कृदन्ता का इस्तेमाल होता है। जैसे— इन लौटे हुआ को फारम पर रहने और काम करने के लिए बुलाया गया है।

(ख) गुणनिर्देशक के रूप में। जैसे— (१) इसका बाद दिनभर के घबराए पति पत्नी सो गये। (२) उन्होंने फनी हुई पतंग उठाकर देखी।

अव्यय समुक्त भूतकालिक कृदन्त परवर्ती विधेयवाचक गुणनिर्देशक के रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे— बाबा गुमान अपनी कोठरी के द्वार पर बठा हुआ यह कौतुक बड़े ध्यान में देख रहा था।

गुणनिर्देशक के रूप में सक्रमक समुक्त भूतकालिक कृदन्त प्रायः कम वाच्य का अर्थ होता है। यदि ऐसा कृदन्ता का कना अभिव्यक्ति होता है तो वह असामान्य कारक में का (क की) विभक्ति चिह्न सहित सनाशद या सब नाम होता है। यदि उन कृदन्ता का कना उत्तम या मध्यम पुरुष वाला मवनाम होता है तो वह सम्बोधित स्वामित्ववाचक मवनाम से अभिव्यक्त होता है। जैसे— (१) दिल्ली और भारत के दूसरे भागों में इन बादशाहों का वनबासी हुए इमारतों के खण्डहर आज भी देखे जाते हैं। (२) उसकी पत्नी हुई पुस्तक। (३) मरी लिली हुई चिट्ठी।

जब गुणनिर्देशक के रूप में सक्रमक समुक्त कृदन्त का अपना प्रधान काम होता है तो वह कत वाच्य का अर्थ देता है। जैसे— मैंने घुटना में ठुलड़ी लगाए हुए एक निराह बाँक को देखा।

(ग) विधेय के नामिक अंग के रूप में। जैसे— (१) उत्तर में भारत की सीमा अफगानिस्तान और चीन की सीमाओं से मिलती हुई है। (२) वह बहुत घबराया हुआ मानस होता था। (३) अब मैं जब कभी छाना लटकी की आँखें मूँचा हुई और गाँव लाल देखता हूँ तो समझता हूँ कि किसी बड़े घर में चीनों के वनन टूट है।

जब विधेय के नामिक रूप में सक्रमक समुक्त कृदन्ता का प्रयोग होता है तब वह असामान्य कारक में अविवारा पुलिंग वाला रूप में होता है या वह गिग तथा वचन (पुलिंग) उत्पन्न वा अनुगमन करने हैं। अविवारा रूप के प्रयोग में सक्रमक समुक्त भूतकालिक कृदन्त कतवाच्यपरक अर्थ देते हैं। जैसे— मस्तिष्क के अक्षर में भाग्य अपना विपत्ति बनाए गए हैं।

विवारा प्रयोग में वह कमवाच्यपरक अर्थ देते हैं तथा सामान्य भूतकालिक

कृदन्ता की भांति ऐसे सम्पादित व्यापार का निर्देश करते हैं जो अपन फल के कारण उस वतमान, भूत या भविष्यत काल से सम्बन्धित है जिसका सकेन सहायक किया करती है। जैसे अल्मारो में विताव रखी हुई है (थी होगा)।

(ग) समय विशेषताबोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में समुक्त भूतकालिक कृदन्त प्रायः पूर्ण स्वतन्त्र होता है। जैसे (१) उमे गय हुए दो महीने हो गये हैं। (२) यह घाड़ा खरीदे हुए तीन साल हो चुके हैं।

(घ) अवस्थावाचक प्रकार विशेषता बोधक के रूप में। इस तरह के प्रयोग में केवल असामान्य कारण में अविवारी पुर्ल्लिग बाते रूप में प्रायः सम्मत् सामान्य भूतकालिक कृदन्तों का व्यवहार होता है। इस प्रकार के विशेषताबोधक उस अवस्था का निर्देश किया करते हैं जिसमें मुख्य व्यापार हो रहा होता है। इसके साथ ही ये उक्त व्यापार का भी स्पष्ट किया करते हैं। इस प्रकार के समुक्त भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्यपरक जय दिया करते हैं। जैसे (१) एक गद्दी कोठरी का दरवाजा खोलकर बालक को लिये हुए वह भीतर पहुँचा। (२) कुत्ता दुम दबाय हुए लारी में पाम पहुँचा।

‘वाला’ प्रत्ययान्त कृदन्त

होता है। जम बम्बई म बहुत रेगमा कपडा बनान जीर रगन वाल कागवान है।

(घ) विषय क नामिक जग क रूप म। इम तरह क प्रयोग म वाला प्रत्यायन्त वृदन्ता क लिंग तथा वचन वाक्य क उद्देश्य क अनुसार हान है। जम (१) मर तीन मित्र कलकत्ता जान बाटे है। (२) उसकी बहन कल ही आन वाली था।

विशेषणो और सज्ञाओ मे वृद ता का सम्मेलन

जिन्ही म कुछ वृदन्त अपनी क्रियापरक विशेषणार्थ (बाल वाक्य आदि) खा करके और गुणनिर्देशक या वस्तुपरक अथ ग्रन्थ करके जमना विशेषण या सज्ञा क शाब्दभेद म परिगणित होत है। विशेषण या सज्ञा क शाब्दभेद म परिगणित हान समय वृदन्त अपना मुख्य अर्थ (जयान काल म होने वाल व्यापार के रूप म किसी निश्चित गुण की अभिव्यक्ति) का स्थापन हैं। जम पका, सूखा कहा फाग रहन वाल।

विशेषणा म सबसे अधिक अकर्मक क्रियाओ क सामान्य भूतकालिक वृत्त परिगणित हान है। जम खुग फग टूटा घिमा आदि।

विशेषणा क शाब्दभेद म समानाधिक क्रियाओ के सामान्य भूतकालिक वृत्ता क मयाजन भा परिगणित गन है। जस टूटा फूग (टटना फूटना) भूला भटका (भूलना भटकना) घिसा पिटा (घिसना पिटना) पना गिवा (पटना लिखना)।

विशेषणा क जय म समान मूळ म बनी अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओ के सामान्य भूतकालिक वृदन्ता क मयाजना का भी प्रयास हाना है। जस बना-बनाया (बनना बनाना) पका पकाया (पकना पकाना) पिटा पिटाया (पिटना पीटना)।

सज्ञाओ क शाब्दभेद म प्राय सकर्मक क्रियाओ क बहु वाक्य सामान्य भूतकालिक वृत्त तथा वाला जन्त्य प्रत्यय वृदन्ता का परिगणन हाना है।

सज्ञाओ क शाब्दभेद म परिगणित सकर्मक क्रिया क सामान्य भूतकालिक वृदन्त भाववाचक सगाएँ हाता हैं जा व्यापार की प्रक्रिया या उसका फल दिखाना हैं। जम बिया रहा छापा फाग।

बाला प्रत्ययांत वृदन्त प्राय मनुष्यवाचक हान है। जस पन वाला वचन बाग आदि। सज्ञाओ का भाति प्रयुक्त बाला प्रत्ययान्त वृदन्त क अपन म निश्चित व्यक्ति क अनुसार पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग हो सकत हैं,

किन्तु व वृद्धा पुत्रिण म ही प्रयुक्त हान है। स्त्रीणि म गन्का प्रयाग तत्र हाता है जब व कवल स्त्रीजाति म स किसा व्यक्ति को सूचित करत है। पद गचना की दृष्टि स इसका पता चलता है 'वाला' प्रत्यय के अंतिम आ' व 'ई' म परिवर्तन म। जस पढ़न वाला, पढ़न वाली रहन वाला रहन वाली।

ईकारान्त वाला प्रत्ययात् कृदन्ता का विकार ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग वाचक समा शब्दों की भाँति होता है। जस लिखने वाली लिखन बालिया लिखन बालिया लिपन बालिया।

विशेषण तथा मनाआ व गदभेदा म सब प्रकार की क्रियाआ के सामान्य और समुक्त वर्तमानकालि कृदन्त तथा सक्रमक क्रियाआ व समुक्त भूतकालिक कृदन्त व भी भी परिगणित नहीं होत है। विशेषण तथा मनाआ व गदभेदा म वमवाचक कृदन्ता व भी परिगणन नहीं होता है।

विशेषण तथा मनाआ के गदभेदा में अक्रमक क्रियाआ व समुक्त भूतकालिक कृदन्ता का परिगणन विरल हो होता है। जस धिमा हुआ, अपात चालाक। छटा हुआ' अर्थात् घोषेबाज।

सातत्यवाचकालिक कृदन्त

स्वतन्त्र रूप स सातत्यवाचकालिक कृदन्त कवल गुणनिर्देशक व काम म प्रयुक्त हात है। गुणनिर्देशक के काम म प्रयुक्त उक्त कृदन्त क्रिया का घातु स निर्दिष्ट उस व्यापार या अवस्था के सातत्य का सूचित करत है जो वर्तमान या भूतकाल से सम्बन्धित हान है। सातत्यवाचकालिक कृदन्त का काल विधय म क्रिया व काल पर निर्भर करता है। जस (१) व चल रही वृक्ष म भाग गत है। (२) हम उस कुहर म रात व ठाक एक बजे तालाब के किनार की उम भीगा, बफ-मा ठण्डा हा रही ओह की बच पर बठ गय।

पूवकालिक कृदन्त

हिन्नी म पूवकालिक कृदन्त क्रिया का एमा अविकारी अपुरुषवाचक रूप हाता है जिसम एव साथ क्रिया तथा क्रियाविशेषण दाना की विशेषताएँ होती है। पूवकालिक कृदन्त वाक्य म विधायकवाचक का कार्य करत हुए दूसरा क्रिया का स्पष्ट कर दत है तथा जस सम्बन्धित पूव व्यापार का निर्णय करत है।

पूवकालिक कृदन्ता की क्रियासम्बन्धा निम्न विधायताएँ हैं—

यदि वाक्य में पूर्वकालिक कृन्ता से निर्दिष्ट एक से अधिक एक सदृश पूरक व्यापार होत है तो पूर्वकालिक कृदन्त का प्रत्यय प्रायः केवल अन्तिम क्रिया का धातु के पश्चात् ही प्रयुक्त होता है। जैसे छा पीकर लडका स्कूल गया।

हिंदी में पूर्वकालिक कृदन्त बहुधा कर्तृवाच्य नियात्रा में वात हैं। उन वाक्या में जहाँ विधेय कमवाच्यपरक क्रिया से अभिव्यक्त होता है पूर्वकालिक कृदन्त कमवाच्य का अर्थ ग्रहण कर लेता है तथा पूर्ण स्वतंत्र हो जात है। जैसे (१) यह मंदिर चट्टानों का काट कर बनाया गया था। (२) हाथ पकड़कर जरा बठने के लिए इस जाग में बठा लिया गया तो और शरीर न रहा लाचार बठा रहता पड़ा।

पूर्वकालिक कृदन्तो का प्रयोग

वाक्य में पूर्वकालिक कृन्त अधिकतर ऐसे पूरक व्यापार का निर्माण करत है जो क्रिया के पुरुषवाचक रूप में एक मुख्य व्यापार का भाति उस व्यक्ति से सम्बन्धित होता है जो वाक्य में उद्देश्य का कार्य कर रहा होता है। जैसे होटल के बाहर जाकर मित्र ने अपनी जेब में हाथ डालकर कुछ टटोला।

उक्त वाक्य में पूर्वकालिक कृन्ता से निर्दिष्ट जाकर तथा डाँटकर पूरक व्यापार और टटोला क्रिया के टटोला रूप से अभिहित व्यापार एक ही व्यक्ति मित्र से सम्बन्धित है जो इस वाक्य में उद्देश्य का कार्य कर रहा है। अर्थात् मित्र होटल के बाहर आया उसने जेब में हाथ डाला और उसने कुछ टटोला।

पूर्वकालिक कृदन्त से निर्दिष्ट पूरक व्यापार का सम्बन्ध वाक्य के उद्देश्य से इतर व्यक्ति या वस्तु से भी हो सकता है। इस प्रयोग में पूर्वकालिक कृन्त पूर्ण स्वतंत्र हो जाता है। जैसे यहाँ की दीवारा पर बने चित्र देखकर आज भी भारत का पुरानी कला के लिए श्रद्धा से मित्र श्रुत जाता है—इस वाक्य में देखकर पूर्वकालिक कृदन्त से निर्दिष्ट व्यापार तथा श्रुत जाना क्रिया के श्रुत जाना है। इससे पक्का व्यापार के अलग-अलग कर्ता है। पूर्वकालिक कृन्त से अभिहित व्यापार का कर्ता इस वाक्य में कोई भी व्यक्ति या पुरुषवाचक सबनाम है और क्रिया के पुरुषवाचक रूप में एक मुख्य व्यापार का कर्ता अधान् उद्देश्य है सना-गाद सिर।

जिन वाक्या में क्रिया के पुरुषवाचक रूप का जय गौण-भा रहता है और पूर्वकालिक कृदन्त का मुख्य-भा रहता है उन वाक्या में वस्तुतः पूर्वकालिक

कृत्स्न वाक्य क मुख्य व्यापार का वाच्यनिर्देशक होना है। जम (१) उसने बच्चे का गिर छूकर देखा। (२) सरलार माहव न उठ (उन पता का) सागर भी न देखा था। (३) सामंत का भारा रज्जव इमा ठाकुर क दरवाज पर अपनी ज्वरग्रस्त पत्नी को लेकर पहुँचा।

बहुधा पूर्वकालिक कृदन्त मुख्य व्यापार क लिए पूरक व्यापार का नहा बलि उस पूर्ववर्ती सदस व्यापार का निर्देश करता है जो विधेय म क्रिया म व्यक्त मुख्य व्यापार स स्वतन्त्र होना है। एस प्रयोग म पूर्वकालिक कृदन्त का अर्थ क्रिया क पुरुषवाचक रूप क अर्थ जैसा होता है और वाक्य म वह विधेय क सदा काय कर रहा होता है। जस (१) फिर दाता बठकर द्वार बनान लगे। (२) जाकर पानी लाआ। (३) दाता काठरी छाडकर चल पडे। (४) मुली, मैं सच कहता हू मैं घर छाडकर भाग जाऊँगा।

कभी-कभी पूर्वकालिक कृदन्त मुख्य व्यापार क लिए पूरक व्यापार का निर्देश न करके मुख्य व्यापार का कवल अधिक स्पष्ट कर देता है। जैम (१) बसाल क महीन म गहू पककर नयाग हा जाता है। (२) चाँककर देखा चौक क दरवाजे म दो स्वयंसेवक बठ थ।

अनक बार पूर्वकालिक कृदन्त पूरक व्यापार का व्यक्त करत हुए मुख्य व्यापार क प्रसार या साधन का निर्देश करत हैं। जम (१) हम तुझे समझा कर हार गया। (२) हमने टाकटर का टलाफोन करके बुलाया। (३) मैं वस म बठकर घर जाता हू।

वाक्य म भा निपात क साथ प्रयुक्त पूर्वकालिक कृदन्त सनि अथवा विभाषनावोधक का वाच्य करत हैं। जम (१) क्या क क्या स्पष्ट देकर भी सैन-भत का बठना कहता है? (२) वक्त पर आकर भा मैं जमन न मिला।

हिंदी म पूर्वकालिक कृदन्त का पुनर्क्रिया प्राय एम व्यापार का निर्देश करता है जिसका मातृव अवच्छिन्न होता है। जम (१) बच्चा ग राकर सा गया। (२) रई के रंगा स भाप क बाप हमारे गिरा का छू-छूकर बराब घूम रह थ।

नकारात्मक वाक्या म नकारात्मक निपात जो प्राय विधेय क पूर्व होत है पूर्वकालिक कृदन्त म भा सम्बन्धित होत है। जम हाथ-मुह धाकर घर खाना खान नही बैठता है।

एम वाक्या क विधेय म क्रिया क व्यापार म हा नहा अपितु पूर्वकालिक कृदन्त म निर्दिष्ट व्यापार म भा इनका क्रिया जाना है। जब पूर्वकालिक कृदन्त स निर्दिष्ट व्यापार स इनका क्रिया जाना है तब वह व्यापार बहुधा

विधय न क्रिया के व्यापार का वारण होता है। पूर्वकालिक कृदन्तो के साथ प्रायः न' निपात का प्रयोग होता है। जैसे प्रदत्त न समझकर मैंने उसे दोहराने को कहा।

क्रिया को धातु के रूप में पूर्वकालिक कृदन्तों द्वारा पुरुषवाचक क्रिया के साथ जुड़ने से वाक्य रचनापरक शब्दसमुदायों का निर्माण होता है। इन शब्दसमुदायों के अंगों (अर्थात् पूर्वकालिक कृदन्त तथा पुरुषवाचक क्रिया) का अर्थ पूर्णतः घटे रहता है और एक दूसरे के बाद हो रहे दो व्यापारों की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार के शब्दसमुदायों में पूर्वकालिक कृदन्त क्रिया के पुरुषवाचक रूप जसा वाक्य कर रहे होते हैं और वाक्य में विधेय-जसा वाक्य। जैसे (१) वह यह कह गया (अर्थात् उसने यह कहा और गया)। (२) कुछ काम देंगे हज़ूर? हाँ हाँ दूंगा।

बहुधा पूर्वकालिक कृदन्त ऐसे शब्दसमुदायों में समाविष्ट होते हैं जिनके अर्थ उक्त शब्दसमुदाय के अंगों से भिन्न होते हैं। इस प्रकार के शब्दसमुदायों में कृदन्तों का अर्थ गौण हो जाता है और समग्र शब्दसमुदाय विधिपरक या आत्मिकता आदि जैसे निश्चयपरक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। जैसे ले जाना ले चलना आ पहुँचना आ पहुँचना हो लेना आ कूदना आ निकलना, आ घमकना।

'छोड़ना क्रिया से बना 'छोड़कर पूर्वकालिक कृदन्त को विभक्तिचिह्न के समोजन में 'सिवाय का अर्थ देता है। जैसे उसको छोड़कर सब विद्यार्थी धोनी में उपस्थित हैं।

'लेना' क्रिया से बना लेकर पूर्वकालिक कृदन्त का विभक्तिचिह्न सङ्गित या को के बिना भी के साथ का अर्थ दिया करता है। जैसे वह कूने का लेकर निकार लेलने गया।

'होना क्रिया से बना होकर पूर्वकालिक कृदन्त 'माग स' का अर्थ लिया करता है। जैसे वह नितिला हाकर बल्कला आया।

क्रिया के पुरुषवाचक रूप

हिन्दी में क्रिया के पुरुषवाचक रूप क्रिया की अपरिवर्तित या परिवर्तित धातु से विशेष क्रियापरक पुरुषवाचक प्रत्ययों अथवा कृदन्तों द्वारा बनते हैं। क्रिया के पुरुषवाचक रूप जो क्रिया की धातु में विशेष पुरुषवाचक प्रत्ययों से बनते हैं हिन्दी में उनकी संख्या बहुत नहीं है। उनमें परिगणित हात हैं

(क) निरूपवाचक प्रकार का 'हाना' क्रिया के सामान्य वर्तमान काल का सरल भेद ।

(ख) प्रथम भविष्यत काल ।

(ग) आज्ञावाचक प्रकार के भेद ।

(घ) सम्भावनावाचक प्रकार का सामान्य भेद ।

शेष सब पुरुषवाचक रूप कृदन्तो द्वारा बनते हैं । वदन्तपरक पुरुषवाचक रूप कृदन्ता से बनते हैं या कृदन्ता तथा सहायक क्रियाओं से बनते हैं । क्रिया के पुरुषवाचक रूप जो क्रिया की धातु से पुरुषवाचक प्रथमा द्वारा बनते हैं या केवल कृदन्तो से बनते हैं वे सामान्य पुरुषवाचक कहते हैं और जो कृदन्तो तथा सहायक क्रियाओं से बनते हैं वे जल्लि पुरुषवाचक रूप कहते हैं ।

सामान्य कृदन्तपरक पुरुषवाचक रूपा में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा सातत्यबोधक कृदन्त प्रयुक्त होते हैं । जल्लि कृदन्तपरक पुरुषवाचक रूपा में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्तवाचक तथा वमवाचक कृदन्ता का प्रयोग होता है । सहायक क्रियाओं के रूप में 'होना', 'रहना', 'जाना', 'आना', 'करना' तथा कुछ अन्य क्रियाओं का प्रयोग होता है । क्रिया के पुरुषवाचक रूपा में परिगणित ज्ञान है का प्रकार त्रिभि तथा वाच्य ।

काल

हिंदा में काल क्रियापरक रूपा का ऐसा समवाय है जो भाषा में प्रत्यक्ष एवं वास्तव में विद्यमान समय का प्रतिनिधित्व करता है और क्रिया से अभिव्यक्त व्यापार या अवस्था के सम्बन्ध का कथन के क्षण के प्रति निर्देश करता है । एतिनासित वर्णना में काल, पूर्वकालिकता, आनुपूर्विकता तथा समयकालानता का निर्देश करता है । काल के तीन मुख्य भेद हैं वर्तमान भूत तथा भविष्यत ।

वर्तमान काल ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण में होता है या ग्राह्यत सत्य होता है । जैसे (१) वह एक जख्म पर पड़ता है । (२) पृथ्वी मुख का परिपक्वता करता है ।

भूतकाल एक व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण से पूर्व हुआ रहा या हुआ था । जैसे जमना समरा में रत्ना थी ।

भविष्यत्काल एक व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण के पश्चात् होगा । जैसे मैं कल बापस मरठ चला जाऊंगा ।

उपगत काल अतृप्त न स्पष्ट है कि इस या उस काल में सम्बन्धित

यापार वतमान भन या भविष्यतकाल के किसी निश्चित रूप में अभिहित होता है।

कह भाषाया में क्रिया के काग व तान मुख्य भेदा के अनेक अवतार भन होत है। क्रिया में भी क्रिया के काल व इसी तरह अनेक अवतार भेद होत है। ये भेद इसलिए हात ह ताकि काल के विभिन्न भेदों से यापार की पूर्णता या अपूर्णता यक्त हो सके। अतएव हिंदी में काल के बहुसंख्यक भेद व्यापार के संपादन का निर्देश करने के साथ साथ उसकी पूर्णता या अपूर्णता का भी निर्देश करत है।

प्रकार

क्रिया के प्रकारों का ऐम क्रियापरक रूप कहन हैं जो वस्तुस्थिति के प्रति वक्ता से अभिहित क्रिया के व्यापार या अवस्था का निर्देश करते हैं। क्रिया के प्रकार जो अर्थ देन हैं उन्हें प्रकारपरक कहत है। हिंदी में अनुमान द्विविधा सम्भावना आदि जस भाव केवल क्रिया के प्रकारों से ही नहीं अपितु अन्य साधनों से भी व्यक्त हो सकत है। एम साधनों में सम्भावना है किन्ही विनाय गन्ता, निपाना तथा विनाय क्रियाओं के प्रयोग का जो प्रकारपरक अर्थ दत है। जस (१) गायन वह यहाँ गनी रहता था। (२) सम्भव है कि मेरी बहिन आज ही जा सकेगी।

परंतु प्रकारपरक भावा को यवन करने का मुख्य साधन है क्रिया के अनेक प्रकार। हिंदी में ये क्रियापरक रूप मक्षिष्टात्मक या विम्लिष्टात्मक होते हैं। पदरचनापरक तथा भावाधक विनयताओं के अनुसार हिन्दी में क्रियाओं के ये चार प्रकार हैं (१) निश्चयाधक प्रकार, (२) आनाधक प्रकार, (३) सम्भावनाधक प्रकार तथा (४) संकेताधक प्रकार।

निश्चयाधक प्रकार

क्रिया के निश्चयाधक प्रकार का कार्य अपना पदरचनापरक चिह्न नहीं है जो उसका पूर्ण निर्देश कर सके। निश्चयाधक प्रकार की यह विशेषता है कि उसका कार्य के रूप हात हैं। निश्चयाधक प्रकार क्रिया के व्यापार की वस्तुविरता का दर्शाता हुआ बनाता है कि वक्ता उस व्यापार का एक तथ्य समझता है और उसका वतमान भन या भविष्यतकाल में मध्यम जाइता है।

निश्चयाधक प्रकार के तीन मुख्य काग के पदार्थ अवतार भेद होत हैं। मुविधा के लिए हम इन अवतार भेदों को यनी नाम नाम लेंगे। उनमें

वर्तमानकाल में निम्न का परिणाम होता है

- (क) सामान्य वर्तमानकाल ।
- (ख) जटिल वर्तमानकाल ।
- (ग) सातत्यबाधक वर्तमानकाल ।
- (घ) जटिल सातत्यबाधक वर्तमानकाल ।

भूतकाल में निम्न का परिणाम होता है

- (क) सामान्य अपूर्ण भूतकाल ।
- (ख) जटिल अपूर्ण भूतकाल ।
- (ग) सतत्यबाधक भूतकाल ।
- (घ) जटिल सातत्यबाधक भूतकाल ।
- (ङ) सामान्य भूतकाल ।
- (च) आसन्न भूतकाल ।

- (छ) पूर्ण भूतकाल ।

भविष्यत्काल में निम्न का परिणाम होता है

- (क) प्रथम भविष्यत्काल ।
- (ख) द्वितीय भविष्यत्काल ।
- (ग) तृतीय भविष्यत्काल ।
- (घ) मान्यबाधक भविष्यत्काल ।

वर्तमानकाल तथा उसके भेद

सामान्य वर्तमानकाल

'हाना' क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल में दो भेद होते हैं मग्न तथा जटिल । 'हाना' क्रिया का वर्तमानकाल का सरल भेद उक्त क्रिया की परिवर्तित धातु में पुरुषवाचक प्रत्ययों से बनता है । वर्तमानकाल के सरल भेद में 'हाना' क्रिया के रूप बदल पुरुष तथा वचन में बदलते हैं । एक वचन में मध्यम तथा अथ पुरुष के रूप एक जैसे होते हैं । व वर्तमानकाल में उत्तम मध्यम (आत्ममूचक आप मचनाम से सम्बन्धित) तथा अथ पुरुष के रूप एक जैसे होते हैं ।

सामान्य वर्तमानकाल के सरल भेद में 'होना' क्रिया की स्वरचना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	(मैं) हूँ	(हम) हैं

मध्यम पुरुष	(तू) है	(तुम) हो, (आप) हैं
अन्य पुरुष	(वह) है	(ये, वे) हैं

सामान्य वर्तमानकाल का निर्माण

सामान्य वर्तमानकाल क्रिया के सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त तथा होना क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल के सरल भेद के रूप के संयोजन से बनता है। जैसे कॉलेज के लड़का को देखता हूँ या जोर जोर से हँसता है। साफ़-साफ़ रहता है और कभी इसको बनाने है कभी उससे मजाक करत है।

सामान्य वर्तमानकाल में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुर्लिंग) में बदलत है और हाना' सहायक क्रिया बनती है पुरुष और वचन में।

सामान्य वर्तमानकाल में 'पड़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुर्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पड़ता हूँ	(मैं) पड़ती हूँ
(तू) पड़ता है	(तू) पड़ती है
(यह वह) पड़ता है	(यह वह) पड़ती है
बहुवचन पुर्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पड़ते हैं	(हम) पड़ती हैं
(तुम) पड़ते हो	(तुम) पड़ती हो
(आप) पड़ते हैं	(आप) पड़ती हैं
(ये, वे) पड़ते हैं	(ये, वे) पड़ती हैं

यदि सामान्य वर्तमानकाल में क्रिया के साथ 'नहीं' सहायक निपात प्रयुक्त होता है तो हाना सहायक क्रिया का लोप हो सकता है और स्त्रीलिंग बहुवचन रूप में सामान्य वर्तमानकालिक कृदन्त इस अंत में लग जाता है। जैसे ये लड़कियाँ नहीं खेलती।

सामान्य वर्तमानकाल का प्रयोग

हिंदी में सामान्य वर्तमानकाल का प्रयोग होता है

(क) उसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जा करने के क्षण के माध्यम से हो रहा है। उस कथा को अवधारण पड़त है? नहा में परिवर्तन पड़ता हूँ।

(ग) उस व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसका करने के क्षण से

सम्बन्ध नहीं होता है। जैसे यह लड़का अभी स्कूल में पढ़ता है।

(ग) ऐम व्यापार का निर्देश करने के लिए जा नित्य एव गवदा होता है। जैसे (१) पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। (२) रूस में शीत काल में नीं याँ जम जाती है।

(घ) ऐम भावी व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसमें उस व्यापार का निर्यातता की उद्यतता या सामीप्य की विवक्षा होती है। जैसे (१) मैं अभी जाता हूँ, मरकार। (२) मैं आपके पैसे पड़ती हूँ मकान इस वक्त न बर्खे। (३) तुम म्माओ मोहन। तुम्हें नील जल्दी आ जाती है।

यदि क्रिया के व्यापार को अनुमानपरक समझा जाता है तो सामान्य वतमानकाल में क्रिया सम्भावना विरोपनाबोधक उपवाक्यों में भी भावी व्यापार का निर्देश कर सकती है। जैसे आप लोग बर्खन हैं तो मैं तीस हजार की बातचीत करूँगा।

(ङ) ऐम भूतकालीन व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसमें वक्ता उस व्यापार को वतमान की भांति प्रस्तुत करना चाहता है। जैसे (१) वह भा समय गई ठीक हो कहता है। (२) मैं दो चार हजार के लिए घूठ न बाँटूँगा, नहीं-नहीं मर मैं कब कहता हूँ।

सामान्य वतमानकाल में 'होना' क्रिया का जटिल भेद

सामान्य वतमानकाल का 'होना' क्रिया का जटिल भेद अथ क्रियाभा के सामान्य वतमानकाल की भांति बनता है अर्थात् 'होना' क्रिया के सामान्य वतमानकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य वतमानकाल के मरल भेद के रूपा के संयोजन से बनता है।

सामान्य वतमानकाल के जटिल भेद में 'होना' क्रिया की स्वरचना

एकवचन पुल्लिङ्ग

(मैं) होता हूँ

(तू) होता है

(यह वह) होता है

बहुवचन पुल्लिङ्ग

(हम) होते हैं

(तम) होते हो

एकवचन स्त्रीलिङ्ग

(म) हान्ती है

(तू) होती है

(यह, वह) होती है

बहुवचन स्त्रीलिङ्ग

(हम) होती हैं

(तुम) होती हो

(आप) होते हैं
(ये, वे) होते हैं

(आप) होती हैं
(ये, वे) होती हैं

जटिल वतमानकाल

जटिल वतमानकाल क्रिया व सामान्य वतमानकालिक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य वतमानकाल के जटिल भेद व रूपा के संयोजन से बनता है। जैसे वह प्रातः अपा जूते पर धालिश करता होता है।

जटिल वतमानकाल में सामान्य वतमानकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) में बदलते हैं और 'होना' क्रिया के सामान्य वतमानकाल के सरल भेद के रूप पुरुष और वचन में बदलते हैं।

जटिल वतमानकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग

(म) पढ़ता होता हूँ

(तू) पढ़ता होता है

(यह, वह) पढ़ता होता है

एकवचन स्त्रीलिंग

(म) पढ़ती होती हूँ

(तू) पढ़ती होती है

(यह, वह) पढ़ती होती है

बहुवचन पुल्लिंग

(हम) पढ़ते होते हैं

(तुम) पढ़ते हो,

(आप) पढ़ते होते हैं

(ये, वे) पढ़ते होते हैं

बहुवचन स्त्रीलिंग

(हम) पढ़ती होती हैं

(तुम) पढ़ती होती हो,

(आप) पढ़ती होती हैं

(ये, वे) पढ़ती होती हैं

जटिल वतमानकाल का प्रयोग

हिन्दी में जटिल वतमानकाल ऐसे व्यापार का निदर्श करन के लिए प्रयुक्त होता है जो वतमान में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव में सम्बन्धित होता है। जैसे उमका भाई यहाँ घूमने के लिए आता होता है।

सातत्यबोधक वतमानकाल

सातत्यबोधक वतमानकाल क्रिया व सातत्यबोधक कृदन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य वतमान के सरल भेद के रूपा के संयोजन से बनता है। जैसे वह घर में जा रहा है।

सातत्यबोधक वतमानकाल में सातत्यबोधक कृदन्त लिंग तथा वचन

(पुल्लिग) में बदलते हैं और 'होना' क्रिया के सामान्य वर्तमानकाल में मरल भेद के रूप पुरुष तथा वचन में बदलते हैं

सातत्यबोधक वर्तमानकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिग

(म) पढ़ रहा हूँ

(तू) पढ़ रहा है

(यह, वह) पढ़ रहा है

बहुवचन स्त्रीलिग

(म) पढ़ रही हूँ

(तू) पढ़ रही है

(यह, वह) पढ़ रही है

बहुवचन पुल्लिग

(हम) पढ़ रहे हैं

(तुम) पढ़ रहे हो,

(आप) पढ़ रहे हैं

(वे, वे) पढ़ रहे हैं

बहुवचन स्त्रीलिग

(हम) पढ़ रही हैं

(तुम) पढ़ रही हो,

(आप) पढ़ रही हैं

(वे, वे) पढ़ रही हैं

सातत्यबोधक वर्तमानकाल में यदि क्रिया के साथ 'नहीं' नकारात्मक निपात प्रयुक्त होता है तो 'होना' महायक क्रिया के रूप कभी कभी लुप्त हो जाते हैं। जैसे वह कम घर में नहीं रह रहा।

सातत्यबोधक वर्तमानकाल का प्रयोग

हिन्दी में सातत्यबोधक वर्तमानकाल का प्रयोग होता है

(क) ऐसे सातत्यबोधपरक व्यापार का निर्देश करने के लिए जो कथन के क्षण के साथ-साथ होता है। जैसे पंखों पर चिड़िया बोल रही हैं।

(ख) ऐसे सातत्यबोधपरक व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसका कथन के क्षण में सम्बन्ध नहीं होता है। जैसे हम डाक्टर की दवा खा रहे हैं।

(ग) ऐसे सातत्यबोधपरक व्यापार का निर्देश करने के लिए जो नियम एक सचवा होता है। जैसे पक्षी अपनी घुरी पर घूम रही है।

(घ) ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसका सम्पादन निरन्तर भविष्य में होगा। ऐसे प्रयोग में वाक्य प्रायः सम्भवविशेषताबोधक भविष्य का सचवा करता होता है। जैसे मेरे मित्र की बहिन आज माँझ का सम्बर्द्ध जा रही है।

जाना क्रिया का सातत्यबोधक वर्तमानकाल असामान्य कारक में क्रिया के सामान्य रूप के मन्त्रजन में क्रिया के सामान्य रूप में निदिष्ट व्यापार के सम्पादन का अर्थ प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे (१) वह चिन्ती

लिखा जा रहा है। (२) यह सभा परमा शाम की पाच बज शान जा रही है।

जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल

जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल क्रिया के सातत्यबोधक वृद्धत तथा होना क्रिया के सामान्य वतमानकाल व जटिल भेद के रूपा के संयोजन से बनता है। जैसे पुत्र का उन्नति का दम्बक पिता प्रसन्न हो रहा होता है।

जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल में सातत्यबोधक वृद्धत तथा होना क्रिया का वतमानकालिक वृद्धत क्रिा और वचन (पुल्लिग) में बदलते हैं और होना क्रिया के सामान्य वतमानकाल के सरल भेद के रूप पुरुष तथा वचन में बदलते हैं।

जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिग

(मैं) पढ़ रहा होता हूँ

(तू) पढ़ रहा होता है

(यह, वह) पढ़ रहा होता है

बहुवचन पुल्लिग

(हम) पढ़ रहे होते हैं

(तुम) पढ़ रहे होते हो,

(आप) पढ़ रहे होते हैं

(वे, वे) पढ़ रहे होते हैं

एकवचन स्त्रीलिग

(मैं) पढ़ रही होती हूँ

(तू) पढ़ रही होती है

(यह, वह) पढ़ रही होती है

बहुवचन स्त्रीलिग

(हम) पढ़ रही होती हैं

(तुम) पढ़ रही होती हो, (आप)

पढ़ रही होती हैं

(वे, वे) पढ़ रही होती हैं

जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल का प्रयोग

हिंदी में जटिल सातत्यबोधक वतमानकाल में सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करन के लिए प्रयुक्त होता है जो वतमान में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव से सम्बंधित होता है। जैसे मेरा मित्र भोजन के बाद आराम कर रहा होता है।

भूतकाल तथा उसके भेद

सामान्य अपूर्ण भूतकाल

होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल में भा दो भूत काल हैं सरल तथा जटिल। होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूप में

‘था’ महाप्रत्यय क्रिया प्रयुक्त होती है। यह सहायक क्रिया केवल लिङ्ग तथा वचन में बदलती है। जैसे

एकवचन पुल्लिङ्ग

(मैं) था

(तु) था

(वह, वह) था

एकवचन स्त्रीलिङ्ग

(मैं) थी

(तु) थी

(वह, वह) थी

बहुवचन पुल्लिङ्ग

(हम) थे

(तुम) थे, (आप) थे

(वे, वे) थे

बहुवचन स्त्रीलिङ्ग

(हम) थीं

(तुम) थीं, (आप) थीं

(वे, वे) थीं

जैसे छोटा सा भक्तान था परन्तु उसके गाव वाल गद्दी के आदर ध्यजक शब्द से पुकारा करने थे और ठाकुर की डर के मारे राजा शब्द से संबोधित करते थे।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल का निर्माण

सामान्य अपूर्ण भूतकाल क्रिया के सामान्य वतमानकालिक कृदन्त तथा ‘होना’ क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूपा के समोजन से बनता है।

सामान्य वतमानकाल में तथा सामान्य अपूर्ण भूतकाल में ‘होना’ क्रिया के सरल भेद का प्रयोग

उक्त दो भागों में ‘होना’ क्रिया के सरल भेद का उपयोग होता है

(क) स्वतंत्र रूप में। इस रूप में जाना क्रिया के सरल भेद किसी वा उपस्थिति या विद्यमानता का सामान्य निर्णय करता है। जैसे (१) वह बम्बई में है। (२) वह पुस्तक मेज पर है (बी)।

(ख) मुख्य क्रियाओं के रूपा के निर्माण में। जैसे वह पढ़ता है (था)।

(ग) महाप्रत्यय क्रिया के रूप में। सहायक के साथ प्रयुक्त ‘जाना’ क्रिया भवन तथा का निर्णय करती है। जैसे वह विद्यार्थी है (था)।

विशेषण के साथ प्रयुक्त जाना क्रिया निर्देश करता है —

(१) किसी अकाल्य भवन का। जैसे (१) पत्नी गोरा है। (२) प्राचीन काल में यूरोप का जलवायु जलिक गर्म था।

(२) क्रियाएं घटना का। जैसे गडका बीमार है (था)।

(३) एक भी वस्तुआ के समूह में न किसी एक निश्चिन्त का । जमे वह म्याहा कागे है (थी) ।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिङ्ग

(मे) पढ़ता था

(तू) पढ़ता था

(यह, वह) पढ़ता था

एकवचन स्त्रीलिङ्ग

(मैं) पढ़ती थी

(तु) पढ़ती थी

(यह वह) पढ़ती थी

बहुवचन पुल्लिङ्ग

(हम) पढ़ते थे

(तुम) पढ़ते थे, (आप) पढ़ते थे

(व, वे) पढ़ते थे

बहुवचन स्त्रीलिङ्ग

(हम) पढ़ती थीं

(तुम) पढ़ती थी (आप) पढ़ती थीं

(वे वे) पढ़ती थी

ऊपर दी गयी तार्किकाआ में स्पष्ट है कि पुल्लिङ्ग में वचन में सामान्य वर्तमानकालिक वृद्धत तथा सहायक क्रिया माना ही बदलत है । स्त्रीलिङ्ग में सामान्य वर्तमानकालिक वृद्धत कागे मुख्य क्रिया माना वचन में अपरिवर्तित रहता है । वचन में केवल सहायक क्रिया बदलती है । यन्त्रि क्रिया के साथ नहा नकारात्मक निपात प्रयुक्त होता है तो सहायक क्रिया के रूप लुप्त भी हो सकते हैं । जस्त यह कल काई पुस्तक नहीं पढ़ता । जब सहायक क्रिया का लोप माना है तब सामान्य वर्तमानकालिक वृद्धत बहुवचना में तो के रूप में प्रयुक्त होता है जैसे परमा में लट् क्रिया नहा घूर्मती ।

यदि भूतकाल में क्रिया के व्यापार की जाहनि अभीष्ट होना है तो सामान्य अपूर्ण भूतकाल में नहा नकारात्मक निपात के प्रयोग के अभाव में भी सहायक क्रिया का रूप हा जाता है । जस्त (१) कभी उस काई काल रंग का कमाज सिखा दना जीर कभी काई पाजामा बनवा दता । (२) हफ प्रकाश और अधियारे में रंगकर कभी न नीले दोखत कभी सफ़ और फिर ल में अरुण पड़ जात । (३) एक समय में अकली कमर में चुपचाप काइ रितात्र पढ़ती या अपनी समयस्वाआ में जा उभ लखन या मिन्न आयी होनी बात करता प्रभा के पास व पाना की डगिया और पानदान रख जानी ।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल का प्रयोग

सामान्य अपूर्ण भूतकाल में माना क्रिया का जन्मि भूत अर्थ क्रियाआ के सामान्य अपूर्ण भूतकाल की भांति बनना है अर्थात् 'माना क्रिया के सामान्य

वर्तमानकालिक कृन्त तथा 'होना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूपा के मघाजन से बनता है।

सामान्य अपूर्ण भूतकाल के जटिल भेद में 'होना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिङ्ग	एकवचन स्त्रीलिङ्ग
(मैं) होता था	(मैं) होती थी
(तु) हाता था	(तु) होती थी
(यह, वह) होता था	(यह, वह) हाता थी
बहुवचन पुल्लिङ्ग	बहुवचन स्त्रीलिङ्ग
(हम) होते थे	(हम) हाती थीं
(तुम) होत थे, (आप) होत थे	(तुम) होती थीं (आप) होती थीं
(वे, व) हात थे	(वे, वे) होती थीं

सामान्य वर्तमानकाल में तथा सामान्य अपूर्ण भूतकाल में 'होना' क्रिया के जटिल भेद का प्रयोग

उपरोक्त शीषक में दिये काल में होना क्रिया का जटिल भेद स्वतन्त्रता से तथा सहायक क्रिया के तौर पर प्रयुक्त होता है। स्वतन्त्र प्रयोग में वह किसी की उपस्थिति या विद्यमानता की प्रायिकता का निर्देश करता है। जैसे (१) यह पुस्तक मेज पर हाती है (थी)। (२) उसने यहाँ बहुत महत्मान हात है (थी)। (३) इन स्थानों में बहुत जानवर हाते हैं (थे)। (४) मेरे भाई के पास मग पैसा होता है। (५) उस जादू की पास बहुत बड़ा सोना होता था।

विशेषण के साथ प्रयुक्त सहायक क्रिया के तौर पर 'होना' क्रिया निर्देश करती है—

(क) किसी वस्तु के स्थायी गुण या विशेषता का। जैसे (१) लाहा बड़ा हाता है। (२) कीए का हात है।

(ग) किसी घटना की प्रायिकता या आवृत्ति का जैसे (१) यह लड़का अक्सर बाला होता है (था)। मनागद के साथ प्रयुक्त होना क्रिया यद्युता का भी निर्देश करती है। जैसे वह मरा बाबा हाता है।

गयुक्त नाभिक क्रियाओं तथा क्रियानामिक गदममुदाया में क्रियापरक अंग के तौर पर होना क्रिया के जटिल भेद अवसक व्यापार की प्रायिकता का

निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। जम (१) हमारा पाठ सुबह नौ बजे शुरू होते हैं (५)। (२) उस शहर पर बहुत हमला होना था।

बाध्यतामूलक वाक्यांश में 'होना' क्रिया का जटिल भेद क्रिया के सामान्य रूप से व्यक्त व्यापार का प्राथिकता का निर्देश करता है। जम मुझे वहाँ जाना होता है (था)।

जटिल अपूर्ण भूतकाल

जटिल अपूर्ण भूतकाल क्रिया के सामान्य वर्तमान कालिक वृद्धन्त तथा होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल का जटिल रूपा के संयोजन से बनता है। जैसे जय प्रातः ६ बजे में उसके घर जाता था तब भी वह सोता होता था।

जटिल अपूर्ण भूतकाल में वचन (पुर्लिंग) में सामान्य वर्तमानकालिक वृद्धन्त तथा सहायक क्रिया दोनों ही बदलती हैं। स्त्रीलिंग में सामान्य वर्तमान काल वाली मुख्य क्रिया दोनों वचना में अपरिवर्तित रहती है। वचन में बदल सहायक क्रिया बदलती है।

१. जटिल अपूर्ण भूतकाल में 'पढ़ता' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुर्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग
(मैं) पढ़ता होता था	(मैं) पढ़ती होती थी
(तू) पढ़ता होता था	(तू) पढ़ती होती थी
(यह वह) पढ़ता होता था	(यह वह) पढ़ती होती थी
बहुवचन पुर्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
(हम) पढ़ते होते थे	(हम) पढ़ती होती थीं
(तुम) पढ़ते होते थे (आप)	(तुम) पढ़ती होनी थीं (आप) पढ़ती होती थीं
(ये वे) पढ़ते होते थे	(ये, वे) पढ़ती होती थीं

जटिल अपूर्ण भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी में जटिल अपूर्ण भूतकाल ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो भूतकाल में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव में सम्प्रतिष्ठित होता है। जय राममूर्ति प्रातः उठकर नियमपूर्वक व्यायाम करता होता था।

सातत्यबोधक भूतकाल

सातत्यबोधक भूतकाल क्रिया व सातत्यबोधक वृत्तन तथा हाना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल व सरल भेद व रूपों व मयाजन स बनता है। जैसे कल बड़े जोर से पानी बरस रहा था।

सातत्यबोधक भूतकाल में सातत्यबोधक वृद्धन्त लिंग तथा वचन (पुंल्लिङ्ग) में बदलता है। 'हाना' क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के सरल भेद के रूप लिंग तथा वचन में बदलते हैं।

सातत्यबोधक भूतकाल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुंल्लिङ्ग

(मैं) पढ़ रहा था

(तू) पढ़ रहा था

(यह वह) पढ़ रहा था

बहुवचन पुंल्लिङ्ग

(हम) पढ़ रहे थे

(तुम) पढ़ रहे थे, (आप) पढ़

रहे थे

(वे वे) पढ़ रहे थे

एकवचन स्त्रीलिंग

(मैं) पढ़ रही थी

(तू) पढ़ रही थी

(यह वह) पढ़ रही थी

बहुवचन स्त्रीलिंग

(हम) पढ़ रही थीं

(तुम) पढ़ रही थीं (आप) पढ़

रही थीं

(वे, वे) पढ़ रही थीं

सातत्यबोधक भूतकाल का प्रयोग

लिंग में सातत्यबोधक भूतकाल का प्रयोग होता है —

(क) हम सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए 'ना' भूत काल व किमी क्षण में या किमी अल्प व्यापार व सम्पन्न के भण में होता था। जैसे (१) मैं उस समय एक किताब लेकर पढ़ने का बहाना कर रहा था। (२) मुझे तो मुझ से ही इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि क्या वह इस इतनी महत्वपूर्ण बात का अत्यन्त लुब्ध बनाकर उछाल दृष्ट है। (-) एक दिन मध्याह्न समय जब जावांग में बाटल रहता रहा व बुझाया नामक गाँव में एक पन्द्रहों गिण्टाल ब्राह्मण व द्वार पर जाया। (६) जब तांगरे दिन एक आन्धों का लकड़ पहुँचा तो पारदा बगल व मामन घाम पर लल रहा थी।

(ग) हम सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसकी

पृष्ठभूमि में किसी अन्य व्यापार का सम्पादन हुआ है। जैसे (१) मरी घमपत्नी जोर लाल की भा एक दिन बठी हुई बातें कर रही थी कि मैं पहुँच गया। (२) धूप का गरमी से मुखी होकर बह चिता भुलान का प्रयत्न कर रहा था कि किसी ने पुकारा—भूल जाओ रह कहाँ ?

कभी कभी बल देने के लिए मुख्य क्रिया की धातु के बाद ही निपात का प्रयोग किया जाता है। जैसे वह स्टेशन आ ही रहा थे कि गाड़ी निकल गयी।

जाना क्रिया का सातत्यबोधक भूतकाल असाधारण कारण में क्रिया के सामान्य रूप के तयोजन से क्रिया के सामान्य रूप द्वारा निर्दिष्ट भूतकालिक व्यापार के सम्पादन का ध्येय प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे (१) वह वहाँ ही चिढ़ा निम्न जा रहा था। (२) मैं आवाज सुनान जा ही रहा था कि वह उतर कर सामने खड़ा हो गया।

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल क्रिया के सातत्यबोधक कृदन्त तथा हाना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के जटिल भेद के रूपों के तयोजन से बनता है। जैसे जब मैं उसके घर जाता था वह प्रायः कोई पुस्तक पढ़ रहा होता था।

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल में सातत्यबोधक कृदन्त तथा हाना क्रिया का वर्तमानकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिंग) में बदलन है और होना क्रिया के सामान्य भूतकाल के सरल भूतकाल के रूप लिंग तथा वचन में बदलन है।

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल में 'पठना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिंग

(मैं) पढ़ रहा होता था

(तू) पढ़ रहा होता था

(यह, वह) पढ़ रहा होता था

बहुवचन पुल्लिंग

(हम) पढ़ रहे होते थे

(तुम) पढ़ रहे होते थे (आप)

पढ़ रहे होते थे

(वे, वे) पढ़ रहे होते थे

एकवचन स्त्रीलिंग

(मैं) पढ़ रही होती थी

(तू) पढ़ रही होती थी

(यह, वह) पढ़ रही होती थी

बहुवचन स्त्रीलिंग

(हम) पढ़ रही होती थीं

(तुम) पढ़ रही होती थीं (आप)

पढ़ रही होती थीं

(वे, वे) पढ़ रही होती थीं

जटिल सातत्यबोधक भूतकाल का प्रयोग

हिंदी में जटिल सातत्यबोधक भूतकाल ऐसे सातत्यबोधक व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो भूतकाल में किसी व्यक्ति के अभ्यास या स्वभाव से सम्बन्धित होता है। जैसे वह प्रातः उठकर प्रतिदिन सर करने जा रहा होता था।

सामान्य भूतकाल

सामान्य भूतकाल सामान्य भूतकालिक वृद्धन में व्यक्त होता है। जैसे (१) लड़का आया। (२) लड़ोवान चुपचाप बैठा का हाकन लगा।

सामान्य भूतकाल के रूपा के निर्माण में क्रिया की अकर्मकता कर्मकता के अनुसार भेद किया जाता है।

सामान्य भूतकाल में सब अकर्मक क्रियाओं की स्फुरचना निम्न उदाहरण के अनुसार होता है —

सामान्य भूतकाल में 'पहुँचना' अकर्मक क्रिया की स्फुरचना

एकवचन पुल्लिंग

(मैं) पहुँचा

(तू) पहुँचा

(मह. वह) पहुँचा

एकवचन स्त्रीलिंग

(मैं) पहुँची

(तू) पहुँची

(मह. वह) पहुँची

बहुवचन पुल्लिंग

(हम) पहुँचे

(तुम) पहुँचे, (आप) पहुँचे

(वे, वे) पहुँचे

बहुवचन स्त्रीलिंग

(हम) पहुँचीं

(तुम) पहुँचीं (आप) पहुँचीं

(वे, वे) पहुँचीं

उपरोक्त तालिका में स्पष्ट है कि सामान्य भूतकाल में क्रिया लिंग तथा वचन में बदलता है। संशुद्ध वाक्य में सामान्य भूतकाल में क्रिया से अभि व्यक्त विधेय के लिंग तथा वचन उद्देश्य का अनुमान करने हैं। ऐसा वाक्यरचना जिसमें विधेय का रूप उद्देश्य (वर्ती) के अनुसार होता है वस्तु वाक्यपरक वाक्य रचना कहता है।

क्रिया के पुरुषवाचक अर्थ रूपा की भाँति जिनमें सामान्य भूतकालिक वृद्धन का समावेश होता है सामान्य भूतकाल का प्रयोग क्रिया के अर्थ पर निर्भर करता है। सब अकर्मक क्रियाएँ केवल नत वाक्यपरक वाक्यरचना में

प्रयुक्त होती हैं। सकर्मक क्रियाएँ प्रायः उक्त प्रकार की वाक्य रचना में प्रयुक्त नहीं होती हैं। सामान्य भूतकाल में तथा दूसरे पुरुषवाचक रूपों में जिसमें सामान्य भूतकालिक कृत तत् समाविष्ट होते हैं क्रिया की रूपरचना में 'ने' विभक्तिचिह्न का प्रयोग अनिवार्य है जिसके वाङ्मय वाक्य में उद्देश्य सामान्य कारक में नहीं बल्कि 'ने' विभक्तिचिह्न सहित असामान्य कारक में प्रयुक्त होते हैं। ऐसी वाक्यरचना में विधेय लिंग तथा वचन में उद्देश्य के अनुसार नहीं बल्कि सामान्य कारक में प्रधान कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे पिताजी ने एक लिफाफा खरीदा। (२) पिताजी ने तान लिफाफ खरीदे। (३) भाई ने एक चिट्ठी लिखी। (४) भाई ने बहुत चिट्ठियाँ लिखी।

ऐसी वाक्य रचना जिसमें विधेय का रूप प्रधान कर्म के अनुसार होता है कमवाच्यपरक वाक्यरचना कहलाती है।

वाक्य में प्रधान कर्म के अभाव में या उस स्थिति में जब प्रधान कर्म को विभक्तिचिह्न सहित असामान्य कारक में होता है अथवा वह प्रधान कर्म कर्मकारक में कोई मवनाम होता है तो वाक्य में विधेय किसी का अनुगमन नहीं करता है और वह एकवचन अथ पुरुष पुल्लिङ्ग अविकारी रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे (१) विद्यार्थी ने काले तर्ते पर लिखा। (२) लड़की ने अपने घाप को दर्ज किया। (३) मेरे दोस्त ने मुझे यहाँ भेजा।

ऐसी वाक्यरचना जिसमें विधेय तीनों पुरुषों का वचनों व लिंगों के लिए एकवचन अथ पुरुष पुल्लिङ्ग अविकारी रूप में प्रयुक्त होता है वह भाव वाच्यपरक वाक्यरचना कहाती है।

सामान्य भूतकाल में 'लिखना' सकर्मक क्रिया की रूपरचना

कमवाच्यपरक वाक्यरचना

एकवचन

मैंने चिट्ठी लिखी (चिट्ठियाँ लिखीं)

तूने चिट्ठी लिखी (चिट्ठियाँ लिखीं)

(इसने, उसने) चिट्ठी लिखी (चिट्ठियाँ लिखीं)

बहुवचन

हमने पत्र लिखा (पत्र लिखे)

तुमने पत्र लिखा (पत्र लिखे)

आपने पत्र लिखा (पत्र लिखे)

(इन्होंने, उन्होंने) पत्र लिखा (पत्र लिखे)

भाववाच्यपरक वाक्यरचना

एकवचन

मने छिट्ठी (चिट्ठियों) का लिखा

तूने छिट्ठी (चिट्ठिया) को लिखा

(इसन, उसने) छिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा

बहुवचन

हमने छिट्ठी (चिट्ठिया) को लिखा

(तमने, आपने) छिट्ठी (चिट्ठियों) का लिखा

(इन्होंने उन्होंने) छिट्ठी (चिट्ठिया) को लिखा

सामान्य भूतकाल का प्रयोग

हिंदी में सामान्य भूतकाल का प्रयोग होता है —

(क) महद सम्पादित व्यापार का निर्देश करने के लिए । जैसे इहा दिना में इलाके के तहसीलदार साहब ने अपने दोरे के लिए मागग का गांव चुना ।

(ख) महद या अनेक अनुक्रमिक सम्पादित व्यापार का निर्देश करने के लिए । जैसे (१) कोई हुक्का पीन लगा, काई ताग खेलने लगा, काई अखबार उठाकर देखन लगा । (२) महद न सरारत मरी आँखो से मरी तरफ देखा और एक आँख भीच सी ।

(ग) एमे सम्पादित व्यापार का निर्देश करने के लिए जो महद किन्तु अनेक बायों वाला होता है । जैसे (१) नीला रफी के घर कई बार आयी । (२) बाजार में, गली में, सब्ज पर जहाँ कहीं वह मिल गया लडका ने उस संग करना शुरू कर दिया ।

(घ) एम व्यापार का निर्देश करने के लिए जो सम्पादन क्षण में निरपेक्ष रहकर सम्पादित हुआ समझा जाता है । जैसे (१) वह बम्बई चला गया । (२) उन्होंने मुसस कुछ नया कहा ।

(ङ) वर्तमानकाल में होने वाला एमे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो सम्पादित हुए काल में प्रस्तुत किया जाता है । जैसे (१) मैं अभी चला । (२) जरा नीच आ चिटिया । जवाब में जरा-या युवकर प्रभा ने जवाब दिया, आयी अम्मा जा ।

(च) महद रिशवातवाचक उपवाक्या में भावी व्यापार का निर्देश करने के लिए । जैसे यदि उसने अम्मा किया तो उस कम पूरा पटनावा होगा ।

आस न भूतकाल

आस न भूतकाल क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृत तथा होता क्रिया के सामान्य वस्तुमानकाल व भग्न भेद के रूपा के मयोजन से बनता है। जमे वच्चा सो चुका है।

कर्तृवाच्यपरक वाक्यरचना

आस न भूतकाल मे 'पहुँचना' सकर्मक क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुल्लिङ्ग

(म) पहुँचा हूँ

(तू) पहुँचा है

(यह, वह) पहुँचा है

एकवचन स्त्रीलिङ्ग

(म) पहुँची हूँ

(तू) पहुँची है

(यह, वह) पहुँची है

बहुवचन पुल्लिङ्ग

(हम) पहुँचे हैं

(तुम) पहुँचे हो (आप) पहुँचे हैं

(ये, वे) पहुँचे हैं

बहुवचन स्त्रीलिङ्ग

(हम) पहुँची हैं

(तुम) पहुँची हो, (आप) पहुँची हैं

(ये, वे) पहुँची हैं

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कर्तृवाच्यपरक रूपरचना में आमन्त भूतकाल में सामान्य भूतकालिक कृत तथा वचन (पुल्लिङ्ग) में बदलते हैं। 'हाना सहायक क्रिया पुरुष तथा वचन में बदलती है। यदि क्रिया सकर्मक है तो कमवाच्यपरक या भाववाच्यपरक वाक्यरचना प्रयुक्त होती है। जैसे (कमवाच्यपरक रूपरचना) १ उसने यह आवबार पढ़ा है। २ लड़क ने दो चिट्ठियाँ भेजी हैं। (भाववाच्यपरक रूपरचना) १ हमने एक आदमी को देखा है। २ उन्होंने लिखा है।

आस न भूतकाल मे 'लिखना' सकर्मक क्रिया की रूपरचना

कमवाच्यपरक वाक्यरचना

कमवाच्यपरक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृत वाली क्रिया के आमन्त भूतकालिक रूप तथा वचन (पुल्लिङ्ग) में बदलते हैं। 'हाना सहायक क्रिया केवल वचन में बदलती है।

एकवचन

मने चिट्ठी लिखी है (चिट्ठियाँ लिखी हैं)

तूने चिट्ठी लिखी है (चिट्ठियाँ लिखी हैं)

इसने, उसने चिट्ठी लिखी है (चिट्ठियाँ लिखी हैं)
बहुवचन

हमने पत्र लिखा है (पत्र लिखे हैं)

तुमने आपने पत्र लिखा है (पत्र लिखे हैं)

उन्होंने उन्होंने पत्र लिखा है (पत्र लिखे हैं)

भाववाच्यपरक वाक्यरचना

भाववाच्यपरक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृदन्त वाली क्रिया का आसन भूतकालिक रूप सदा पुल्लिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त होता है और होना सहायक क्रिया अन्य पुरुष एक वचन में।

एकवचन

मने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

तुमने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

इसने उसने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

बहुवचन

हमने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

तुमने आपने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

उन्होंने उन्होंने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा है

आसन भूतकाल का प्रयोग

हिन्दी में आसन भूतकाल ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है जो एक निश्चित क्षण में सम्पादित हुआ होता है तथा अपने परिणाम के रूप में जारी है। यह काल सूचित करता है कि व्यापार कबन के क्षण में विद्यमान है। इस प्रकार आमूल भूतकाल से निश्चित व्यापार का समय भूत है। (२) बातों से भी लगता है कि अब समय आ गयी है। (१) अब पाँच बजे होकर सावर उसका आँनें सुरू गया है। (२) एक दफा

पूर्ण भूतकाल

पूर्ण भूतकाल क्रिया के सामान्य भूतकालिक कृदन्त तथा होना क्रिया के सामान्य अपूर्ण भूतकाल के मुख्य रूपों के समूह में बनता है। जम

१४ फल भी मनी आया था।

पूरा भूतकाल तब भी प्रयुक्त होता है जब किसी अन्य व्यापार से पूर्व सम्पत्ति व्यापार का उत्पन्न अपन से पदचादवर्ती व्यापार न अनन्तर होता है। वाक्य में प्रायः इस अन्य अधिक पञ्चातकालीन व्यापार का उल्लेख नहीं किया होता है लेकिन उसका प्रसंग में पता चलता है। जैसे (१) मैं बाहर नहीं गया था उस समय मैं सोया था। (२) जम्मा की जावाज मुना बड़ी आई दाल तो मैंने चख ली थी। (३) बापूजी से मैं मांगना पड़ इसलिए तो मैं जम्मा के पास गया ही था।

(ख) ऐसे पूर्व व्यापार का निर्देश करने के लिए जिसके पञ्चात किसी अन्य व्यापार का सम्पादन हुआ है। जैसे (१) अणी में जाय थ नि पाठ पुरु हुआ। (२) मैं घोर में निकला ही था कि मरा मिथ आया।

(ग) ऐसे व्यापार का निर्देश करने के लिए जो भूतकालिक अन्य व्यापार के सम्पादन से पूर्व सम्पादित न हो पाया है। ऐसे प्रयोग में क्रिया में पड़ने न निपात का व्यवहार होता है। जैसे (१) अभी हम पहुँच न थे कि वह चल गया। (२) अभी वह एक तंग गली पर रुका था कि वालक के फिर से मिमकने की उस आहट मिली। (३) जम्मा ने कुछ बच्चे के लिए मह लाला ही था कि जवानक मुनी के पूर पत्रकर गाने में मग्न हो गया।

मिश्रित वाक्या में जिनमें सम्भावना विशेषतावाचक उपवाक्य होता है पूर्ण भूतकाल उस पूर्वकालीन व्यापार का निर्देश भी कर सकता है जो उपवाक्य के विधेय में निम्नित व्यापार से पूर्व सम्पत्ति न हो पाया हो और उपवाक्य में नकारात्मक निपात का प्रयोग न किया गया हो। जैसे अगर हम लोग लौटकर पकड़ न लें तो जान ही दे दो था।

(घ) इस व्यापार का निर्देश करने के लिए जो भूतकाल में पर्याप्त समय पूर्व सम्पत्ति हुआ होता है। जैसे अन्तर समाजवादा क्रान्ति में १९१७ में हुई था।

कुछ क्रियाएँ अपने अर्थ के अनुसार मकसद सामाग्य भूतकाल जानने भूतकाल पूर्ण भूतकाल तथा दूसरे पुरुषवाचक रूपों में भी जिनमें सामाग्य भूतकालिक वृद्धत समाविष्ट होता है अवसन्न क्रियाओं की भाँति प्रयुक्त हो सकती हैं। सभी क्रियाओं में परिगणित जाती हैं भूलना ममथना सीखना हागना जीतना आदि। जाना क्रिया के रूप अवसन्न क्रियाओं का भाँति बनते हैं। जैसे हमें जान पड़ा था (है) (थ)।

दोष 'ई' तथा 'ऊ' तत्र भी ह्रस्व हा जात है जब प्रथम भविष्यत काल के पुरुषवाचक प्रत्यय निया की गतु मे सीधे जुडत है। जस भीना—हम सिएगे। छूना—तू छुणगा।

लेना तथा देना नियाजा के प्रथम भविष्यत कालिक रूप उपराक्त नियम के अपवाद हं। इनमे उक्त पुरुषवाचक प्रत्यय निया की धातु मे नही अपितु उसके परिवर्तित रूप से जुक्त हैं। जस

एकवचन पुल्लिङ्ग	एकवचन स्त्रीलिङ्ग
(मैं) लूंगा (दूंगा)	(मैं) लूगी (दूगी)
(तू) लेगा (देगा)	(तू) लेगी (देगी)
(यह वह) लगा (देगा)	(यह वह) लगी (देगी)

बहुवचन पुल्लिङ्ग	बहुवचन स्त्रीलिङ्ग
(हम) लेंगे (देंगे)	(हम) लेंगी (देंगी)
(तुम) लगे (दोगे) (भाप)	(तुम) लोगी (दोगी), (भाप) लोगी
लोगे (दोगे)	(दोगी)
(वे, वे) लेंगे (देंग)	(वे, वे) लेंगी (देंगी)

होना निया के प्रथम भविष्यत कालिक रूपों का निमाण अथ क्रियाभो के प्रथम भविष्यत कालिक रूपों के निमाण से काफी भिन्न होता है। जसे

एकवचन पुल्लिङ्ग	एकवचन स्त्रीलिङ्ग
(मैं) हूंगा	(मैं) हूगी
(तू) होगा	(तू) होगी
(यह वह) होगा	(यह वह) होगी
बहुवचन पुल्लिङ्ग	बहुवचन स्त्रीलिङ्ग
(हम) हंगे	(हम) होगी
(तुम) होग (आप) होगे	(तुम) होगी (आप) होगी
(वे वे) हगे	(वे, वे) होगी

प्रथम भविष्यत काल का प्रयोग

प्रथम भविष्यत काल एक व्यापार के सम्पादन का निर्णय करने के लिए प्रयुक्त होता है जो कथन के क्षण के बाद हो। जस (१) गाछा या मिचुप चारप जाकर पत्थर पर सा जाडगा। (२) जब मैं चरूंगा तो वह पीछे से आकर मेरा हाथ या कूँ के छार पकड़गी।

कहाता तथा छोड़करिया म प्रथम भविष्यत् काल समय से निरपेक्ष व्यापार का निर्देश भी कर सकता है। जैसे जो बावगा सो भाटगा।

जब वाक्य में एक से अधिक विधेय हों ह जार व प्रथम भविष्यत् कालिक क्रिया धाल हान है तब भविष्यत् काल का गा जत्य प्रत्यय कभी-कभी अंतिम क्रिया व साथ विधेय व उद्देश्य व अनुमान एक बार जुन्ता है। जैसे जान मे पहले क्या कुछ खाता पियोग ?

‘हाना’ क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपों का प्रयोग

‘हाना’ क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपा का प्रयोग केवल भविष्यत् काल का निर्देश करने के लिए ही नही होता है अपितु उनका व्यापक प्रयोग अनुमान सम्भावना दुविधा अनिश्चितता व प्रवारपरक भावों को व्यक्त करने के लिए भी होता है। जैसे (अनुमान) — उसकी उम्र बास साल की होगी। (सम्भावना) आपकी औरत होगी। (अनिश्चितता) किसी समय यह इमारत सूबसूरत होगा।

हाना क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपा से निश्चित अनुमान, सम्भावना तथा अन्य प्रकारपरक भावों का अधिक निश्चित रूप से व्यक्त करने के लिए वाक्य में बहुधा गायद ‘सम्भवन’ आदि जिस प्रकारपरक पद प्रयुक्त हान है। जैसे नार्द माहव गायद जभा बम्बइ म ही होग।

उक्त प्रकारपरक भाव ताना काला म म किसी भी वाक्य से सम्बन्धित हो सकता है। ‘हाना’ क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूप अनुमान व्यक्त करने के लिए स्वतन्त्रता म भी प्रयुक्त हान है। जैसे (१) बुद्ध न कहा था कि यह दुनिया घोला है माया है। हागी किन यकीन नही होता। (२) (प्रश्न) वह घर पर हावे ? (उत्तर) हाग।

द्वितीय भविष्यत् काल

द्वितीय भविष्यत् काल क्रिया के सामान्य वर्तमान कालिक उद्देश्य तथा ‘हाना’ क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपा के संयोजन से बनता है। जैसे — वह आता होगा।

द्वितीय भविष्यत् काल में सामान्य वर्तमान कालिक उद्देश्य लिए तथा वचन (प्रतिग) में बदलता है और हाना मगायद क्रिया पुनः, वचन तथा लिए में बदलती है।

द्वितीय भविष्यत् काल में 'पढ़ना' क्रिया की रूपरचना

एकवचन पुलिङ्ग

एकवचन स्त्रीलिङ्ग

(मैं) पढ़ता हूँगा

(मैं) पढ़ती हूँगी

(तू) पढ़ता होगा

(तू) पढ़ती होगी

(यह वह) पढ़ता होगा

(यह, वह) पढ़ती होगी

बहुवचन पुलिङ्ग

बहुवचन स्त्रीलिङ्ग

(हम) पढ़ते होंगे

(हम) पढ़ती होंगी

(तुम) पढ़ते होगे, (आप)

(तुम) पढ़ती होगी (आप) पढ़ती

पढ़ते होंगे

होगी

(वे वे) पढ़ते होंगे

(वे वे) पढ़ती होंगी

द्वितीय भविष्यत् काल का प्रयोग

हिन्दी में द्वितीय भविष्यत् काल भविष्यत् कालिक असम्पादित या अपूर्ण व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे (१) आप देखेंगे कि वह अपनी गन्ती घर पछताना होगा। (२) चारपाई न हाँ तो मैं डाले जाती हूँ। यहाँ अभी तुम्हारा जठरी जात होगा।

आधुनिक हिन्दी में हाना क्रिया के प्रथम भविष्यत् काल के रूपा में निहित प्रकारपरन्तु भावों तथा द्वितीय भविष्यत् काल के रूपा की विद्विष्ट रचना के कारण इस काल का अब पर्याप्त माना में बन्द चुका है। इस समय द्वितीय भविष्यत् काल का प्रयोग अधिकतर वर्तमान काल या निकट भविष्यत् काल से सम्बन्धित व्यापार के सम्पादन के प्रति सम्भावना व्यक्त करने के लिए किया जाता है। जैसे (१) मैं यह तो कहता हूँ कि राय साहब के आदमी एस बल्माश और चार ह। (२) नहा भया ऐसा नहीं करते। यह तो घर की रीत है। जन स्वता का कहीं अपमान किया जाता होगा ? (३) अभी बाप आन होगा।

तृतीय भविष्यत् काल

तृतीय भविष्यत् काल क्रिया के सामान्य भूतकालिक वृद्धन तथा हाना क्रिया के प्रथम भविष्यत् कालिक रूपा के संयोजन में बनता है। जैसे वह आया होगा।

क्रिया के अन्य पुरुषवाचक रूपा की भाँति जिनमें सामान्य भूतकालिक वृद्धन का समावेश होता है तृतीय भविष्यत् काल का निर्माण क्रिया की

अकमकता तथा सकमकता पर निर्भर करना है।

तृतीय भविष्यत काल में अकमक क्रियाओं की रचरचना निम्नलिखित होती है —

कतृवाच्यपरक वाक्यरचना

कतृवाच्यपरक वाक्यरचना में तृतीय भविष्यत काल में सामान्य भूत कालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिङ्ग) में बदलती है और 'हाना' सहायक क्रिया पुरुष वचन तथा लिंग में बदलती है।

एकवचन पुल्लिङ्ग

(मैं) पहुँचा हूँगा

(तू) पहुँचा होगा

(यह, वह) पहुँचा होगा

एकवचन स्त्रीलिङ्ग

(मैं) पहुँची हूँगी

(तू) पहुँची होगी

(यह, वह) पहुँची होगी

बहुवचन पुल्लिङ्ग

(हम) पहुँचे होंगे

(तुम) पहुँचे होंगे, (आप)

पहुँच होंगे

(वे, वे) पहुँचे होंगे

बहुवचन स्त्रीलिङ्ग

(हम) पहुँची होंगी

(तुम) पहुँची होंगी, (आप) पहुँची

होंगी

(वे, वे) पहुँची होंगी

यदि क्रिया सक्रमक है तो तृतीय भविष्यत काल में कमवाच्यपरक या भाववाच्यपरक वाक्यरचना प्रयुक्त होती है। जम (कमवाच्यपरक वाक्यरचना) उहान यह पुस्तक पढ़ी होगी। (भाववाच्यपरक वाक्यरचना) हमने इस फ़िल्म को देखा होगा।

तृतीय भविष्यत काल में 'लिखना' सक्रमक क्रिया की रचरचना

कमवाच्यपरक वाक्यरचना

कमवाच्य परक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृदन्त लिंग तथा वचन (पुल्लिङ्ग) में बदलती है और 'हाना' सहायक क्रिया लिंग तथा वचन में बदलती है।

एकवचन

मैंने चिट्ठी लिखी होगी (चिट्ठियाँ लिखी होंगी)

तूने चिट्ठी लिखी होगी (चिट्ठियाँ लिखी होंगी)

इसने, उसने चिट्ठी लिखी होगी (चिट्ठियाँ लिखी होंगी)

बहुवचन

हमने पत्र लिखा होगा (पत्र लिखे होंगे)
 तुमने, आपने पत्र लिखा होगा (पत्र लिखे होंगे)
 इ हाने उ हाने पत्र लिखा होगा (पत्र लिखे होंगे)

भाववाच्यपरक वाक्यरचना

भाववाच्यपरक वाक्यरचना में सामान्य भूतकालिक कृदन्त मदा पुल्लिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त जाता है और 'हाना' सहायक क्रिया पुल्लिङ्ग एकवचन जैसे पुरुष में ।

एकवचन

मैंने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा
 तूने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा
 उसने, उसने चिट्ठी (चिट्ठियाँ) को लिखा होगा

बहुवचन

हमने चिट्ठी (चिट्ठियों) का लिखा होगा
 तुमने, आपने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा
 इ होंने, उ होंने चिट्ठी (चिट्ठियों) को लिखा होगा

तृतीय भविष्यत्काल का प्रयोग

हिंदी में तृतीय भविष्यत् काल भविष्यकालिक सम्पत्ति या पूरा व्यापार का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त होता है । यह व्यापार प्रायः जय भविष्यकालिक व्यापार में पूरा हुआ होता है । जय (१) अगर आज सुबह वह लाहौर से चला तो शाम का रावलपिण्डी पहुँच गया होगा । (२) जब वह बापस घर लौटगा तो यहाँ जाऊँ भी आधा प्रोत चुका होगा ।

आधुनिक हिंदी में 'हाना' क्रिया के प्रथम भविष्यत काल रूपों में निहित प्रकारपरत भावा तथा तृतीय भविष्यत काल रूपों का विनिश्चित रहना के कारण इस काल का भी जय पर्याप्त मात्रा में बल चुका है । इस समय तृतीय भविष्यत काल का प्रयोग जयस्तर भूतकाल और कभी यथा भविष्यत काल में सम्बन्धित व्यापार के सम्पन्न के प्रति सम्भावना अनुमान जय ध्यान करने के लिए किया जाता है । जय (१) पन्द्रह दिन हो गये होंगे । (२) बल तक तुम यह काम समाप्त कर चुके होंगे । (३) भारत की प्राकृतिक दगा आर जलवायु के बर्णन में यह जान गये होंगे कि भारत के कुछ भागों का मिट्टी